(गीताञ्जली धारा = 14)

सर्वोदय-शिक्षा गीताञ्जली

(गद्य-पद्य मय)

कविराचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव

''पुण्य स्मरण''

ग्राम खाखड (राज.) में श्रुतपञ्चमी महोत्सव व 4 पुस्तकों व 1 केलेण्डर के विमोचन के शुभ स्मरण में

''द्रव्यदाता''

(1) सौ.का. प्राचीदेवी गौरव जी शहाकार जैन
जूनी शुक्रवारी, दि. जैन मन्दिर के पास, गजानन चौक नागपुर (महा.)

(2) श्री दि.जैन समाज, खाखड़ द्वारा आ. श्री कनकनन्दी जी के साहित्य कक्ष की स्थापना का पुण्य प्रसंग मो. 9680396474

''साहित्य स्थापन कर्त्ता''

(3) श्री लक्ष्मीचन्द धन्नावत, पत्नी श्रीमती माला देवी जैन पुत्र विकास, पुत्री नीलम, ग्राम-कोल्यारी (राज.)

(4) विनीत कुमार बाबूलाल जी बोडलिया, ग्राम-फलासिया (राज.)

ग्रंथाङ्क - 212 संस्करण - 2012
प्रतियाँ - 1000 मूल्य - 101/रू

-: प्राप्ति स्थान :-

धर्म दर्शन सेवा संस्थान, द्वारा - श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा, चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास, उदयपुर (राज.) - 313001, मो. 9783216418

-: सम्पर्क सूत्र :-

डॉ. नारायणलाल कछारा, सचिव- धर्म-दर्शन सेवा संस्थान
55, रवीन्द्र नगर, उदयपुर (राज.) - 313001
फोन नं. (0294) 2491422, मो. 9214460622
E-mail : nlkachhara@yahoo.com

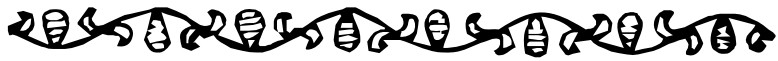

प्रस्तावना

"मेरी कविताओं के इतिहास-कारण-परिणाम"

(रागः- 1. माईन माईन मुणडेर... 2. नरेन्द्र छन्द...)

आत्म इतिहास मेरी कविताओं/(गीतों) का लिखा रहा हूँ मैं यहाँ।
कारण तथा परिणाम का भी वर्णन करूँ मैं यहाँ ।।ध्रु.।।

बाल्यकाल से ही सुन रहा हूँ, कविता देश-विदेशों की।
पढ़ना गुणना तथा समीक्षा भी, कर रहा हूँ सभी की।। (1)

सत्य-तथ्य पूर्ण आध्यात्मिकमय' कविता मुझे अच्छी/(प्रिय) लगे।
शिक्षा नैतिकता/(राष्ट्रीयता) प्रकृति प्रेमी भी, कविता भी श्रेय लगे।। (2)

प्राच्य पाश्चात्य प्राचीन आधुनिक, कविता भी अच्छी लगे।
किन्तु असत्य तुच्छ अश्लीलता, कविता बुरी ही लगे।। (3)

तुच्छ कवि द्धारा लिखित कविता, प्रचलित सिनेमा की।
उसी से प्रेरित तुच्छ जो कविता, कवि सम्मेलनों की।। (4)

तथाहि टी.वी. शादी समारोह, समाजिक कार्यों की।
शिक्षा संस्थानों की कार्यक्रम वाली, धार्मिक समारोहों की।। (5)

उच्च भाव/(पद) रहित कविता, शिक्षा व नैतिक हीन/(शून्य)।
सुन पढ़कर अति पीड़ा होती, जो आध्यात्मिकता हीन/(शून्य)।। (6)

इसी पीड़ा से मैं प्रेरित होकर, स्व-पर कल्याण हेतु।
राग/(छन्द) व पाण्डित्य रहित होते भी, रचना/(कविता) शिक्षा हेतु।। (7)

छन्द राग मात्रा परम्परा से, रहित मेरी रचना/(कविता)।
अन्य को भी प्रिय होती जा रही, भाव से हुई रचना।। (8)

मैं भाव पुजारी सत्य उपासक, स्व-पर हित के कांक्षी।
अबोध बालक समान ही काम, रचा मैं हो गुणाकांक्षी।। (9)

राग-अनुप्रास संशोधन होता, सुविज्ञसागर द्धारा।

अन्य साधु-साध्वी सहायक होते, अपनी क्षमता द्वारा।। (10)

इसलिये मैं उपकृत होता/(सदा), उपकारी जनों से।
संशोधन व लेखन आदि में, सहयोगी होने से।। (11)

इन्हीं कविता से प्रेरित होकर, अनेक ज्ञान के दानी।
गीताञ्जली के प्रकाशन हेतु, बनते स्वेच्छा से दानी।। (12)

प्रकाशन हेतु अर्थ सहयोगी, होते जो ज्ञानानुमोदी/(प्रेमी)
पढ़ना गुनना कविता गाना, करते जो ज्ञानप्रेमी।। (13)

सभी को मेरा है यथायोग्य, प्रतिवन्दना आशीर्वाद।
स्व-पर विश्वकल्याण के हेतु, कविता द्वारा संवाद।। (14)

झाड़ोल (फ.), दि= 29/4/2012, रात्रि 11.08

मॉडर्न एण्ड स्पीरिच्युल बनने के फार्मूले
हिंगलिश-पोयम

(रागः- 1. बहुरागीय... वन्दे मातरम्)

/(इफ यू सी ओन सोल)
यू ऑर सीनियर... सी युअर सेल्फ ओर/(इफ यू सी सेल्फ ओर)
यू ऑर जूनियर... / (इफ यू सी अनादर) जब देखो अन्य ओर...
यू पे/(प्रेजेन्ट) प्रेयर... ओन सेल्फ प्युर सोल
वर्क इज वर्शिप... इफ युअर प्युर सेल्फ
यू ऑर रिलिजियस... व्हेन यू सर्विस/(परोपकार/सेवा)
यू ऑर स्पिरिच्युल... व्हेन यू प्युर सोल
यू ऑर अप टू डेट... इफ यू हैव ब्रॉड थॉट
यू ऑर ब्यूटीफुल... इफ यू ऑर ट्रुथफुल
यू ऑर फॉरवर्ड... इफ यूअर एइम ब्रॉड
'कनकनन्दी' ब्लेस ऑल... ऑल बिकेम प्युर सोल

झाड़ोल (फ.), दि= 11/4/2012, सायं 7.38

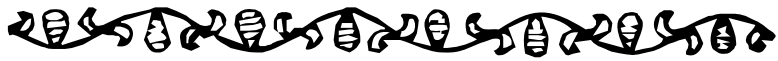

-: विविध राग :-

1. नन्हा मुन्ना राही...
2. तुम पास आये...
3. मेरा जूता है जापानी...
4. हम होंगे कामयाब...
5. हम को मन की शक्ति देना...
6. जू.जू.जू.जू.जू...
7. आये हो मेरी जिन्दगी में...
8. मधुवन के मन्दिरों में...
9. ऐ मेरे दिले नादान...
10. तुम्हीं मेरे मन्दिर...
11. आधा है चन्द्रमा...
13. गुरु हमारा संग मा (गुजराती)...
14. दिल तो पागल है...
15. दिल है छोटा सा...
16. दिल के अरमा आँसुओं में...
17. बहुत प्यार करते हैं...
18. सावन का महीना...
19. चले जाना जरा कह दो...
20. बहारों फूल बरसाओ...
21. ऐ मालिक तेरे बन्दे...
22. ऐ वतन... ऐ वतन...
23. ऐ मेरे वतन के लोगों...
24. सारे जहाँ से अच्छा...
25. चुपके चुपके (गजल)...
26. तुम दिल की धड़कन में...
27. उड़ चला पंछी रे...
28. यमुना किनारे श्याम...
29. छोटी छोटी गैया...
30. तुम्हीं हो माता...
31. हम लाए हैं तूफान से कश्ती...
32. तेरा मेरा प्यार अमर-फिर क्यूँ मुझको...

"Formulae of Become Modern and Spiritual"

-Aacharya Kanaknandi

1.	You are Senior...	See your self
		If you see own soul
		If you see self
	You are Junior...	If you see another
2.	You pay prayer...	Ownself pure soul
	Work is worship...	If your pure self
3.	You are Religious...	When you service
	You are spiritual...	When you pure soul
4.	You are Up to date...	If you have broad thought
	You are beautiful...	If you are truthful
5.	You are Forward...	If your aim broad
	'Kanaknandi' bless all...	All become pure soul

Helper :- Aryika Shree Suvidheymati Mataji

Jhadol (Fa) 11.4.2012, 7.38 p.m.

मेरा अन्य के लिए अबोधगम्य भाव संसार

(रागः- छोटी छोटी गैया...)

मेरे भाव-व्यवहार होते अन्य से भिन्न, मेरे ज्ञान-अनुभव न होते अन्य सम।
मेरे लक्ष्य-साधना भी अन्य सम नहीं, अतएव अन्य मुझे जानते नहीं।।

मेरा भाव सदा सत्यग्राही ही होता, स्व-पर-विश्व कल्याणमय ही होता।
तदनुकूल व्यवहार मैं करता, शक्ति अनुसार यह कार्य करता।।

मेरा ज्ञान अनुभव सहित होता, रटन्त ज्ञान को महत्व कम देता।
संकीर्ण मिथ्यामत को मैं नहीं मानता, उदार सहिष्णुपूर्ण भाव/(ज्ञान) रखता।।

मेरा परम-लक्ष्य सत्य/(शान्ति)/(मोक्ष)प्राप्त करना, समतामयी साधना से मोक्ष वरना।
दंभपूर्ण आडम्बर मैं नहीं करता, ख्याति पूजा लाभ से दूर रहता।।

आध्यात्मिक शुद्धि को मैं महत्व देता, इसे केन्द्र करके हर कार्य करता।
ज्ञान ध्यान अध्ययन लेखन पठन, शिविर संगोष्ठी कक्षा या प्रवचन।।

देश-विदेशों में जो हो रहा कार्य, भक्त-शिष्यों द्वारा जो धर्म-कार्य।
आनुषंगिक रूप यह सब हो रहा, भावना का बाह्य फल मिल रहा।।

इसी से कर्तृत्व राग-द्वेष नहीं है, इसी के लिए संक्लेश भाव नहीं है।
धन-जन-मान का प्रयोजन नहीं है, स्व-पर-विश्वकल्याण भाव सही है।।

दूसरों की कमियों से शिक्षा मैं लेता, कमी दूर करने की शिक्षा मैं देता।
घृणा कभी दुर्गुणी से नहीं करता, उनका भी हित हो यही चाहता।।

अपना-पराया मेरा भाव न होता, धनी गरीब में भेद-भाव न होता।
भोले-भालों को मैं महत्व देता, उनके दुःख से अति दुःखी हो जाता।।

हर कार्य अनुशासन से करता, क्रमबद्ध व व्यवस्थित करता।
समता शान्ति से कार्य मैं करता, अन्यथा मुझे अच्छा नहीं लगता।।

कोई माने न माने आग्रह नहीं, सर्व जीव सुखी बने भावना सही।
कभी कभी भाव में एकला होता, तथापि सत्य समता नहीं छोड़ता।।

अन्य कोई यदि मुझे नहीं मानता, गौरव मेरा अधिक बढ़ भी जाता।
मैं सोचता हूँ मैं अन्य से भिन्न, अनुभव-भावना से अति अग्रिम।।

जब मेरा अनुभव सत्य हो जाता, भावनानुसार या काम भी होता।
आत्म-गौरव मेरा और बढ़ता, अनुभव-भावना को और बढ़ाता।।

इसके साथ-साथ दुःख भी होता, मेरे अनुभव से जो लाभ न लेता।
रोग-दुःखों की पीड़ा को सहता, ठोकर खाकर पुनः मुझे मानता।।

भीड़ व प्रसिद्धि से मैं दूर रहता, विज्ञापन दिखावा नहीं करता।
गहन सूक्ष्म व्यापक मैं कहता, जिससे मुझे समझना कठिन होता।।

मुझे अन्य लोग माने स्वयं समान, अथवा मानते अन्य जन समान।
किन्तु मैं अन्य से प्रायः पृथक् होता, जिससे मुझे जानना कठिन होता।।

इसी से मुझे बहुत लाभ भी होता, प्रसिद्धि व भीड़ से मैं बच जाता।
जिससे मेरी साधना उत्तम होती, समता शान्ति की प्राप्ति अधिक होती।।

मेरे अंग लक्षण भी यही कहते, विदेशी जन मानेंगे यह बताते।
समाधि के अनन्तर देशी पूजेंगे, जीवन्त अवस्था में लाभ न लेंगे।।

हर काल भारत में ऐसा ही होता, अन्य देशों में किंचित् ऐसा ही होता।
तथापि महान् लक्ष्य खोटे न होते, कनक को महान् लक्ष्य ही भाते।।

महान् लक्ष्य सहित मरना श्रेष्ठ, क्षुद्र लक्ष्य सहित जीना कनिष्ठ।
महान् लक्ष्य से महान् फल मिलता, क्षुद्र लक्ष्य से क्षुद्र फल मिलता।।

झाडोल (फ.) दि= 28/3/2012, रात्रि 11.27

मेरी भावना: स्वोपलब्धि एवं विश्वकल्याण

(स्वभावना-आलोचना एवं साधना)

(तर्जः- 1. छोटी छोटी गैया... 2. दुनियाँ में रहना है तो...)

मेरी भावना सदा होती है, न करूँ शक्ति समय का दुरुपयोग।
जो हुई मेरी उपलब्धि है, करूँ सदा ही सदुपयोग ।।1।।

बुद्धि भावना शरीर विद्या, अनुभव व भाषा विज्ञान।
गणित दर्शन तर्क कानून, राजनीति व लौकिक ज्ञान ।।2।।

पल पल में पल्लवित करूँ, जो कुछ मेरी है उपलब्धि।
स्व-पर हित कल्याण हेतु ही, प्रयोग करूँ स्व-उपलब्धि ।।3।।

विकथा निन्दा गप्पबाजी में (या), संक्लेश आलस्य राग-द्वेष में।
ख्याति पूजा व दिखावटी में, प्रतिस्पर्द्धा या घृणा-तृष्णा में ।।4।।

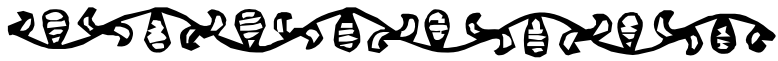

ढोंग परम्परा रीति-रिवाज में, अस्त-व्यस्त संत्रस्त कार्य में।
सामाजिक लन्द-फन्द कार्य में, खर्च न करूँ उपलब्धि मैं ।।5।।

दूसरों की मैं न नकल करूँ, न करूँ अन्य से तुलना मेरी।
गुण ग्राहकता भावना धरूँ, प्रभावित न होऊँ किसी जन से ।।6।।

अन्धानुकरण करूँ न किसी का, व्यक्ति समाज या शिक्षा राष्ट्र का।
पंथ परम्परा रीति-रिवाज का, खान-पान या नीति नियम का ।।7।।

राजनीति या कानून ज्ञान, लोक प्रचलित ज्ञान विज्ञान।
सत्यांश को ही ग्रहण करूँ, सतत प्रयास मेरा निदान ।।8।।

मेरी उपलब्धि को मैं तो जानता, मेरे लक्ष्य को मैं तो जानता।
मेरी भावना साधना जानता, अन्य न जाने मेरा क्या घाटा? ।।9।।

स्व-पर-विश्व कल्याण चाहूँ, तदनुकूल भावना भाऊँ।
व्यवहार भी तथा ही करूँ, कोई न माने मैं क्या करूँ? ।।10।।

आदहिद मैं पहले करूँ, शक्ति अनुसार अन्य का करूँ।
आत्म पतन कभी न करूँ, अन्य के कारण पापी न बनूँ ।।11।।

अन्य के कारण यदि मैं बनूँ पापी, पापी भी बनायेंगे मुझे भी पापी।
मेरे व कर्त्ता हर्त्ता बनेंगे, मेरी स्वतन्त्रता नाश करेंगे ।।12।।

अतएव मैं अन्य के द्वारा, अप्रभावी रहूँ साधना द्वारा।
हर जीव स्वयं स्वयं का कर्त्ता, मैं भी स्वयं बनूँ स्वयं का कर्त्ता ।।13।।

मेरा लक्ष्य है सत्य साम्यमय, फल जिसका है चिदानन्दमय।
सर्व जीव भी बनें तन्मय, 'कनक' भावना मंगलमय ।।14।।

(पाँच प्रकार के स्वाध्याय के अतिरिक्त अन्य विषय के कथन के दोषों की आलोचना हेतु बनी यह रचना।)

झाड़ोल (फ.) दि= 10.4.2012, मध्याह्न 2.43

“मेरे जीवन की समयसारिणी”

(मेरा लक्ष्य एवं साधना पद्धति)

(रागः- नरेन्द्र छन्द...)

मेरी कार्यपद्धति समयसारणी मैं, लिख रहा स्व-हित हेतु।
अन्य भी इसे जानकर नहीं, बने मेरे बाधक हेतु।। ध्रु.।।

स्वयं के लिये यदि सही लगे तो, प्रयोग करे निज हेतु।
साधक न बने तो बाधक न बने, लिख/(रच) रहा हूँ इसी हेतु।। (1)

बाल्यकाल से ही स्व-अनुशासी, समयानुबद्ध रहा सदा।
समय शक्ति बुद्धि का मैं सदुपयोग, कर रहा हूँ सदा।। (2)

किसी को न मैं बाधा देता, न बाधक हेतु करूँ स्वागत।
अल्पशक्ति आयु बुद्धि प्राप्त कर, न करूँ व्यर्थ खपत।। (3)

इसलिये मैं छह वर्ष आयु से, अधिक करता वास-एकान्त।
मौन ध्यान अध्ययन-अध्यापन, चिन्तन लेखन में दत्तचित्त।। (4)

आनुमानिक अनुपात से मेरे जीवन का, मैं कर रहा हूँ गणित।
घंटा पांच शयन, पंद्रह ज्ञानध्यान, चार घंटा में नित्य-वृत्त।। (5)

तीन घंटा कथन शेष मौन कथन, मेरा सदा तात्त्विक ज्ञान।
दिन से लेकर महिनों तक कर रहा हूँ मैं मौन साधन।। (6)

निन्दा चुगली गप्प ईर्ष्या, द्वेषमय न करूँ कथन।
ऐसे कार्य मैं नवकोटी से, न करूँ कभी सम्मान।। (7)

किसी भी अनावश्यक कार्य का, मैं न करता हूँ सम्मान।
रुढ़िवादी फिजूलखर्ची धार्मिक कार्यों में न करूँ योगदान।। (8)

जिसमें सत्य समता मिले, आत्मिक शान्ति मिले अपार।
ये सब कार्य नवकोटी स्वेच्छा से, करता हूँ बारम्बार।। (9)

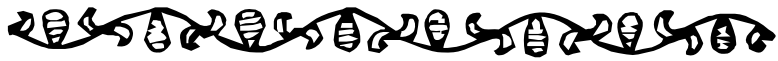

ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि हेतु, नहीं करूँ मैं कार्य अशेष।
स्वयं प्राप्ति यदि होवे यह सब, अनासक्ति रहूँ विशेष।। (10)

सामाजिक काम लन्द-फन्द, चन्दा-चिट्ठा व तोड़-फोड़।
लड़ाई झगड़ा वाद विवाद, लूट-फूट व कूट-कपट।। (11)

तेरा-मेरा पंथवाद संतवाद, अथवा ग्रन्थवाद।
संकीर्ण भाषा जातिवाद, राष्ट्रवाद से परे संवाद।। (12)

आध्यात्मिक वैज्ञानिकवाद, स्याद्वाद अनेकान्त प्रिय।
भोला-भाला सरल भाव, व्यवहार मुझे अति प्रिय।। (13)

ऐसा ही साधु-साध्वी श्रावक, साधारण जन भी प्रिय।
बच्चा से लेकर धनी-गरीब, साक्षर-निरक्षर प्रिय।। (14)

स्वच्छ शान्त एकान्त स्थान में, आहार-विहार-निहार।
ध्यान-अध्ययन शयन विश्राम, ऐसा स्थान मुझे ग्राह्य।। (15)

सात्विक सरस मधुर सुपक्व, सब्जी फलाहार ग्राह्य।
शुद्ध ताजा दूध घी दुग्धाहार, मुझे अनुकूल ग्राह्य।। (16)

जिससे आत्मिक साधना बढ़े, निस्पृह व शान्ति अपार।
ऐसा ही भाव द्रव्य-क्षेत्र-काल का, करता हूँ समादर।। (17)

स्व-पर-विश्व कल्याण भावना, भाता हूँ अहर्निश।
तदनुकूल मेरी समयसारिणी, पालता हूँ निशिदिन।। (18)

झाड़ोल (फ.) दि= 30.4.2012, मध्याह्न 4.31

आचार्य कनकनन्दी जी की विशेषता

(तर्जः- जाने बहार हुस्न...)

ऋषिवर कनकनन्दी आप बेमिसाल हैं
गुरुवर कमाल है अरे! मुनिवर कमाल हैं

गुरुवर कनकनन्दी आप बेमिसाल है
यतिवर कमाल हैं! गुरु की प्रज्ञा कमाल है! ।।टेक।।

ऋषिवर कनकनन्दी

आये हैं तेरे पास में, इस आनो-बान से...2
उतरे हों जैसे पीर कोई, आसमान से
तुम सा नहीं है कोई यहाँ कायनात में/इस जहान में

ऋषिवर कनकनन्दी...

मैं खुशनसीब हूँ कि तुम्हें मैंने पा लिया...2
तूने करम किया मुझे अपना बना लिया
मैं क्या कहूँ खुशी से, अजब मेरा हाल है
ऋषिवर कनकनन्दी आप बेमिसाल है
गुरुवर कमाल है हाँ.... जी यतिवर कमाल है...

प्रस्तुति अजय पी. जैन, नागपुर
संघस्थ :- आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव

स्व-सम्बोधन

विषमता त्यागो-समता धरो!

(रागः- मन रे तू काहे न धीरे धरे...)

भाव रे!/(मन रे!) तू काहे न साम्य/(शान्त) धरे/(रहे)/(गहे)
वे अयोग्य, योग्य न जाने/(माने/चाहे/भाये), जिनसे योग्य चाहेऽऽऽ

(ध्रुवपद)...

मानव जीवन का लक्ष्य न जाने... खाना-पीना मजा करे
तन मन मय स्वयं को माने... इन्द्रिय सुख भोग चाहे/(करे)
धन जन मान चाहे/(आत्मिक भाव परे/आत्मकल्याण परे)ऽऽऽ..(1)

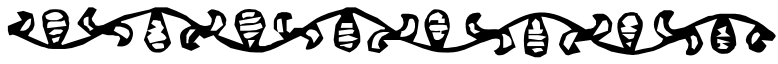

ख्याति लाभ पूजा सर्वस्व माने... भौतिकमय स्वयं को जाने/(माने)
आर्थिक लाभ ही लक्ष्य में धारे... धर्म कर्म सेवा से
मन वच काय से/(लोभ तृष्णा मोह से) ऽऽऽ... (2)...

डोरी से कटी पतंग सम... कम्पास विहीन जहाज सम
मूल विहीन वृक्ष के सम... विद्युत विहीन बल्ब सम
आत्म लक्ष्य हीन से/(नर हित/(श्रेष्ठ), धर्म, साम्य) न करे/(न धरे)...(3)

क्रोध मान माया लोभ बढ़ाते... इसी में स्व हित मानते
समय शक्ति का अपव्यय करते... बुद्धि लब्धि का नाश करे
प्रमाद मद से/(अज्ञान मोह से) ऽऽऽ...(4)...

स्वयं को श्रेष्ठ-ज्येष्ठ ही मानते... सच्चा व अच्छा भी मानते
दूसरों को भी उपदेश देते... बड़प्पन भाव (भी) दर्शाते
स्व को आदर्श माने/(अहं के भाव से) ऽऽऽ...(5)...

अतः रे! मनुआ (तू) साम्य धरो... स्वयं को योग्य आदर्श करो
अन्य का संकल्प-विकल्प छोड़ो... दीप सम स्वयं तो जलो
दीप सम ज्योत फैले/('कनक' साम्य भाव धरे) ऽऽऽ...(6)...

झाड़ोल (फ.) दि= 24.4.2012, रात्रि 12.17

आचार्यश्री कनकनन्दी जी सम्बन्धी व्यक्तित्व-कृतित्व एवं भविष्य

हस्तरेखा विशेषज्ञ सलाहकार- श्री सम्भव कुमार पारसमल (S.P.) जैन (फागीवाला) ब्यावर वाले, इचलकरंजी (महा.), मो. 09421108151 के अनुसार।

प्रस्तुतिकार- मुनि श्री सुविज्ञसागर, संघस्थ आ.श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव।

प.पू.धर्म-दर्शन-विज्ञान समन्वयक, आधुनिक युग के महान् शान्ति-समता क्रान्ति के प्रणेता, भारत भूमि के जाज्वल्यमान नक्षत्र दिगम्बर जैनाचार्य

श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव जिनके ज्ञान-विज्ञान की प्रगतिशीलता से सारा विश्व चमत्कृत हो रहा है, ऐसी आध्यात्मिक विभूति के दर्शन-वन्दन हेतु इचलकरंजी (महा.) से पधारे ज्योतिषी श्री सम्भव कुमार जी जैन गुरुदेव के महान् व्यक्तित्व व शुभ अंग लक्षणों से इतने प्रभावित व अभिभूत हुए कि उन्होंने प.पूज्य श्री गुरुदेव व उनके आगंतुक प्रथम शिक्षा प्राप्त सिद्धान्त ज्ञाता दि.जैनाचार्य श्री पद्मनन्दी जी गुरुदेव ससंघ व स्वसंघ दोनों संघों की उपस्थिति में गुरुवर श्री कनकनन्दी जी के विराट व्यक्तित्व-कृतित्व-भविष्य व गुणों का बखान विविध आयामों के माध्यम से प्रस्तुत किया, जिसका वर्णन निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से प्रस्तुत है-

1. सूर्य रेखा - गुरुदेव की विलक्षण हस्त रेखाओं में सर्वप्रथम स्वेच्छा से सूर्य रेखा को देखकर सम्भवकुमार ने बताया आपकी सूर्य रेखा अत्यन्त प्रबल है जो कि करोड़ों व्यक्तियों में किसी एकाध महापुरुष में ही पाई जाती है जो कि अन्तःप्रज्ञा (आध्यात्मिक तेज) की प्रतीक है।

2. हृदय रेखा - गुरुदेव की सीधी सिंगल हथेली से आरपार विलक्षण रेखा के माध्यम से बताया कि ऐसी रेखा महान् उदारता, सदाशयता, पवित्रता, सनम्र सत्यग्राहिता, वैश्विक कल्याण से ओतप्रोत भावों को दर्शाती है।

3. कला रेखा - दुनियाँ से हटकर युग प्रवर्तक, सर्वकल्याणकारी, सर्वजीव हितकारी, पर्यावरण सुरक्षा, विश्वशान्ति, सामान्य लोगों की परिकल्पनाओं से परे नवाचार करते हुए आगे बढ़ना, एकला चलने का सत्साहस गुरुदेव की विशेषता है।

आगे एस.पी.जैन ने बताया साधु बनकर आपका तीसरा नेत्र खुला जो कि महान् आध्यात्मिक सन्तदृष्टि से कल्याणकारी, हितकारी

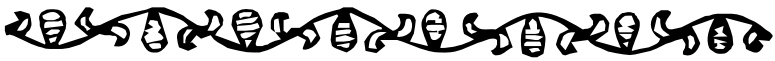

बना वरना आप साधु नहीं बनते तो यही लक्षण राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, वैज्ञानिक, साहसिक कार्य करने वाला नेतृत्व करने में सहायक होता।

4. तीन खड़ी विशेष रेखाएँ - ये रेखाएँ अनुशासनप्रिय नेता, फक्कड़पन व स्वाभिमान को प्रगट करने वाली हैं।

आगे बताया हे गुरुदेव! आपका कार्य बैठे-बैठे सम्पन्न होगा, विशेष उठापटक, दौड़ धूप करने की आवश्यकता कभी भी नहीं पड़ेगी। आप मान-सन्मान-यश-कीर्ति-ख्याति लाभ आदि से सदैव ऊपर उठे रहेंगे, जिसे सामान्य जन नहीं समझ पायेंगे। आपकी बुद्धि सामान्य व्यक्ति से तीन गुणी है एवं इसमें वृद्धि होगी।

5. झण्डा रेखा - आप बाह्य क्रियाकाण्डों से हटकर आन्तरिक (भावात्मक) विकास करते जा रहे हैं। आप जहाँ जाएँगे वहाँ की भूमि पवित्र, वहाँ का क्षेत्रीय व व्यक्तियों का सर्वांगीण विकास होगा।

6. त्रय मस्तिष्क रेखाएँ - आपके पूर्वाकलन, पूर्वाभास, सतर्कता, अनुभव-परकता की एवं शुभ स्वप्न आने की प्रतीक हैं। आप सदैव गुणग्राही व प्रकृति के हर विषयों, व्यक्तियों, जीवों से शिक्षा ग्रहण करने वाले शिक्षार्थी, शोधार्थी हैं।

7. मस्तिष्क तिलक- आपके पूर्व भव में साधु, शोधार्थी, जिज्ञासु, चिन्तनशील व्यक्तित्व के धारक होने का प्रतीक है। ज्ञान-विज्ञान में लीनता का चिह्न है।

8. तीखा उन्नत नाक - यह आपकी वाक्पटुता, अभिव्यक्ति व सुनने की क्षमता आदि गुणों की परिचायक है। आप अधिक सुनेंगे व जो बोलेंगे सटीक व अल्प बोलेंगे।

9. शनि की रेखा - गुरुदेव की एकान्त साधना, मौनवृत्ति, वैराग्यशीलता, निस्पृहवृत्ति, भाग्यशाली होने का परिचय दे रही है।

10. बुध-शनि रेखा- आचार्यवर गुरुदेव श्रीसंघ का आधुनिक दृष्टि से विस्तार व विकास नवीन आयामों, शिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयीन शोध-बोध-शिक्षा आदि की दृष्टि से विशेष होगा। पद-ख्याति न चाहते हुए शिष्य-प्रशिष्य वर्गों से जिनधर्म-शासन, ज्ञान-विज्ञान की रचनात्मक प्रभावना होगी। आगे पुनः बताया कि आपके तृतीय नेत्र अर्थात् तपोबल, मनोबल, आत्मबल आदि अन्य विशिष्ट गुणों को सामान्य दुनियाँ नहीं पहचान पायेगी। यहाँ तक कि बड़े-बड़े आचार्य साधु आदि भी आपको पहचान न सकेंगे।

11. जीवन रेखा - एस.पी. जैन ने जीवन रेखा देखकर कहा आपकी आयु 90 वर्ष से ऊपर ही होगी अर्थात् आप स्वस्थ, सबल, शतायु, दीर्घायु होंगे।

12. त्रिशूल रेखा - आप शक्तिशाली, सत्साहसी, तेजस्वी व्यक्तित्व के धारक हैं।

13. मंगल रेखा - आचार्य देव का आत्मबल, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। संघ में अनुशासन, आत्मानुशासन बना रहेगा।

14. पैरों में मन्दिर, पद्म रेखा तथा गुलाब की पंखुड़ी होने से आचार्यश्री जहाँ भी जायेंगे वहाँ का क्षेत्र विकास, जिनशासन प्रभावना होकर धर्म ध्वजा फहराऐंगे। आप अपना कोई निजी क्षेत्र, गिरि, संस्थान आदि नही बनायेंगे अर्थात् आप निर्द्वन्द, निष्पक्ष, फक्कड़, निस्पृह रहते हुए आध्यात्मिक विकास करेंगे। आपके शिष्य-भक्तों के द्वारा यह सब सहज-सरल रूप से होता रहेगा।

15. शनि शुक्र रेखा - निस्पृह वृत्ति की परिचायक है।

16. गुरु रेखा - दबी रेखा अर्थात् गुरु क्षेत्र (पर्वत) दबा हुआ होने से स्वदेश व स्वजनों की अपेक्षा विदेश वाले आपको अधिक मानेंगे पूजेंगे। 'गाँव का जोगी जोगना आनगाँव का सिद्ध' वाली कहावत आप पर सटीक सिद्ध होगी। अर्थात् भारत के लोग आपको नहीं

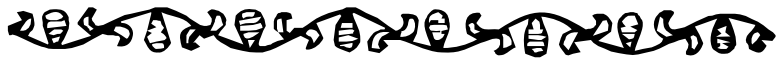

समझ पायेंगे जबकि विदेश के लोग अधिक समझ पायेंगे। अन्त में यहाँ तक कह दिया हे गुरुदेव! आपकी समाधि के अनन्तर आपको अधिक पूजेंगे।

17. पद्म रेखा - गुरुदेव जंगल में मंगल करेंगे तथा जहाँ पदार्पण करेंगे वहाँ प्रबल पुण्य से ग्राम-नगर-स्थान-क्षेत्र आदि विकसित होंगे, जो जन गुरुदेव की सेवा व्यवस्था आदि करेंगे उनका भी विकास होगा। गुरुदेव के लम्बे हाथ महापुरुष के प्रतीक हैं जिससे आप सर्व-धर्म-समभावी, गुणग्राही, सबसे सीखते हुए सनम्र सत्यग्राही, मौनप्रिय, अनावश्यक नहीं बोलने वाले साधक बने रहेंगे। आपका अनुभवात्मक ज्ञान होने से आप जागतिक परिस्थितियाँ, जलवायु, प्राकृतिक आपदा, विज्ञान, पर्यावरण, प्रकृति, शकुन भविष्य दृष्टा होने से आपका पूर्वानुमान, पूर्वाकलन सही सिद्ध हो रहा है एवं आगे भी होता जायेगा।

18. तालु का गोल - गुरुदेव का यह चिह्न आपके ब्रह्माण्डीय ज्ञानी होने का प्रतीक है। आप एक स्थान में बैठकर सारे विश्व-क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त करने वाले अलौकिक महापुरुष हैं। आप अच्छे शकुन शास्त्री हैं। आप एक से अनेक विषयों का ज्ञान-भान करने वाले अद्वितीय पुरुष हैं। आप खगोल-भूगोल-राजनीति-न्याय-अर्थशास्त्र आदि के अच्छे ज्ञाता हैं अतः आप राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों के आधार पर राजनीतिक भविष्यवाणी करने वाले युगदृष्टा साधु हैं। आपका विशिष्ट प्रभामण्डल होने से सामान्य जन आपके समीप नहीं बैठ पायेंगे; विशिष्ट साधु ज्ञानीजन ही आपके पास बैठेंगे। जनरल साधु भी नहीं समझ पायेंगे।

19. दन्त व तालव्य लक्षण - गुरुदेव के 32 दाँत होने से आपकी

भविष्यवाणी सत्य सिद्ध होती है। तीखे दाँत बुद्धिमान होने के तथा मध्य के दाँतों का गैप आपके कूट-कपट-मायाचारी से रहित होने अर्थात् सरलता-सहृदयता-सदाशयता का प्रतीक है।

20. लचीला अंगूठा - सनम्र सत्यग्राही-सहिष्णुता का प्रतीक तथा 90 अंश से अधिक होने से उदारवादी-प्रगतिशील होने का मुख्य लक्षण है। अंगुलियों की गाँठें उभरी हुई होने से आपके महान् दार्शनिक होने का लक्षण है।

21. पैरों के नीचे का गैप - उन्नत विचार, सारासार विचार ग्रहण का प्रतीक है।

22. चौड़ी छाती- साहस, धैर्य, वीरता, विकास, सिंहचाल की प्रतीक है।

23. गले की मणिबन्ध रेखा- गुरुदेव के महान् श्रेष्ठ, ज्येष्ठ, परिष्कृत व्यक्तित्व की प्रतीक है।

24. छाती के बाल - उदारता-सरलता-दयालुता के प्रतीक हैं।

25. गज मस्तक - उन्नतविचार व उन्नत भाग्य का प्रतीक है।

26. गहरी आँखें, उभरी भृकुटि - अन्तर्दृष्टि व सूक्ष्मदृष्टि की प्रतीक है।

27. हथेली में मुट्ठी के बाहर तिल - धर्मज्ञान प्रभावनार्थे आवश्यक धन आएगा किन्तु सञ्चय नहीं होगा। इस प्रकार आचार्य भगवन्त के 99 प्रतिशत अंग लक्षणों को शुभ व कल्याणकारी बताया।

जैसा कि ग्राम खाखड़ (राज.) में द्वितीय बार बताया !

28. गुरु - का क्षेत्र दबा होने से- आप ख्याति-पूजा-लाभ-प्रसिद्धि-आडम्बर-रूढ़ि आदि से दूर रहते हुए शान्त-निस्पृहवृत्ति धारक निराले सन्त हैं।

29. बुध- का क्षेत्र दबा होने से- आप ईर्ष्या-प्रतिस्पर्द्धा-छल-कपट आदि विकारों से रहित सहज-सरल-समताधारी-एकान्तप्रिय साधु हैं।

30. पित्त - प्रकृति होने से किशोर अवस्था (8वीं कक्षा के तक) में आने वाले क्रोध का आपमें वर्तमान में पूर्ण नियन्त्रण है।

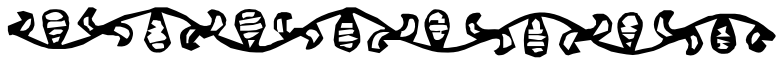

31. चन्द्र – क्षेत्र उन्नत होने से आपमें कल्पनाशीलता की बेजोड़ प्रतिभा है।

32. गज मोती – के चिह्न से आपमें हाथी जैसी मस्ती, हरफनमौला प्रवृत्ति, सुनियोजित लापरवाही (आध्यात्मिक) है।

33. पीठ व कटि – के लक्षण आप में सिंहवृत्ति अर्थात् पराक्रमी-साहसी-स्वमार्ग अन्वेषक-सत्यनिष्ठ रहते हुए आगे बढ़ने (चरैवेति-2) की वृत्ति के परिचायक है।

34. लम्बे पैरों – में हरिण जैसी तीव्र चाल व सजगता है।

35. रीढ़ की सीधी अस्थि – सूक्ष्मदृष्टि व सूक्ष्मसाधना व उर्ध्वगामिता के लक्षण प्रगट कर रही है। इसके साथ फुर्तीला उत्साह युक्त, किशोरावस्था जैसा क्रियाशील सुगठित शरीर, स्वस्थ्य व दीर्घायु होने का प्रतीक है।

36. विद्यार्थी – जीवन से लेकर उपाध्याय पदासीन रहते हुए आप ऊहा-पोह व तर्क-वितर्क बहुत करते थे लेकिन वर्तमान में आप इससे दूर रहते हुए समता व निस्पृह भाव में रहते हैं।

37. पैर के अंगूठे से बड़ी तर्जनी अंगुली – आपको तार्किक शक्ति सम्पन्न सर्वश्रेष्ठ साधु सिद्ध कर रही है।

38. आचार्य भगवन्त आगे और भी अधिक मौन साधनारत रहकर जनसम्पर्क से दूर निस्पृहभावी रहते हुए श्रेष्ठ समाधि का वरण करेंगे।

आध्यात्मिक विकास क्रम से ही दानव से मानव, मानव से महामानव, महामानव से महात्मा, महात्मा से परमात्मा बनते हैं तो आध्यात्मिक पतन से नर से नरासुर, नरासुर से नारकी बनते हैं।

जैसा कि प्राण सहित शरीर की सुरक्षा आदि की जाती है, शव की नहीं वैसा ही आध्यात्म युक्त धर्मादि की आराधना विधेय है अन्यथा नहीं।

विषयानुक्रमणिका

अ.क्र.	विषय	पृ.क्र.
1.	प्रस्तावना (मेरी कविताओं के इतिहास कारण-परिणाम)	2
2.	मॉडर्न एण्ड स्पीरिच्युल बनने के फार्मूले	3
3.	Formulae of Become Modern and Spiritual	5
4.	मेरा अन्य के लिए अबोधगम्य भाव संसार	5
5.	मेरी भावना : स्वात्मोपलब्धि एवं विश्व कल्याण	7
6.	मेरे जीवन की समयसारिणी (मेरा लक्ष्य एवं साधना पद्धति)	9
7.	आचार्य श्री कनकनन्दी जी की विशेषता	10
8.	स्व-सम्बोधन : विषमता त्यागो-समता धरो	11
9.	आचार्य श्री कनकनन्दी जी सम्बन्धी व्यक्तित्व-कृतित्व एवं भविष्य	12

परिच्छेद- 1 (सर्वोदय - शिक्षा का स्वरूप एवं फल)

1.	विश्वगुरु की वन्दना (1)	25
2.	सद्गुरु वन्दना (2)	26
3.	प्रभु चरण वन्दे (3)	27
4.	आध्यात्मिक प्रार्थना (स्व-आनन्द की प्राप्ति स्वयं से प्राप्त करने हेतु) (4)	27
5.	आध्यात्मिक प्रार्थना (स्व का उद्धार स्व के द्वारा) (5)	29
6.	महावीर झूले पालणा (6)	30
7.	श्रीराम गुण-गण-कीर्तन (7)	30
8.	विश्वगुरु का हुआ अवतार (8)	31
9.	लिया प्रभु अवतार (9)	32
10.	भगवान् महावीर की वन्दना (10)	33
11.	शिक्षा संस्कृति ज्ञान-विज्ञान के आदि प्रवर्तक :	

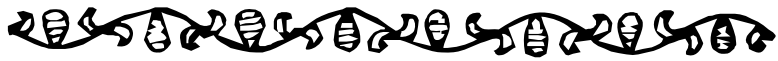

भगवान् आदिनाथ (11) 34

12. सबसे शिक्षा लो... महान् बनो! (12) 36

13. स्वाध्याय का स्वरूप एवं फल (13) 37

14. आत्मानुभव की महिमा
(अनुभव रहित ज्ञान केवल सूचना मात्र) (14) 37

15. भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने का संकल्प (15) 39

16. साक्षर से सन्मार्गे चलो (16) 40

17. ज्ञान-विज्ञान-आध्यात्म के आद्य प्रवर्तक (17) 40

18. प्यारे बच्चों सर्वोदय के मार्ग में आगे बढ़ो!
(बाल सर्वोदय गीत) (18) 41

19. प्राचीन गौरव-आधुनिक बोध से
हे भारतीय! पुनः विश्वगुरु बनो! (19) 42

20. विश्व के हर कण से ज्ञान मिलता
(ज्ञान-ज्ञेय मीमांसा) (20) 43

21. जिनवाणी सेवन की महिमा/फल (21) 45

22. अनेकान्त-स्याद्वाद का स्वरूप (22) 46

23. हे दिलदार! स्वयं को पाओ! (23) 48

24. भोला मेरा बचपन (24) 49

25. माता का दूध एवं मातृ-भाषा का महत्व (25) 50

26. जैन श्रमण (साधु) से प्राप्त शिक्षाएँ (26) 52

27. सुविद्या एवं कुविद्या का स्वरूप एवं फल (27) 54

28. असम्यक्-सम्यक् एवं सम्पूर्ण ज्ञान के उपाय (28) 56

29. कलिकाल सर्वज्ञ वीरसेन स्वामी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व (29) 57

30. योग्य एवं अयोग्य शिष्य-गुरु-शिक्षा (30) 59
31. बाल कविता (14 नवम्बर बाल दिवस के उपलक्ष्य में) (31) 60
32. सर्वोदय के विभिन्न ज्ञाता-प्रवक्ता एवं कार्यकर्त्ता (32) 61
33. सर्वोदय भजनीय-परतन्त्रता त्यजनीय (33) 63
34. पावन भावना एवं व्यवहार (34) 64
35. करणीय एवं त्यजनीय (35) 66
36. सुखप्रद-स्वास्थ्यकर जीवन के नियम (36) 67
37. धार्मिक या अधार्मिक सबके लिए करणीय
(सभी के लिए नैतिकाचार) (37) 68
38. सुभाव-कुभाव का स्वरूप एवं फल (38) 69
39. अनुभवज्ञानी-कृषक की आत्मकथा (39) 70
40. सेवा का व्यापक स्वरूप एवं फल (40) 72
41. भाव से पुण्य-पाप-मोक्ष (41) 73
42. शान्ति के उपाय : शान्ति सन्देश (42) 74
43. परिवार रूपी वृक्ष का स्वरूप
(अन्तर्राष्ट्रीय परिवार दिवस पर विशेष) (43) 75
44. तू ही तेरे शत्रु-मित्र-सत्य (44) 78
45. सार्वभौम हैं महावीर के सिद्धान्त (45) 79
46. सत्य एवं वचन-सत्य का विश्व रूप (46) 80
47. विश्व की सम्वृद्धि एवं शान्ति के सार्वभौम उपाय (47) 82
48. तू ही स्वर्ग-नर्क-मोक्ष रूप है (48) 83
49. मानव चाहो यदि सदा सुखी रहना
(विश्व हृदय दिवस पर 23 दि.) (49) 84

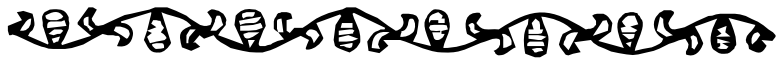

50. मानव पशु-पक्षी के कृतज्ञ बने न कि कृतघ्न (50) 86
51. स्टीव जाब्स से प्राप्त शिक्षाएँ (51) 88
52. वैश्विक सच्चा-अच्छा भाव एवं काम (52) 89
53. आचार-विचार-प्रबन्धन (53) 90
54. शान्ति प्राप्ति की कला (54) 91
55. सम्पूर्ण सफलता के मूलसूत्र (55) 93
56. स्व-उपलब्धि ही सर्व उपलब्धि (56) 94
57. समाधि से स्वात्मोपलब्धि (57) 95
58. स्वात्म भवन में आनन्द घन है! (58) 97

परिच्छेद- 2 (संकीर्ण शिक्षा का स्वरूप एवं फल)

59. विकृति को त्यागकर संस्कृति को पाले धार्मिक जन (जैन धर्मावलम्बियों के लिए आह्वान) (1) 99
60. मानव की विषमतापूर्ण विचित्र प्रवृत्ति (2) 100
61. मन्यमाना सभ्य मानव की असभ्य-बर्बर वृत्ति (3) 102
62. दुर्जनों की पहिचान-कथनी-करनी में भिन्नता (4) 103
63. दुर्जन की प्रकृति एवं प्रवृत्ति (5) 105
64. मोह का साम्राज्य (6) 106
65. आत्म पतन के सहयोगी मोही जीव (7) 107
66. विनाश उन्मुखी सफलता एवं सर्वोदयी सफलता (8) 109
67. स्व-जाति हिंसक मानव-जाति (9) 111
68. हे मानव! विनाशक युद्ध त्यागो, विकास के कर्म करो (10) 112
69. विज्ञापन की आत्मविज्ञप्ति (11) 114
70. भ्रष्टाचार का साम्राज्य देखो (12) 115

71. धनप्रधान भारत की दुर्दशा (13) 116
72. भारतीय शिक्षा के उद्देश्य, पद्धति, पुस्तकों में कमियाँ उसके परिणाम एवं निवारण (14) 119
73. अच्छाईयों के नाशक भारत की रूढ़िवादी पढ़ाई (विश्व साक्षरता दिवस के उपलक्ष्य में) (15) 124
74. कन्या भ्रूण हत्या की आत्मकथा (16) 130
75. विज्ञान के असत्य-मत तथा उससे हानियाँ (17) 133
76. क्षीण होता जा रहा है भारत ज्ञान-त्याग-शील से! (आधुनिक भारत की तस्वीर) (18) 135
77. सत्य-समता-शान्ति के बिना शिक्षा-धर्म आदि अहितकर (19) 139
78. आधुनिक पढ़ी-लिखी रानी (20) 140
79. हे विश्वगुरु भारतीय पिछड़ापन त्यागो! (21) 142
80. भारतीयों की आत्महत्या संख्या बढ़ने के कारण एवं निवारण (22) 143
81. विज्ञान से महान् धर्म की उपयोगिता क्यों कम हो रही है? (23) 144
82. मानव (जाति) जब स्व-इतिहास पढ़ेगा! (रहस्यवादी कविता) (24) 145
83. अभी लोगों की भीड़ बढ़ी, सामाजिकता घटी (भीड़ की विभिन्न समस्याएँ) (25) 146
84. स्वीकार्य-अस्वीकार्य (26) 148
85. केवल भौतिक विकास बनता है-विनाश का कारण (27) 150

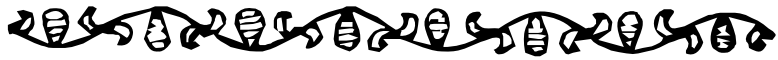

86. हर अच्छाईयों को विकृत करता है मानव (28) 151
87. धनप्रधान भारत की दुर्दशा (29) 153
88. घट रहा है सामान्य ज्ञान एवं नैतिकाचार (30) 154
89. सर्वत्र विकास के बाधक : रूढ़िवाद (31) 156
90. भारत के आधुनिक आदर्श हीरो-हीरोईन (32) 157
91. मोही-अज्ञानी जीव करता है विपरीत प्रवृत्तियाँ स्व स्वभाव मानकर (33) 158

परिशिष्ट

- आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के शिष्य डॉ. कच्छारा द्वारा अमेरिका के यूनिवर्सिटी में ऑनलाइन पाठ्यक्रम का शुभारम्भ 160
- मेवाड के झालावाड अञ्चल में अनूठा श्रुत पञ्चमी पर्व महोत्सव सम्पन्न 161
- शुभाशीर्वाद एवं शुभकामना 163
- सरस्वती की प्रतिरूप थी गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमती माताजी 165
- आ. कनकनन्दी के शिष्य प्रो. (डॉ.) सोहनराज तातेड़ को डी.लिट्. (दर्शन) की उपाधि 166
- वैश्विक उपलब्धि की बहार 167
- भारत के शिक्षित युवा की दिशा-दशा निराशाजनक 168
- शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ 174

यू.एस.ए. में जिनमन्दिर निर्माणकार्य प्रारम्भ... आचार्य कनकनन्दी साहित्य कक्ष स्थापन...

वेबसाइट पर साहित्य उपलब्ध... एवं... विश्व के आश्चर्यकारी ग्रन्थ सिरि भूवलय का प्रकाशन प्रारम्भ!

परिच्छेद - 1

सर्वोदय शिक्षा का स्वरूप एवं फल

विश्वगुरु की वन्दना

चरण कमल वन्दूँ जिनराई...
जाके ज्ञान में ब्रह्माण्ड झलके, हस्ते आमलक नाई ।।ध्रु.।।

आत्मध्यान से घाती नशाया, आत्म विभूति पाई SSS
अनन्तज्ञान-दर्श-सुख पाया, अनन्तशक्ति को पाई SSS ।। (1)

चरण कमल...

समवसरण की रचना हुई, दिव्यध्वनि निर्गत हुई SSS
तीन लोक के गुरु बने आप, समता शान्ति को सेई SSS।। (2)

चरण कमल...

आपने बताया रत्नत्रय पथ/(धर्म), मुक्ति मिले जो सेई SSS
सत्य विश्वास को श्रद्धा बताई, धर्म की प्रथम इकाई SSS ।। (3)

चरण कमल...

सम्यग्ज्ञान है सत्यविज्ञान, धर्म की द्वितीय इकाई SSS
समताचरण ही सदाचरण है, धर्म की तृतीय इकाई SSS ।। (4)

चरण कमल...

पंचव्रत दशधर्म युक्त, समता वृत्ति सो हुई SSS
जिससे कर्म की निर्जरा होती, अन्त में मुक्ति दाई SSS ।। (5)

चरण कमल...

चारों गति जीव जो अपनाते, आपकी देशना जो होई/(हुई) SSS
वे हैं सम्यग्दृष्टि मोक्षपथगामी, आपके सच्चे भक्त वे ही SSS ।। (6)

चरण कमल...

शत इन्द्र सेवित आप परमेश्वर, विश्वगुरु पदवी तोही ऽऽऽ
कनकनन्दी तब मार्ग अनुगामी, स्वात्मोपलब्धि हेतु सेई ऽऽऽ ।। (7)

चरण कमल...

खाखड़, दि= 19.5.2012, मध्याह्न 2.27

सद्गुरु वन्दना

(रागः- 1. आधा है चन्द्रमा... 2. बहुत प्यार करते हैं...)

करता हूँ वन्दना... गुरु स्वामी! मोक्षमार्ग पथिक ज्ञानी ध्यानी ।।टेक।।

आप (तो) राग द्वेषमोह त्यागा, शत्रु-मित्र में साम्य धारा/(धनजन भोगासक्तत्यागा)।
विधर्मी की भी रक्षा करते, पिच्छी से परिमार्जन करते।
हाथों से केशलोंच करते, संक्लेश भावों को न धरते।। (1)...

नंगे पैर से विहार करते, मिथ्यादृष्टि की भी रक्षा करते।
पर्यावरण की रक्षा करते, तनमन स्वास्थ्य रक्षा करते।।
खड़े-खड़े ही आहार करते, प्रमाद भाव को परिहरते।। (2)...

करपात्र में भोजन करते, स्वावलम्बन का भाव धरते।
दिगम्बर वेश को धरते, सर्वपरिग्रह को त्यजते।
आत्मकल्याण का भाव धरते, विश्वशान्ति का पाठ पढ़ाते।। (3)...

सदा साम्यभाव को धरते, हित-मित-प्रिय ही बोलते।
भेद-भाव कभी न करते, भेदविज्ञान का भाव धरते।।
रत्नत्रय को धारण करते, दशधर्मों का पालन करते।। (4)...

सोलह भावनाओं को भाते, द्वादश अनुप्रेक्षा धारे चित्ते।
भावी भगवान् तेरा रूप, देहेस्थितोऽपि विदेह चित्त।
विमुक्ति भावे अनुरक्त, कनकनन्दी है तेरा परम भक्त।। (5)...

प्रभु चरण वन्दे

(तर्जः- ज्योति कलश छलके SSS...)

वन्द्य चरण प्रभु के/(वीर के)
प्रभु के/(जिन के) चरणे नतमस्तक हैं, शत इन्द्र लोक के SSS।। ध्रु.

सोलह कारण भावना बल से, पंचकल्याणक युक्त होने से SSS
हुए तीर्थंकर देव SSS...2 ।।1।। वन्द्य...

घातिकर्म के नाश होने से, अनन्त चतुष्टय के स्वामी होने से SSS
हुए विश्वगुरु आप SSS...2 ।।2।। वन्द्य...

दिव्यध्वनि से विश्व सम्बोधा, विश्वतत्त्व का सूत्र बताया SSS
किया विश्व उपकार SSS...2 ।।3।। वन्द्य...

मोक्षमार्ग का सूत्र बताया, सर्वोदय का मार्ग बताया SSS
उपकारी विश्व के SSS...2 ।।4।। वन्द्य...

अन्त में सर्व कर्म विनाशा, परमपद मोक्ष को पाया SSS
स्वामी अमृत पद के SSS...2 ।।5।। वन्द्य...

तव गुण गण हम सब गाये, तब गुण ही हम सब पाये SSS
भावे 'कनक' भाव से SSS...2 ।।6।। वन्द्य...
झाड़ोल (फ.) दि= 4.4.2012, मध्याह्न 1.57, महावीर जयन्ती

आध्यात्मिक-प्रार्थना

(स्व-आनन्द की प्राप्ति स्वयं से प्राप्त करने हेतु)

(रागः- जो बसन्ती पवन पागल...)

हे प्रभो! आनन्दरूपा... आनन्द ही मुझे दीजिये।
आनन्द के अनुभव से... दुःख सब दूर कीजिये।। स्थायी...

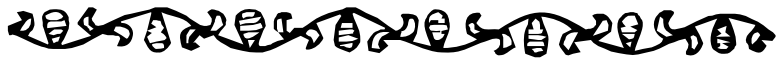

अनन्त आनन्द स्वरूप... तू ही निज परमात्मा।
मोह-राग-द्वेष से ही... दुःखी बना बहिरातमा।।
यथा ही है सरल धागा... स्वयं में उलझे-सुलझे।
तथाहि मेरा निज रूप... दुःख त्याग सुखी (भी) हुए।। (1)
हे प्रभो!...

सुखदाता अन्य कोई नहीं... अन्य से न मिले सुख।
सुख ही मेरा निजरूप... विकृत है मेरा दुःख रूप।।
मल आच्छादित स्वच्छ रूप... वस्त्र से तिरोहित होता।
मल निष्कासित जब होता...स्वच्छ रूप निज प्रगटता।। (2)
हे प्रभो!...

विकृत मेरा निज रूप... जब परिष्कृत होयेगा।
विकृत दुःख दूर होगा... ज्ञानानन्द प्रगटायेगा।।
चिदानन्द है मेरा रूप... भौतिक देह से परे।
शरीर इन्द्रिय मन परे... चिन्मयानन्द रूप है।। (3)
हे प्रभो!...

अन्य से जब सुख चाहा... दुःख का आमन्त्रण किया।
इच्छा से दुःख जन्म लिया... फूला-फला रस दिया।।
अभी ते तेरे प्रसाद से... इच्छा-तृष्णा क्षीण किया।
सुख मुझ में/(से) जन्म लेकर... फूला-फला रस देता।। (4)
हे प्रभो!...

अभी तो तेरा आश्रय मैं... कभी न त्याग करूँगा।
तुझे ही पूर्ण प्राप्त करके... 'कनक' सुखमय बनूँगा।।
हे प्रभो! आनन्दरूपा... आनन्द ही मुझे दीजिये।
आनन्द के अनुभव से... दुःख सब दूर कीजिये।। (5)
हे प्रभो!...

झाड़ोल (फ.), 5.5.2012, मध्याह्न 2.35

आध्यात्मिक-प्रार्थना

(स्व का उद्धार स्व के द्वारा)

(रागः- 1. रख लाज मेरी... 2. आपकी नजरों ने...)

हे प्रभु निज शुद्ध आत्मा... स्व स्वरूप प्रगटाइये।
राग-द्वेष मोहादि शीघ्र... दूर मुझसे कीजिये।। ध्रु.।।

स्व के अनन्त ज्ञान-दर्शन... सुख-वीर्य वैभव दीजिये।
अनन्त दुःख जन्म मरण... दूर मुझसे कीजिये।।

तुम ही समर्थ यह सब... मुझे प्राप्त कराने के लिये।
अन्य सब तो सहयोगी हैं... चेतनाचेतन भी हुए।। (1)

चावल ही भात बनता (है)... स्व-उपादान शक्ति से।
पानी अग्नि पात्र कर्त्ता (तो)... बाह्य निमित्त मात्र से।।

जब तुम प्रगट होते हो... स्व-शक्ति के बल से।
रागादि नाश होते हैं... अपनी ही विवशता से।। (2)

तेरी कृपा बिन अन्य की... कृपा से न उद्धार है।
तुम्हारे सहारे बिन मेरा... भवभ्रमण से न पार है।।

दीपक से सूर्य को नहीं... मिलता प्रकाश भी कभी।
अन्य से भी सुख-शान्ति... न मिले हैं मुझे कभी।। (3)

'कनकनन्दी' इसी के लिये... सेवा करता है निशिदिन।
तेरे हेतु ही ज्ञान-ध्यान... करता है हर दिन।।

हे प्रभु निज शुद्ध आत्मा... स्व स्वरूप प्रगटाइये।
राग-द्वेष मोहादि शीघ्र... दूर मुझसे कीजिये।। (4)

झाड़ोल (फ.), 4.5.2012, रात्रि 10.13

महावीर झूले पालणा

(रागः- चन्दा मामा दूर के...)

महावीर झूले पालणा... त्रिशला के नेह/(आँगन) में।
त्रिशला के नेह में... सिद्धार्थ के गेह/(भवन) में।। (टेक)

तीन लोक के नाथ जन्मे हैं... तीन लोक भी आनन्दे झूमे है।
नारकी भी तब शान्ति पाये हैं... स्वर्ग में जयजयकार हुए है ।।1।।

सोलह भावना के फूल खिले हैं... जन्मभूमि में रत्न वर्षे हैं।
स्वर्ग से देवगण आये हैं... पर्वत मेरु में अभिषेक करे हैं ।।2।।

ताण्डव नृत्य इन्द्र करे हैं... प्रभु चरण में नमन करे हैं।
वस्त्र अलंकार भेंट करे हैं... भोजन भी प्रतिदिन लाये हैं ।।3।।

देव बालक भी क्रीड़ा रचे हैं... प्रभु कृपा हेतु नमन करे हैं।
दश अतिशय से प्रभु शोभे हैं... 'कनक' भी प्रभु गुण गाये हैं ।।4।।

झाड़ोल (फ.) 1.4.2012, रात्रि 10.24

(आर्यिका सुवत्सलमती माताजी की भावना से रची गई यह रचना)...

श्रीराम गुण-गण-कीर्तन

(श्रीराम से प्राप्त शिक्षायें)

(रागः- सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों!...)

सुनो हे बच्चों! सुनो-सुनो बच्चों!
तुम्हें सुनाता हूँ राम कहानी।
जिसे सुन कर जिसे जान कर,
तुम भी बनो है आदर्शगामी।। (टेक)

राम थे महान् पुरुष मर्यादा, शिरोमणि/(लोकनायक) आदर्श राजा।
प्रजापालक दृढ़प्रतिज्ञ वीर, गम्भीर/(करुणासागर) सहिष्णु राजा।।

निस्पृहवृत्ति समताधारी, पिताज्ञाकारी/(त्याग के मूर्ति) क्षमा के सागर।
राजमहल व जंगलवास, जिनको दोनों में लगा न अन्तर ।।1।।

दुष्ट विनाशक शिष्ट पालक, सीताहरण से हुए दुःखित।
सीता उद्धार करने हेतु, महासंग्राम में रावण हत।।

विभीषण को राजा बनाया, स्वर्णलंका में (भी) नहीं आसक्त।
जननी तथा जन्मभूमि ही, जिनके लिये स्वर्ग से श्रेष्ठ ।।2।।

जिनके लिये दीन-हीन व, वनवासी भी होते विशेष।
धनी-गरीब में नहीं विभेद, राजतन्त्र में भी लोक विशेष।।

रामराज्य था लोकतन्त्र व, समाजवादी व शोषण मुक्त।
अन्याय अत्याचार रहित, भ्रष्टाचार से सर्वदा मुक्त ।।3।।

प्रजावत्सल रामराज्य में, हर प्रजा थी सुख सम्पन्न।
अतिवृष्टि अनावृष्टि रहित, सस्य-श्यामला से राज्य सम्पन्न।।

अन्त में राम राज्य त्याग कर, शुद्ध-बुद्ध परमात्मा हो गये।
कनकनन्दी रामगुण बखाना, गुणों से ही पूज्य राम हो गये ।।4।।

झाड़ोल (फ.) 1.4.2012 (रामनवमी) मध्याह्न- 2.41

विश्वगुरु का हुआ अवतार

(नय सापेक्ष कथन) (दांडिया नृत्य सहित)

करुणा के सागर ज्ञान दिवाकर, विश्व गुरु अवतार।
जयजयकार, जयजयकार, जयजयकार... ।।ध्रु.।।

सोलह भावना प्रभु ने बोया था... जिसका फूल अभी तो खिला है।
महके सारा संसार ऽऽऽ जयजयकार... ।।1।।

सोलह स्वप्न माता ने देखा था, दिक्कुमारियाँ गर्भ शोधा था।
रत्नों की वृष्टि नभ से होती है, मिला उसी का परिणाम ऽऽऽ जयजयकार...।।2।।

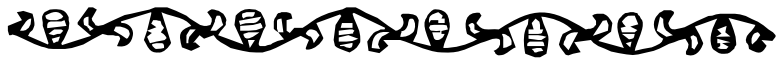

गर्भ से प्रभु तीन ज्ञानधारी, क्षायिकदृष्टि है अविकारी।
जन्म से दश अतिशय के धारी, मोक्ष प्राप्ति के वे अधिकारी।
हुआ आज अवतार, जयजयकार... ।।3।।

विश्वतत्त्व का ज्ञान करेंगे, विश्व को सन्मार्ग देंगे।
विश्वबन्धुत्व के सूत्र कहेंगे, करेंगे विश्वकल्याण SSS जयजयकार...3 ।।4।।

अन्त में मोक्ष प्राप्त करेंगे, सच्चिदानन्दमय बनेंगे।
संसार चक्र में नहीं घूमेंगे, होंगे अजर अमर SSS जयजयकार...3 ।।5।।

प्रभु गुण जो स्मरण करेगा, उनके गुणों को प्राप्त करेगा।
प्रभु के समान वह होयेगा, कनक करे गुणगान SSS जयजयकार...3 ।।6।।

लिया प्रभु अवतार

(तीर्थंकर जन्मोत्सव) (नयसापेक्ष कथन) (दांडिया नृत्य सहित)

लिया प्रभु अवतार SSS जयजयकार जयजयकार जयजयकार
तीर्थंकर अवतार/(महावीर अवतार) जयजयकार...3 ।।ध्रु.।।

यहाँ खुशी है वहाँ खुशी है, स्वर्ग खुशी है नर्क खुशी है।
खुशियाँ अपरम्पार SSS, जयजयकार...3 ।।1।।

इन्द्र इन्द्राणी देव भी आये, ऐरावत भी साथ में लाये।
संगीत नृत्य भजन भी गाये, मनाते जन्म कल्याण SSS,जयजयकार...3 ।।2।।

प्रभु को मेरु शिखर ले गये, जन्माभिषेक खुशी से किये।
ताण्डव नृत्य इन्द्र भी करे, करते जयजयकार SSS, जयजयकार...3 ।।3।।

अंगपोषण इन्द्राणी ने किया, प्रभु को अलंकृत भी किया।
चिह्न निर्धारण इन्द्र ने किया, ऐरावत (हाथी) पे प्रभु को बैठाया।।
हुआ आनन्द अपार SSS, जयजयकार...3 ।।4।।

जन्म के दश अतिशय हुए, शत इन्द्रों से पूजित हुए।
'कनक' भी प्रभु गुण-गण गाये, पाने को प्रभुगणखान SSS जयजयकार...3।।5।।

झाड़ोल (फ.) 1.4.2012, रात्रि 11.14

(आर्यिका सुवत्सलमती माताजी की भावना से रची गई यह रचना)

भगवान् महावीर की वन्दना
(भगवान महावीर का आदर्श जीवन एवं दिव्य योजना)

(राग :- आधा है चन्द्रमा...)

करता हूँ वन्दना... वीर स्वामी...2, अन्तिम तीर्थंकर मोक्षगामी SSS ।।(स्थायी)

आप हो सिद्धार्थ राजकुमार, ज्ञान वैराग्य से भरपूर।
वीर अतिवीर वर्द्धमान, आप हो सन्मति महावीर।
भरे यौवन में दीक्षा धारी, बाल ब्रह्मचारी आत्मध्यानी ।।1।। करता हूँ वन्दना...

सती चन्दना से हुई पारणा, दास प्रथा का किया निवारण।
बहुविध उपसर्ग सहना, धीर वीर गम्भीर महामना।
आत्मध्यान से चार घाती नाशा, ज्ञान ज्योति से विश्व प्रकाश ।।2।। करता हूँ वन्दना...

अणु से ब्रह्माण्ड तक जाना, सत्य सनातनमय जाना।
षट् द्रव्यमय विश्व जाना, उत्पाद व्यय ध्रौव्य माना।
रत्नत्रयमय मोक्षमार्ग जाना, आत्म उपलब्धि को मोक्ष है माना ।।3।। करता हूँ वन्दना...

सर्व भाषामयी दिव्यगीरा, विश्व विज्ञानमयी धारा।
अनेकान्त सापेक्षमय धारा, विश्व कल्याणी अमृत गीरा।
द्रव्य गुण पर्याय को बखाना, मोक्षमार्ग प्ररूपणा कीना ।।4।। करता हूँ वन्दना...

परस्पर उपग्रह जीव बताया, पारिस्थिति का मर्म बताया।
जीओ और जीने देना कहा, पर्यावरण रक्षा मार्ग कहा।

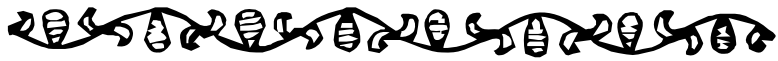

सत्य अहिंसामय जीवन कहा, विश्वशान्ति का सूत्र बताया/(कहा)।।5।।करता हूँ वन्दना

आदर्श जीवन आप जिया, सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान किया।
सर्वोदयमय सूत्र कहा, अन्त में मोक्ष को प्राप्त किया।
अतएव आप सदा स्मरणीय, 'कनकनन्दी' से सतत वन्दनीय।।6।।करता हूँ वन्दना..

ओगणा, 14.3.2012, मध्याह्न - 12.54

शिक्षा संस्कृति ज्ञान विज्ञान के आदि प्रवर्तक भगवान् आदिनाथ

(भारत का प्राचीनतम इतिहास)

(तर्जः- आदि ब्रह्मा आदिश्वर...)

आदि ब्रह्मा आदिश्वर श्री आदिनाथ महान् हो।
आदिराज आदिगुरु वृषध्वज नमो नमः ।। (टेक)

भोगभूमि का जब अन्त आया, कल्पवृक्ष सब नष्ट हुये।
क्षुधित प्रजा को प्रभु ने सिखाया, कृषि के द्वारा जीवन बचाया-2
आत्मरक्षार्थे असि सिखाया, लेखन पठनार्थे मसि बताया ।।1।। आदिराज...

भौतिक विनिमय हेतु वाणिज्य, गृहोपकरण शिल्प बताये।
परस्पर सहयोग सेवा बताया, इसलिये आदि ब्रह्मा कहलाये-2
आपने ब्राह्मी लिपि भी सिखायी, जिसका नाम ब्राह्मी लिपि हुआ ।।2।। आदिराज.

सुन्दरी पुत्री को अंक सिखाया, इसलिये आदिगुरु भी कहलाये।
राजा बनकर शासन किया, राजनीति न्याय आप सिखाये-2
तुम्हारा पुत्र भरत हुआ, प्रथम चक्री विख्यात हुआ ।।3।। आदिराज...

उनसे आर्य देश हुआ भारत, शस्यश्यामला हमारा देश।
तुम्हारा पुत्र बाहुबली हुआ, प्रथम कामदेव शक्तिशाली हुआ-2

अर्ककीर्ति अन्य पुत्र भी हुये, सबको विभिन्न विद्या सिखाये ।।4।। आदिराज...

आपको जब वैराग्य हुआ, सब पुत्रों को राज्य दिया।
जिससे देशों का उदय हुआ, पुत्रों के नाम से वंश चला-2
इक्षुरस प्रयोग तुमने सिखाया, इसलिये इक्ष्वाकु वंश कहाया ।।5।। आदिराज...

सूर्य चन्द्रादि वंश पुत्रों से, वंशों का प्रारम्भ इनसे हुआ।
दीक्षा प्रयाण से प्रयाग हुआ, अक्षय वट दीक्षावृक्ष बना-2
आत्मध्यान में लीन होने से, जटाजूट से भूषित हुये ।।6।। आदिराज...

पुरिमताल में हुआ केवलज्ञान, अशोक है बोधि वृक्ष का नाम।
देवों ने समवशरण बनवाया, गन्धकुटी मध्य में बनवाया-2
सर्वभाषामयी दिव्यध्वनि से, प्रभु ने ज्ञान विज्ञान सम्बोधा ।।7।। आदिराज...

आत्मविश्वास का मार्ग बताया, वैश्विक तत्त्व का रहस्य बताया।
कैलाश से मोक्षधाम पधारे, सच्चिदानन्द हैं रूप तिहारे-2
सत्य शिव सुन्दर अविकारी बन, अनन्त वैभव अविनाशी हुये ।।8।। आदिराज...

आदि अणु प्रकृति ज्ञानी, शिक्षा संस्कृति के आदि विज्ञानी।
सापेक्ष सिद्धान्त के आदि ज्ञाता, न्याय राजनीति के आद्य प्रणेता-2
आधुनिक या प्राचीन ज्ञान, देश-विदेशों के सम्पूर्ण ज्ञाता ।।9।। आदिराज...

रीति रिवाज समाज ज्ञान, समस्त ज्ञाता आदि भगवान्।
'कनकनन्दी' है भक्त तुम्हारा, तुम्हारा आदर्श हमको प्यारा-2
तुम्हारी भक्ति से तुम सम बनूँ, इसी हेतु से भक्ति मैं करूँ ।।10।। आदिराज...
आदि ब्रह्मा...

सबसे शिक्षा लो... महान् बनो!

(रागः दुनियाँ में रहना है तो...)

शिक्षा लो भाई शिक्षा लो... हर क्षेत्र से शिक्षा लो।
पढ़ना सुनना तब ही लाभ... अन्यथा जीवन गँवाते जाओ।।... (टेक)...

इतिहास अभी तो भूत हो गया... उससे हमें क्या लाभ होगा।
उसी से शिक्षा ले स्वयं सुधरे... ऐसा पाठ हमने पाया।।... (1)

स्वर्गीय महापुरुष जो हो गये... वे हमारा क्या कर पायेंगे।
उनके आदर्श पर हम सब चलें... यह उपकार हम पायेंगे।।... (2)

अरिहन्त सिद्ध जो हो गये... वे प्रभु वीतरागी हो गये।
उनसे हमारा यह लाभ होगा... उनके समान हम भी होंगे।।... (3)

नरकगामी जो पापी हुए... वे हमारी क्या क्षति करेंगे।
यदि उनसे भी शिक्षा लेंगे... पाप से हम बच जायेंगे।।... (4)

धर्मी हो या पापी जो हो... सबसे हम शिक्षा लेंगे।
इसी में सब गर्भित होता... पुराण इतिहास जो पढेंगे/(जानेंगे)।।... (5)

तीर्थक्षेत्र या मन्दिर जाओ... निर्जीव क्षेत्र से हम क्या पायें?
वहाँ का आदर्श हम पालेंगे... हमारा जीवन आदर्श होय।।... (6)

पुस्तकीय ज्ञान जो होय... तोता के जैसे रटन्त होय।
उस से कुछ भी लाभ न होय... गधा जैसे है चन्दन ढोय।।... (7)

पुस्तकीय ज्ञान नक्शा समान... नक्शा हमें न कहाँ ले जाये।
निर्देश अनुसार जो रास्ता चले... वह ही लक्ष्य को निश्चय पाये।।... (8)

सबसे पढ़ो सबसे सीखो... सज्जन दुर्जन जो कोई होय।
पशु-पक्षी या कीट पतंग... लौकिक गुरु या आध्यात्म होय।।... (9)

महापुरुष जो कोई होते... धार्मिक वैज्ञानिक या कवि होय।
'कनकनन्दी' भी सबसे सीखे... सबकी भावना ऐसी ही होय।।... (10)

स्वाध्याय का स्वरूप एवं फल

(रागः प्राची गगन तीरे (ओडिसी राग संस्कृत निष्ठ)...)

श्री गुरु चरण मूले... ग्रन्थ स्वाध्याय काले।
सत्य/(तत्त्व) ज्ञाने प्राप्ति द्वारा... मिथ्यात्व टले।। श्री गुरु।। (टेक)
अज्ञान तमस छटे... ज्ञानज्योति सुप्रकाशे।
हेय उपादेय ज्ञेय... सर्व/(सत्/सभी) प्रकाशे।। सत्य ज्ञान...।। (1)
रागद्वेष मोह हेय... अतएव त्यजनीय।
ज्ञानानन्द उपादेय... सर्वथा ग्राह्य।। सत्य ज्ञान...।। (2)
सर्व द्रव्य होते ज्ञेय... जीव अजीवादिमय।
सप्त तत्त्व समन्वय... पदार्थ ज्ञेय।। सत्य ज्ञान...।। (3)
परम तप स्वाध्याय... संयत मन इन्द्रिय।
असंख्य कर्म निर्जरा... स्वाध्याये ज्ञेय।।... ग्रन्थ स्वाध्याय...।। (4)
कषायों के उपशमे... समता शान्ति संयमे।
आरम्भ भोग विहीने... आनन्द झरे।। ग्रन्थ स्वाध्याय...।। (5)
पुण्य बन्ध सातिशय... ज्ञानानन्द उपादेय।
अन्त मोक्ष प्राप्ति ज्ञेय... 'कनकनन्दी' के ध्येय।।... ग्रन्थ स्वाध्याय.(6)

आत्मानुभव की महिमा

अनुभव रहित ज्ञान केवल सूचना मात्र

(रागः जय हनुमान ज्ञान गुणसागर...)

जय जय हे! अनुभव महान्... तुम ही सच्चा ज्ञान निधान।
तेरे बिन सब सूचना जान... मार्ग नक्शा सम इंगित जान।। (स्थायी)

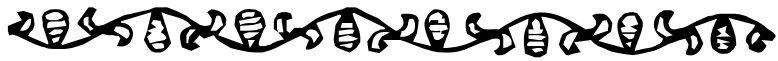

देखना सुनना पढ़ना रटना... स्मरण रखना लिखना गाना।
इत्यादि है सब मतिज्ञान... अनुभव बिन नहीं है श्रुतज्ञान।। (1)

आत्मानुभव युत जो है ज्ञान... वह है सुश्रुत आगम प्रमाण।
आत्मानुभव बिन आगम ज्ञान... वह है द्रव्यश्रुत कहे आगम।। (2)

शक्कर को देखना सुनना पढ़ना... स्मरण रखना लिखना गाना।
आदि से न होता मीठा अनुभव... जब तक न चखे चिह्वा द्वारा।। (3)

ऐसा ही अनुभवन होता है जान... आत्मा की विशेष क्षमता से जान।
अनुभव क्षयोपशम होता विशेष... जो ज्ञानावरण के भेद विशेष।। (4)

ग्यारह अंग पाठी अभव्य भी होता... आत्मानुभव बिन कुज्ञानी होता।
आत्मानुभव युक्त जो साधु होता... द्रव्यश्रुत बिन भी सुज्ञानी होता।। (5)

श्रेणी-आरोहण जब करे वे साधु... बन जाते हैं श्रुत केवली साधु।
क्षपक श्रेणी जब करे आरोहण... अन्तर्मुहूर्त में पाये केवलज्ञान।। (6)

ऐसा महिमामय अनुभव ज्ञान... स्व-पर प्रकाशी है सूर्य समान।
एक्स-रे समान भेदक होता... वेदन-भेदन अनुभव करता।। (7)

इसे ही कहते हैं भेद-विज्ञान... सश्रुत ज्ञान या सम्यग्ज्ञान।
अनुभव सहित स्व-पर जानता... सत्य असत्य का भेदन करता।। (8)

अनुभव द्वारा जो जाना जाता... संशय विभ्रम मिथ्या न होता।
अनुभव एक से बहु जानता...(एक) सत्यज्ञान से बहु असत्य ज्ञाता।। (9)

इसी हेतु चक्री त्यागे चक्रीत्व... ध्यान से पाते आत्म साम्राज्य।
आत्मानुभव बिन मिले न मोक्ष... मोक्ष के बिना न मिले सौख्य।। (10)

अनुभव चिन्तामणि कल्पवृक्ष... कामधेनु अहो आत्मिक सौख्य।
इसी हेतु 'कनक' करे प्रयास... हर द्रव्य क्षेत्र व काल अशेष।। (11)

भारतीयों के लिए आह्वान

भारत को पुन: विश्वगुरु बनाने का संकल्प

(रागः- ओडिसी-संस्कृतनिष्ठ... राष्ट्रीय गान नृत्य सहित)

प्राची गगन तीरे... नील समुद्र कूले।
तुंग शिखर मूले... सुभारत भुवने।। प्राची गगन तीरे।। ऽऽऽ (स्थायी/धत्ता)

भारत में जन्म लेते... महा पुरुष...
तीर्थंकर बुद्ध देव... श्रीराम कृष्ण...
जिनसे जन्म लेते... ज्ञान-विज्ञान...
सभ्यता संस्कृति तथा... आत्मिक ज्ञान...।। प्राची गगन तीरे ऽऽऽ ।।(1)...

यहाँ से जन्म लेते हैं... आयुर्वेद विज्ञान...
गणित अर्थशास्त्र व... वैश्विक ज्ञान...
जिससे हमारा देश... विश्वगुरु भी रहा...
आध्यात्मिक शासन से... शासन किया...।। तुंग शिखर मूले।। (2)...

अभी तो भ्रष्टाचार में... लिप्त हो रहा...
सर्वोच्च विकास से... भ्रष्ट हो रहा/(नष्ट कर रहा)...
पुनः भारत को अभी... जगना होगा...
आत्म गौरव के साथ... बढ़ना होगा... ।। नील समुद्र कूले।। (3)...

धर्म व विज्ञान को... जोड़ना होगा...
रूढ़िवादी नकल को... छोड़ना होगा...
सत्य व समता पर... चलना होगा...
विश्वगुरुत्व पद को... पाना ही होगा...।। सुभारत भुवने।। (4)...

'कनकनन्दी' इसीलिए... प्रयास रत...
भारतीयों को आह्वान... करे सतत...
भ्रष्टाचार त्याग कर... श्रेष्ठाचार कर...
मोह माया त्याग कर... अमृत वर...।। तुंग शिखर मूले।। (5)...

''साक्षर से सन्मार्गे चलो''

(शिक्षा का यथार्थ फल)

(रागः दुनियाँ में जीना हो तो...)

शिक्षा लो भाई! शिक्षा लो... सर्वोदय की शिक्षा लो।
अक्षर अंक से शिक्षा लो... प्रामाणिक व सत्य बोलो।। (टेक)

शिक्षा से संस्कृति संस्कार लो... आत्म-अनात्म का ज्ञान लो।
राग-द्वेष व मोह छोड़ो... हर जीव को प्रेम से जोड़ो ।।1।।

कथनी-करनी में भेद हरो... एकाग्र चित्त से काम करो।
अपना-पराया भेद छोड़ो... विश्व-मैत्री का पाठ पढ़ो ।।2।।

फैशन व्यसन व दम्भ छोड़ो... सरल सहजता से नाता जोड़ो।
भ्रष्ट आतंक काम छोड़ो... प्रेम शान्ति से जिया करो ।।3।।

माता-पिता की सेवा करो... हर जीव की दया पालो।
गुरुजनों की आज्ञा पालो... सदाचरण सदा पालो ।।4।।

पर्यावरण की रक्षा करो... हर जीव का ज्ञान करो।/(हर जीव से शिक्षा ले लो।)
'कनकनन्दी' ऐसी शिक्षा लहे... साक्षर से सन्मार्गे चले ।।5।।

झाडोल (फ.) 31-3-2012 रात्रि 10:16

ज्ञान-विज्ञान-आध्यात्म के आद्य प्रवर्तक

(रागः आधा है चन्द्रमा...)

करता हूँ वन्दना... आदि स्वामी...2
तेरे बिन और कोई नहीं स्वामी SSS...(स्थायी)...

आदि तीर्थंकर राजा स्वामी... शिक्षक न्यायाधीश कलागामी
साधु-दिगम्बर सर्वज्ञानी... समवशरणपति मोक्षगामी
प्रजापालनार्थे ज्ञान दिया... असि मसि कृषि वाणिज्य बताया।। करता हूँ वन्दना(1)

शिल्प सेवा का ज्ञान दिया... राजा बनकर न्याय किया
ब्राह्मी को अक्षर ज्ञान दिया... ब्राह्मी लिपि जो कहलाया
सुन्दरी को अंक का ज्ञान दिया...गणित का शुभारम्भ किया।। करता हूँ वन्दना(2)

भरत आदि जो पुत्र हुए... न्याय राजनीति ज्ञान दिये
अर्थशास्त्र युद्ध कला ज्ञान... शतपुत्रों को भी दिया ज्ञान
नीलाञ्जना मरण को देखा...वैरागी बनके राज्य त्यागा।। करता हूँ वन्दना...(3)

ध्यान से जटाजूट तव बढ़ा... महायोगीश्वर ध्यान रूढ़ा
इक्षु रस से हुई तव पारणा... अक्षय तृतीया दिन गणना
पञ्चाश्चर्य महिमा आहारदान की...गुण-गान चक्री ने बखाना।। करता हूँ वन्दना(4)

सर्वज्ञ आप्त हुए हैं आप... सर्व सत्य को जाना है आप
विश्व-सम्बोधन किया है आप... विमुक्त मार्ग के नेता आप
विश्वगुरु में आद्य आप ब्रह्मा विष्णु...शिव जिन आप्त मोक्षगामी।।करता हूँ वन्दना(5)

अन्त में गिरि कैलाश गये... आत्म स्वभाव में स्थिर हुए
सर्व कर्म नाशी मोक्ष गये... लोकाग्र शिखरे वास किये
सच्चिदानन्दमय आत्मकालीन प्रभु...'कनकनन्दी' को तव गुण भाये।।करता हूँवन्दना(6)

बाल सर्वोदय गीत

प्यारे बच्चों सर्वोदय के मार्ग में आगे बढो!

(रागः- 1. आओ झूले मेरे चेतन... 2. मोक्ष पद मिलता...)

चलो धीरे-धीरे बच्चों... विकास राह में SS
बढ़ो प्यारे प्यारे बच्चों... आदर्श राह में SS
विकास मार्ग में... बच्चों... सत्य (के) मार्ग में SS... (स्थायी)...

साक्षरी बनो शिक्षित बनो... आदर्श बनो संस्कृति पालो SS
संस्कारी बनो सहिष्णु बनो... उदार भाव/(उदारता) को हृदये धरो...(1)

विज्ञान जानो अध्यात्म मानो... प्रगति करो सहज बनो SS
वैश्विक बनो विनम्र बनो... गुरुजनों का सन्मान करो SS... (2)

व्यसन त्यागो फैशन छोड़ो... महान् लक्ष्य हृदये धरो SS
सात्विक खाओ अहिंसा पालो... व्यायाम करो भ्रमण करो SS... (3)

प्रकृति प्रेमी तुम भी बनो... पशु-पक्षी को स्वजन मानो SS
वृक्ष लगाओ स्वच्छता करो... पर्यावरण की सुरक्षा करो SS... (4)

खेल भी खेलो ध्यान भी करो... धार्मिक ग्रन्थ स्वाध्याय करो SS
मन्दिर जाओ प्रार्थना करो... पवित्र भाव सतत करो SS... (5)

मुनि संघों/(साधु-साध्वी) की सेवा भी करो... आहार दान सदा ही करो SS
व्याख्यान सुनो धर्म को जानो... धर्मानुसार जीवन जीयो SS... (6)

सत्य को जानो अहिंसा पालो... चोरी न करो झूठ न बोलो SS
अश्लील काम कभी न करो... शान्ति से जीयो क्रोध न करो SS... (7)

विश्वकल्याण/(सर्व जीवों) की भावना करो... सर्वोदय की कामना करो SS
'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो... विश्वास रखो विकास करो SS...(8)

नृत्य-परेड-बोध गीत

प्राचीन गौरव- आधुनिक बोध से हे भारतीय! पुनः विश्वगुरु बनो!

(राष्ट्रीय उद्बोधन कविता)

भारत ओहो भारत...3
कितना सुन्दर देश हमारा... कितनी गरिमा गाथा... (स्थायी)...

हमारे यहाँ जन्म लिया है... अध्यात्म जैसी शिक्षा...2
गणित विज्ञान आयुर्वेद भी... यहाँ की महान् शिक्षा...2 ... (1)

हमारे यहाँ जन्म लिया है... तीर्थंकर महाज्ञानी...2
सदय हृदय महात्मा बुद्ध... पतञ्जली जैसा ध्यानी...2 ... (2)

उमास्वामी यथा सूत्रकार हुए... वीरसेन महाज्ञानी...2
चरक सुश्रुत आयुर्वेदाचार्य... अक्षपाद अणुज्ञानी...2 ... (3)

तर्कधुरन्धर अकलंक सूरी... समन्तभद्र भी तथा...2
यतिवृषभ है महागणितज्ञ... ब्रह्माण्ड की रची गाथा...2 ... (4)

वराहमिहिर भास्कराचार्य भी... महावैज्ञानिक हुए...2
जिनसेनस्वामी रविषेणाचार्य... महाकाव्यकार हुए...2 ... (5)

वाल्मिकी व वेदव्यास भी तथा... कालिदास कवि हुए...2
जयदेव तथा बैजू बावरा... वैश्विक कविता गाये...2 ... (6)

इत्यादि कारण भारत भी कभी... बना था विश्व का गुरु...2
अभी तो भारत स्वतन्त्र हुए भी... नहीं बना विश्वगुरु...2 ... (7)

भ्रष्टाचार प्रदूषण रोगों का... बन रहा शिरमौर...2
अभी तो स्व उद्धार करो है... यह है युग पुकार...2 ... (8)

प्राचीन गौरव आधुनिक बोध... करके हे! समन्वय...2
पुरुषार्थ द्वारा विश्वगुरु बनो...'कनक' करे आह्वान/(ललकार/पुकार)...(9)

विश्व के हर कण से ज्ञान मिलता (ज्ञान-ज्ञेय मीमांसा)

(शकुन-स्वप्न-शरीर (सामुद्रिक लक्षण) ज्ञान से लेकर अनन्तज्ञान तक के ज्ञान-ज्ञेय सम्बन्ध)

(तर्जः 1. वन्देमातरम्... 2. अच्छा सिला)

विश्व के हर कण से ज्ञान मिलता, योग्य जीव को ही ज्ञान मिलता।
अयोग्य ज्ञान न लेता दिव्यध्वनि से, पात्रता के अनुसार ज्ञान मिलता।। (1)

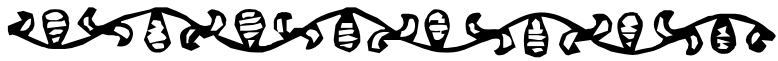

ज्ञेय प्रमाण ज्ञान कहा आगम, प्रमेयत्व गुण से होता है ज्ञान।
ज्ञान-ज्ञेय सम्बन्ध इसे कहते, वाच्य-वाचक सम्बन्ध समान होते।। (2)

ज्ञान-गुण आत्मा में जब होता प्रगट, ज्ञेय वस्तु का ज्ञान होता प्रगट।
स्वच्छता गुण जब प्रगट होता, दर्पण में प्रतिबिम्ब तब पड़ता।। (3)

क्षयोपशम से प्रारंभ (लेकर) क्षय पर्यन्त, ज्ञानावरण कर्म का होता विशेष।
वीर्यान्तराय कर्म का तथाहि जानो, ज्ञान प्राप्ति के प्रमुख कारण मानो।।(4)

छद्मस्थ योग्य बाह्य कारण होना चाहिए, इन्द्रिय मन प्रकाश होना चाहिए।
योग्य गुरु सहयोगी होना चाहिए, सर्वज्ञ के लिए यह नहीं चाहिए।। (5)

कार्य-कारण सम्बन्ध से ज्ञान भी होता,उपादन-निमित्त से तथा ही होता।
क्रिया-प्रतिक्रिया से ज्ञान भी होता, कर्मजन्य भावों से ज्ञान भी होता।।(6)

गुण द्रव्य पर्याय से ज्ञान भी होता, उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य से ज्ञान भी होता।
प्रमाण-नय-निक्षेप से ज्ञान भी होता अनेकान्त सापेक्ष (स्याद्वाद) से ज्ञान भी होता।।(7)

अष्टांग निमित्तों से भी ज्ञान होता ज्ञान/(बुद्धि) ऋद्धि से भी विशिष्ट होता।
मति श्रुत अवधि से ज्ञान भी होता, मनः पर्यय से मन-विज्ञान होता।।(8)

केवलज्ञान होता आत्मिक (आध्यात्मिक) ज्ञान, अक्षय-अनन्त-सर्वज्ञ ज्ञान।
त्रिकालवर्ती सर्व होता विज्ञान, बाह्य निमित्त बिन आत्मोत्थ ज्ञान।। (9)

ज्ञान-ज्ञेय सम्बन्ध होता सर्वत्र, अन्यान्य सम्बन्ध जानो सर्वत्र।
ज्ञान हो तो ज्ञेय होगा ज्ञेय तो ज्ञान, परस्पर सम्बन्ध है यह विधान।।(10)

ज्ञान स्व-पर प्रकाशी दीप समान, ज्ञान स्वयं ज्ञेय तथा जानो है ज्ञान।
ज्ञान-ज्ञेय अवस्था में चेतन ज्ञान, ज्ञेय अचेतन या जानो चेतन।। (11)

चेतन (या) अचेतन को जानता ज्ञान, अचेतन ज्ञेय सदा न होता ज्ञान।
चेतन जीव ही ज्ञान-ज्ञेय होता है, अचेतन द्रव्य सदा ज्ञेय होता है।।(12)

प्रतिबिम्ब यथा पडे दर्पण मध्ये,योग्य द्रव्य का योग्य क्षेत्र सम्बन्धे।
तथाहि ज्ञान-ज्ञेय होता सम्बन्ध, योग्य-ज्ञान-ज्ञेय में यह सम्बन्ध।। (13)

अतएव ज्ञान को करो विकास, स्वयं ज्ञेय ज्ञात होगा सत्य अशेष।
ज्ञान विकास हेतु एकाग्रमन, स्वाध्याय मनन व पावन ध्यान।। (14)

सत्यग्राही सनम्र व निर्मल मन, सहज सरल व शान्त हो मन।
ईहा आवाय धारणा युक्त हो ज्ञान, सूक्ष्म अनुभव से बढेगा ज्ञान।। (15)

तनाव दुश्चिन्ता प्रमाद त्याग, सतत अभ्यास का हो प्रयोग।
जिसी से ज्ञान-ज्ञेय सहज होता, इसी हेतु 'कनक' तो सजग सदा।।(16)

जिनवाणी सेवन की महिमा/फल

(तर्जः धन्य हमारे भाग्य/(भाव) जगे हैं...)

धन्य हमारे भाग्य/(भाव) जगे हैं
जिनवाणी का मनन/(पठन लेखन) करे हैं। (टेक)
जिनवाणी का पय जो पीये हैं।
जिणवाणी का प्रचार करे हैं।
जिनवाणी का श्रवण/सेवन करे हैं।

छोड़के पंथ मत संकीर्ण परम्परा, स्व-पर हित हेतु ग्रहण करे (हैं)।
ख्याति पूजा लाभ अहं को त्यागकर, विश्व हित हेतु प्रचार करे (हैं)।।(1)धन्य हमारे

अनेकान्त से हमने सीखा है, छोड़ो संकीर्ण बनो उदार।
स्याद्वाद से हमने सीखा है, हितमित प्रिय का करो उच्चार।। (2) धन्य हमारे...

वस्तु स्वरूप से हमने सीखा है, मैं हूँ सत्य शिव सुन्दर।
पंचव्रतों से हमने सीखा है, सर्व न्याय राजनीति सार।। (3) धन्य हमारे...

गुणस्थानों से हमने सीखा है, आत्म विकास आत्मिक सार।
षोडषभावना से हमने सीखा है, विश्व कल्याण की भावना सार।।(4)धन्य हमारे

द्वादश अनुप्रेक्षा हमें सीखाती है, विश्व विचित्र अपरम्पार।
षट्लेश्या भी हमें सीखाती है, भाव के अनुसार होता आचार।। (5) धन्य हमारे...

दशधर्म भी हमें सीखाते हैं, वैश्विक धर्म सर्व सार।
पंचसमिति भी हमें सीखाती है, जीवन जीने की कला सार।। (6) धन्य हमारे...

सत्य में समस्त ब्रह्माण्ड गर्भित, जीव-अजीव (मूर्त-अमूर्त)।
समता में सर्व समावेश होता है, धर्म व चारित्र नियमसार।। (7)धन्य हमारे...

शान्ति में गर्भित धर्म का फल है, शान्ति इच्छुक जीव सकल।
शान्ति प्राप्ति हेतु जिनवाणी सेवन, मैं करता हूँ निशि व दिन।।(8) धन्य हमारे...

जो श्रद्धा से जिनवाणी सुने है, निकट भव्य (वह) होता सुजान।
स्वाध्याय करना परम तप है, असंख्य पापों का होता हनन।। (9) धन्य हमारे...

विश्वविज्ञान का कोष जिनवाणी, लोक-अलोक करे प्रकाश।
भाग्यहीन वह मानव होता है, जो जिनवाणी का न करे सेवन।। (10)धन्य हमारे

जिनवाणी का जो सेवन करे है, साक्षात् जिनेन्द्र करे सेवन।
जन्मजरा मृत्यु अघ हरे वह, जो ज्ञानामृत करे सेवन।। (11) धन्य हमारे...

मेरा आह्वान है विश्व मानवों को, जिनवाणी का करो सेवन।
'कनकनन्दी' तो प्रयासरत है, जिनवाणी से हो विश्व कल्याण।।(12)धन्य हमारे

अनेकान्त-स्याद्वाद का स्वरूप

सर्वोदयी-विश्वशान्तिकर अनेकान्त एवं स्याद्वाद

रागः- (1. रघुपति राघव... 2. यमुना किनारे... 3. सायोनारा..)

अनेकान्त सिखाता है व्यापक बनो...
(हर) गुण-पर्यायों की सूक्ष्मता जानो
स्याद्वाद सिखाता है सत्यवादी बनो...
हित-मित-प्रिय सत्य बखानो
हर द्रव्य में होते अनन्त गुण... अतएव हर द्रव्य अनेकान्त पूर्ण।
तथा ही हर कार्य अनेकान्तमय... अनेक कारणों से होता कार्यमय/(तन्मय)

(हर) प्रदेश आकाश के होती अनेक दिशा... चार या दश भी होती है दिशा।
तथा ही अणु की (भी) होती दश दिशा... अविभागी अणु की होती दश दिशा/(यह दशा)

अनन्त आकाश की (भी होती) दशदिशा... विश्वगुरु अनेकान्त देता यह शिक्षा।
एक जीव में होते अनन्त गुण... अतएव एक जीव अनन्त भिन्न।।

अनन्त सिद्ध एक समान होते... समान अपेक्षा एक भी होते।
अपेक्षा से बारह भेद भी होते... क्षेत्र काल गति लिंगादि से होते।।

संसारी-मुक्त भी नहीं है भिन्न... शुद्धनय द्रव्य अपेक्षा प्रमाण।
कर्म अपेक्षा अनन्त है भिन्न... मार्गणा गुणस्थान अपेक्षा विभिन्न।।

ऐसा ही हर द्रव्य-गुणों में मानो... संकीर्ण दुराग्रह भाव को हनो।
ताना-बाना मय यथा होता है वस्त्र... तथा ही हर कार्य द्रव्य अशेष।।

अनेकान्त से होता व्यापक ज्ञान... उदार सहिष्णु निष्पक्ष ज्ञान।
जिससे भाव भी होता तन्मय... आचरण भी होता तथा तन्मय।।

अनेकान्त की अभिव्यक्ति स्याद्वाद... सप्तभंगमय होता स्याद्वाद/(विभेद)।
अस्ति-नास्ति आदि सापेक्ष कथन.. शेष धर्मों का न करे हनन।।

जीव स्वापेक्षा है अस्तित्ववान्... अजीव अपेक्षा होता नास्तित्वान्।
दोनों कथन में नहीं विरोध... एकान्तवाद में होता विरोध।।

दशा दिशायें न विरोध करती... एक/(हर) स्थान में दशों ही होती।
द्रव्य में अनन्त गुण रहते... विरोधी गुण भी साथ रहते।।

अनन्त गुणों के कथन निमित्त... स्याद्वाद बनता है अनन्त।
अनेकान्त है वैश्विक रूप... भाव-अहिंसामय वस्तु स्वरूप।।

दिव्य सन्देश यह तीर्थंकरों का... विश्वकल्याण व सर्वोदय का।
विनाशक यह सर्व द्वन्द्वों का... अमोघ उपाय प्रेम-शान्ति का।।

इसके बिना न सम्यक् होता... व्यवहार या न निश्चय होता।
न होता ज्ञान-आचरण सम्यक्... दृष्टिकोण न होता सम्यक्।।

आइन्स्टीन का हुआ योगदान... सापेक्ष-सिद्धान्त माना विज्ञान।
जिससे विज्ञान का हुआ विकास... वैश्विक मान्यता मिली विशेष।।

सदा सर्वदा सर्व स्मरणीय... सदा सर्वदा सर्व आचरणीय।
कथनीय लेखनीय वन्दनीय... 'कनक' द्वारा सदा सेवनीय।।

हे दिलदार! स्वयं को पाओ!

(विश्व के दिलदारों के लिए आह्वान!) (मेरी दृष्टि में दिलदार)

चलो दिलदार चलो... संकीर्णता दूर करो/(संकीर्ण से पार चलो)SSS
भेद-भाव दूर करो... उदार भाव धरोSSS

अपना कोई नहीं... पराया कोई नहीं
उदार जनों को... वसुधा गृह होई... चलो...
बड़ों की भक्ति करो... छोटों से नेह धरो
सभी से मैत्री करो... जीवों की रक्षा करो... चलो...
रोगी की सेवा करो... वैश्विक भाव धरो
आध्यात्मिकता युक्त... समस्त क्रिया करो... चलो...
पवित्र भाव धरो... कषाय दूर करो
सत्य व समता से... कष्टों को पार करो... चलो...
संकट आने पर... धैर्य को नहीं छोड़ो
धैर्य से संकटों को... कुचल कर चलो... चलो...
मोह व अज्ञान को... आत्म-ज्योति/(बल/शक्ति) से नाशो/(हनो)
भौतिकता से परे... आत्मिक सुख पाओ... चलो...
अनादिकाल से तो... अनन्त जन्म लिया
राग-द्वेष व मोह... अज्ञानता को पाला... चलो...

तन मन धन को... अपना रूप माना
इसके निमित्त से... अनेक पाप किया... चलो...
शोषण अत्याचार... अनाचार भी किया
भौतिक सुख हेतु... बहु अनर्थ किया... चलो...
परम सत्य जानो... आत्मा/(स्वयं) को पहिचानो
स्वयं की प्राप्ति हेतु... शोध-बोध भी करो... चलो...
आत्मिक साधना से... स्वयं की प्राप्ति करो
स्वयं की प्राप्ति हेतु... सर्व विभाव छोड़ो... चलो...

भोला मेरा बचपन

(रागः भोली मेरी माँ है...)

भोला मेरा है/(था) जीवन, सादा सीधा बचपन,
कहाँ गया है मस्त रहना, खुला-खिला जीवन। ।।टेक।।
हँसना खेलना घूमना फिरना, खाना-पीना सोना,
कहाँ गया है मेल-मिलाप, सच्चा-अच्छा जीवन। (1) भोला...
अपना-पराया किसी से नहीं, सब से निच्छल नेह (प्रेम),
अपना-पराया घर नहीं, सब ही अपना गेह। (2) भोला...
मानव क्या पशु पक्षी भी, होते थे अपना जन,
कहाँ गया वह अनपढ़ा, पाठ विश्व मैत्री जीवन। (3) भोला...
वैर-विरोध,ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट के बिना/(रहित)।
हर धर्म जाति भाषा भाषी, होते थे मेरे मीत/दोस्त। (4) भोला...
धनी-गरीब से रहित भाव, फैशन-व्यसन शून्य,
कहाँ गया वह पावन जीवन, टेन्शन से शून्य। (5) भोला...
आनन्द शून्य शिक्षा ने पहले, मेरा जीवन दूभर किया,
टेन्शन फोबिया डिप्रशन से, मेरा रस सोख लिया। (6) भोला...

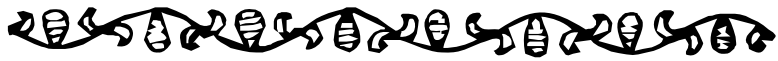

कभी कभी तो आत्महत्या भी, करने का मन भी किया,
जैसे तैसे बच गया तो, अन्य संकट आ घेरा। (7) भोला...
शादी मानो हुई बरबादी, चार पैर वाला गधा बना,
कुटुम्ब पोषण करने हेतु, गधे के समान ढ़ोना पडा। (8) भोला...
बच्चों की फिर पढ़ाई शादी, समस्या आ घिरी,
बीमारी मृत्यु आदि कारण, समस्या घनीभूत हुई। (9) भोला...
इन्हीं हेतु से धन खर्च से, कर्जा भार से दब गया,
समाज जनों के बोझ के कारण, और भी बोझ बढ़ गया। (10) भोला...
सरकार कानून रीति रिवाजों ने, बचा खुचा सब साफ किया,
जीने को तो नहीं देते हैं, मारने को जिला रहा/(जिन्दा रखा)। (11) भोला...
संसार ही इसे कहते, दुःख संचरण संसार,
दुःख निवृत्ति हेतु ही, साधु त्यागे घर-द्वार। (12) भोला...
बाल ब्रह्मचारी वैराग्य सम्पन्न, बनो जो है महा नर,
वे ही भोगे सुख-सागर, अन्य जन भोगे दुःख घोर। (13) भोला...
इसीलिए तो 'कनक' ने लिया, नियम भी अति सुन्दर,
बालक व विद्यार्थी रहूँ, जीवन बने मनोहर। (14) भोला...

माता का दूध एवं मातृ-भाषा का महत्व

(रागः- चौपाई...)

माता का दूध व माता की भाषा जीवन में जानो अति विशेषा।
तन मन भाषा की सम्वृद्धि हेतु दोनों का योगदान विशेष हेतु।। (1)

गर्भ से मातृभाषा हम सीखते जन्म से स्तनपान हम करते।
मूल सिंचन सम काम दोनों का विकास हेतु जानो दोनों का।। (2)

दूध है तन मन वृद्धिकारक इन्द्रिय शक्ति व तृप्तिकारक।
तथाहि मातृभाषा की जानो शक्ति बुद्धिवर्द्धक तृप्ति दात्री।। (3)

भौतिक दूध अमृत समान रोग प्रतिरोधक शक्ति सम्पन्न।
स्टेमसेल होती मातृ दूध में जिससे रोग न होते देह में।। (4)

अल्जाइमर तथा कैंसर रोग एनीमिया तथा हड्डी के रोग।
मिट्टी खाना व मन दुर्बल रोग न होते होता देहिक बल।। (5)

माता को न होता स्तन कैंसर स्तनपान से लाभ होता अपार।
प्रेम निकटता बढ़े विशेष दोनों को मिले अति सन्तोष।। (6)

ऐसा ही मातृभाषा से होता वैज्ञानिक शोध भी यह कहता।
अनुभव से सिद्ध भी होता मातृभाषा से ज्ञान है बढ़ता।। (7)

मस्तिष्क में होता भाषा के जोन मातृभाषा द्वारा बढ़े ये जोन।
जिससे बढ़े ज्ञान-विज्ञान निर्णय क्षमता व आत्मिक ज्ञान।। (8)

धार्मिक वृत्ति का विकास होता व्यक्तित्व निर्माण विशेष होता।
अन्य भाषा ज्ञान सरल होता अभिव्यक्ति में आनन्द आता।। (9)

हमारे पूर्वज अनेक हुए ज्ञान-विज्ञान में प्रसिद्ध हुए।
तीर्थंकर राम कृष्ण व बुद्ध अभिमन्यु आदि जग प्रसिद्ध।। (10)

राजा महाराजा चाणक्य आदि चन्द्रगुप्त मौर्य अशोक आदि।
अंग्रेजी बिना भी महान् हुए बिना बोतल का दूध भी पीये।। (11)

भारत में आज क्या हो गया सभी माताओं को भूल सा गया।
माता विहीन अनाथ हुआ मूल विहीन वृक्ष जो हुआ।। (12)

जन्मदात्री जन्मभूमि व भाषा विद्यादात्री माता तथा गो-माता।
इत्यादि माता को भूल-सा गया विदेशी धाई को अपना रहा।। (13)

इसी से विकास सही न होता पानी बिन यथा वृक्ष का होता।
अतः माताओं को करो स्वीकार 'कनकनन्दी' का यह विचार।। (14)

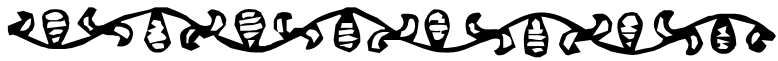

"जैन श्रमण (साधु) से प्राप्त शिक्षायें"

(तर्जः- हे गुरुवर धन्य हो तुम... दुनियाँ में रहना है तो...)

शिक्षा लो भाई! शिक्षा लो... जैन साधु से शिक्षा लो।
व्रत-समिति से शिक्षा लो... अनुप्रेक्षा से शिक्षा लो ।।ध्रु.।।

गुप्ति भावनाओं से शिक्षा लो... दशधर्मों से शिक्षा लो।
षडावश्यक से शिक्षा लो... विशेष गुणों से शिक्षा लो।।

I. पंचव्रतों से प्राप्त शिक्षायें :-

1. अहिंसाधर्म से शिक्षा लो... जीयो और जीने दो।
पर्यावरण की रक्षा करो... और विश्वशान्ति को पालो।।

2. सत्यधर्म से भी सीख लो... मन-वच-काये सत्य गहो।
हठग्राही कुतर्क मिथ्या छोड़ो... सनम्र सत्यग्राही बनो।।

3. अचौर्यधर्म से सीख लो... परवस्तु को नहीं गहो।
मिलावट भ्रष्टाचारी छोड़ो... हीनाधिक मापतोल छोड़ो।।

4. ब्रह्मचर्य से भी प्रेरणा लो... भोगों रोगों से मुक्त रहो।
परस्त्री-वैश्यारति छोड़ो... रोग पाप दुःखों से बच लो।।

5. अपरिग्रह से भी प्रेरणा लो... संग्रह शोषण नहीं करो।
दिखावा फैशनों से दूर रहो... साम्यवादी समाज बना लो।।

शक्ति अनुसार तुम गहो... अणुव्रत महाव्रत ग्रहो।
श्रमण या श्रावक तुम बनो... स्व-पर-विश्वहित करो।।

II. पंचसमितियों से प्राप्त शिक्षायें :-

जीव बचाकर तुम चलो... समिति ईर्या से शिक्षा लो।
हित-मित-प्रिय वच बोलो... समिति भाषा से शिक्षा लो।।

अहिंसक स्वास्थ्यप्रद आहार करो... एषणा समिति से शिक्षा लो।
देख-भाल-कर वस्तु रखो... आदान-निक्षेपण से शिक्षा लो।।

प्रासुक एकान्त में मल त्यागो... प्रतिष्ठापन से प्रेरणा लो।
व्रत-समिति से शिक्षा मिले... जीवन जीने की कला मिले।।

III. बारह अनुप्रेक्षाओं से प्राप्त शिक्षायें :-

अनुप्रेक्षाओं से शिक्षा ले लो... मानव चिन्तन सदा करो।
हर पहलुओं से शिक्षा ले लो... सत्य गहो समता धरो।।

उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यमय... वस्तु व्यवस्था सत्यमय।
सत्य जान कर साम्य धरो... सुख-दुःख हानि-लाभ सहा करो।।

IV. तीन गुप्तियों से प्राप्त शिक्षायें :-

तीन गुप्तियों से शिक्षा मिले... मन-वच-काय से स्थिर करो।
इसी से शक्ति प्रगट होगी... जिससे आत्मा की प्रगति होगी।।

कर्म आस्रव रुक जायेंगे... निर्जरा द्वारा कर्म नशेंगे।
संयम तप ज्ञान बढ़ेंगे... अन्त में निर्वाण पद पायेंगे।।

V. भावनाओं से प्राप्त शिक्षायें :-

भावनाओं से शिक्षा मिले हैं... शुभभाव से अशुभ छोड़ो है।
शुभ से शुद्ध प्राप्त करो है... शुद्ध से मोक्ष को वरण करो है।।

स्व-पर-विश्व हित भावना भाओ... स्वार्थ व संकीर्णता दूर भगाओ।
अहंकार ममकार चित्ते न लाओ... कषाय कल्मष दूर भगाओ।।

भाव से भाग्य निर्माण होता... भाग्य से भावी निर्माण होता।
स्वभाव का स्वयं निर्माण कर्त्ता... परिनिर्वाण का हम ही कर्त्ता।।

VI. दश धर्मों से प्राप्त शिक्षायें :-

दश धर्म हैं आत्मिक धर्म, विश्व के सत्य सनातन धर्म।
जाति पंथ राष्ट्र सीमा से परे, सुख-शान्ति व मोक्ष के धर्म।।

क्रोध-मान-माया-लोभ नाशक, सरल सहज व पावन धर्म।
परावलम्बन से रहित धर्म, जो इसे पाले उसके धर्म।।

VII. षडावश्यक क्रियाओं से प्राप्त शिक्षायें :-

कर्त्तव्य परायणता की शिक्षा मिलती, स्व-दोष निवारण की प्रेरणा देती।
गुणीजन प्रति भक्ति जगाती, गुणप्राप्ति हेतु प्रेरणा देती।।

VIII. इन्द्रियनिरोध से प्राप्त शिक्षायें :-

इन्द्रियनिरोध से शिक्षा ये मिलती, इन्द्रियलालसा से करो न वृत्ति।
इन्द्रियों को अपना दास बना लो, अन्यथा इन्द्रियों के दास बन लो।।

IX. विशेष गुणों से प्राप्त शिक्षायें :-

विशेष गुणों से शिक्षा ये मिलती, विशेषता हेतु करो प्रवृत्ति।
विशिष्ट गुणों से वैशिष्ट बनो, स्व-महत्त्व हेतु गुणी तू बनो।।

इन्हीं कारणों से पूज्य होते श्रमण, आत्म-उत्थान हेतु करते श्रम।
'कनकनन्दी' इनसे शिक्षा ही लहे, श्रमण से सिद्ध पद को चाहे।।

झाडोल- 5.4.2012 रात्रि 10:16 (महावीर जयन्ती)

सुविद्या एवं कुविद्या का स्वरूप एवं फल

(सुविद्या (ज्ञान-शिक्षा) का स्वरूप एवं सुफल तथा कुविद्या का स्वरूप एवं कुफल)

(रागः दुनियाँ में रहना है तो...)

विद्या यदि संकीर्ण या बिकाऊ होगी... सर्वोदय कारक नहीं बनेगी।
विद्या यदि उदार व निःस्वार्थ होगी... सर्वोदय के हेतुभूत विद्या बनेगी। (धत्ता)

आत्मशक्ति विकासक होती है विद्या... तोता जैसे रटन्त न होती है विद्या।
विनय विकासक होती है विद्या... विनय विनाशक होती कुविद्या।। (1)

विनय से विद्या का विकास होता... घमण्ड से विद्या का विनाश होता।
भोजन पचने से यथा बल मिलता... अपच भोजन से तथा बल घटता/(रोग मिलता)(2)

सुखदायक होती सम्यक् विद्या... कष्टदायक होती संकीर्ण विद्या।
मुक्तिदायक होती आध्यात्म विद्या... भुक्तिदायक होती भौतिक विद्या।। (3)

चारित्र निर्माणकर्ती यथार्थ शिक्षा... साक्षरी राक्षस बने वह कुशिक्षा।
तीर्थंकर निर्मात्री होती सुशिक्षा... रावण कंस निर्मात्री होती कुशिक्षा।। (4)

सनम्र सत्यग्राही होते ज्ञानी सुजन... अहंकारी हठग्राही होते मूर्ख कुजन।
योग्य बीज से यथा बनते हैं वृक्ष... नष्ट बीज से नहीं बनता वृक्ष।। (5)

गुणी-सुज्ञानी तो सर्वोदय करता... कुज्ञानी स्व-पर विनाशकारी बनता।
तीर्थंकर बुद्ध सम सुज्ञानी होते... रावण कंस सम कुज्ञानी होते।। (6)

अनुभव सहित जो ज्ञान होता... दुधारू थन सम उपकारी बनता।
अनुभव रहित जो ज्ञान होता... अज गल थन सम व्यर्थ ही बनता।। (7)

सुफलदायी होता क्रमबद्ध सुज्ञान... विपरीत फलदायी होता कुज्ञान।
स्वास्थ्यप्रद अनुपान युक्त सुखाद्य... स्वास्थ्यहर अनुपान रिक्त कुखाद्य।। (8)

आत्मविश्वास सह आचरण से युक्त ... वही ज्ञान होता है सम्यक्त्व युक्त।
तीन कोणों से युक्त जो क्षेत्र होता... वह क्षेत्र त्रिभुजाकार भी होता।। (9)

निरपेक्ष ज्ञान नहीं होता सम्यक्/(यथार्थ)... असंयुक्त रेखा से न बनता क्षेत्र।
ताना-बाना से यथा बनता वस्त्र... असंयुक्त धागों से न बनता वस्त्र।। (10)

स्व-पर उपकारी वह होता सुज्ञान... दीप सम स्व-पर वह प्रकाशवान।
ज्ञान नहीं होता जानकारी मात्र से... प्रकाश न होता दीपचित्र मात्र से।।(11)

ज्ञान है आनन्ददायी अनुभव से युक्त ... सदाचार सहित व नम्रता युक्त।
स्व-पर प्रकाशी व उपकार से युक्त... 'कनक' सदा इसी में प्रयासरत।।(12)

ओगणा, दि= 25/3/2012, रात्रि 2.17

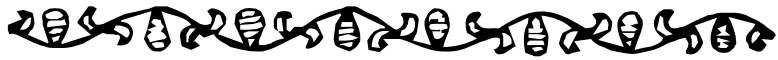

(14 वीं गीताञ्जली की प्रथम कविता)

असम्यक्-सम्यक् एवं सम्पूर्ण ज्ञान के उपाय

(रागः छोटी-छोटी गैया... झूमती चली हवा...)

जो जैसा दिखे वैसा होता भी नहीं,
दिखने सुनने में पूर्ण सत्य भी नहीं।
आकाश नीला दिखे तथा कहते,
आकाश तो अरूपी/(अमूर्तिक) सर्वज्ञ जानते ।।1।।

अल्पज्ञ परम सत्य नहीं जानता,
रागी-द्वेषी मोही तो विपरीत जानता।
स्वार्थ व कुभाव (ना) से विपरीत कहता,
श्रोता भी उसमें कुछ त्रुटि करता ।।2।।

दूर से वायुयान छोटा दिखता,
मृग-मरीचिका जलसम दिखता।
गतिशील पाँखुडी नहीं दिखती,
दूर से रेलपटरी नेरो दिखती ।।3।।

भावानुसार ध्वनि सुनाई देती,
भावानुसार वाक्य से अर्थ निष्पत्ति।
दिव्यध्वनि पशु नर देव सुनते,
स्व-स्व योग्यता से उसे जानते ।।4।।

दिखने से भी अधिक सुनना सत्य,
दिव्यध्वनि से ज्ञात अधिक सत्य।
''सुनो अन्य की करो मन की'' अपूर्ण सत्य,
आप्त अनुसार करना सम्पूर्ण सत्य ।।5।।

अल्पज्ञों को पाँचों द्रव्य दिखते नहीं,
चाक्षुष भौतिक कुछ दिखते सही।
सूक्ष्म-ध्वनि सुनना भी सम्भव नहीं,
मन द्धारा सर्वज्ञान होता भी नहीं ।।6।।

परम सत्य जानना सहज नहीं,
सर्वज्ञ ज्ञानगम्य अन्यथा नहीं।
अनेकान्त से सम्यक् ज्ञान भी होता,
स्याद्धाद से ही सम्यक् कथन होता ।।7।।

ध्यान अध्ययन परीक्षण निरीक्षण,
मनन-चिन्तन तथा प्रयोगकरण।
तर्क अनुभव तथा आप्त वचन,
इत्यादि के द्धारा होता सत्य का ज्ञान ।।8।।

सत्यज्ञान अनुसार करो आचरण,
जिससे होवेगा आत्मिक ज्ञान।
जिससे आत्मिक आनन्द मिले है,
'कनक' इसी हेतु प्रयत्नशील है ।।9।।

झाडोल (फ.) 31.3.2012 मध्याह्न - 3:01

''कलिकाल सर्वज्ञ वीरसेन स्वामी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

(आचार्य वीरसेन के गुरु-शिष्य एवं रचित ग्रन्थ)

(रागः जय हनुमान ज्ञान... चौपाई...)

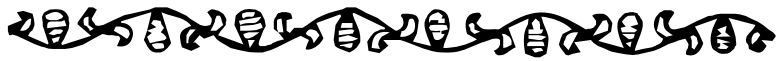

जय-जय हे वीरसेन स्वामी!... कलिकाल सर्वज्ञ हो प्रज्ञावान्।
आर्यनन्दी के हो शिष्य महान्... जिनसेन स्वामी के गुरु महान्।। (1)

संस्कृत प्राकृत के ज्ञानी महान्... सिद्धान्त व्याकरण में निष्णातवान्।
छन्द अलंकार में आप प्रवीण... नय-प्रमाण में दक्ष महान्।। (2)

महामेधावी हो प्रतिभावान्... नयचक्र संचालक चक्री महान्।
अनेकान्त सिद्धान्त महाप्रवीण... चारों अनुपयोग में दक्षवान्।। (3)

अलौकिक गणित के आप विज्ञाता... अमोघ तर्क के आप प्रणेता।
प्रश्न-उत्तर में हो महाप्राज्ञ... प्रत्युत्पन्न में आप प्रणेता।। (4)

आप हो गमकवादी तर्कवीर... लेखक टीकाकार समीक्षासूर्य।
अन्तःप्राज्ञ हो सत्यगवेषी... निष्पक्षज्ञानी आत्म-अन्वेषी।। (5)

धवलकीर्ति सम ''धवला'' टीका... श्लोक बहत्तर हजार प्रमीता।
साढ़े छब्बीस हजार श्लोक प्रमाण... ''जयधवल'' की टीका का मान।।(6)

''महाबन्ध'' के तीस हजार मान... संस्कृत-प्राकृत मणिकांचन।
गद्यपद्य समन्वय व्याख्यान... आगम तार्किक नय-प्रमाण।। (7)

''सिद्ध-भूपद्धति'' गणित ग्रन्थ... आपके द्धारा हुआ ग्रन्थित।
''तिलोयपण्णत्ति'' के सम्पादनकर्त्ता... आप हो महान् सिद्धान्तवेत्ता।।(8)

आप के महान् ''कवि चक्रवर्ती''... ''पुस्तक-शिष्य'' हो धवलकीर्ति।
''कलिकाल सर्वज्ञ'' आप महर्षि... आपकी लेखनी हृदयस्पर्शी।। (9)

आपके शिष्य जिनसेन स्वामी... शेष टीकाकार कवि व वाग्मी।
चालीस हजार श्लोक प्रमेय... ''जयधवल'' टीका वाङ्मय।। (10)

''पार्श्वाभ्युदय'' के आप प्रणेता... ''आदिपुराण'' के आद्य प्रणेता।
शेष रचनाचार आपके शिष्य... गुणभद्र स्वामी प्रधान-शिष्य।। (11)

''उत्तरपुराण'' के रचनाकार... ''आत्मानुशासन'' के ग्रन्थकार।
''जिनदत्तचरित्र'' के आप प्रणेता... ''लोकसेन आचार्य'' के आप विधाता।।(12)

ऐसे महान् आचार्य हुए... अनेक ग्रन्थ भी ग्रन्थित हुए।
जिससे ज्ञान-विज्ञान मिले... ''कनकनन्दी'' भी उसे ही ध्यावे।। (13)

झाड़ोल (फ.) 12.5.2012 रात्रि 11.16

(यह कविता मुनिश्री सुविज्ञसागर जी के अनुरोध से बनी)

(शिक्षा संबंधी रहस्यवादी कविता)

योग्य एवं अयोग्य शिष्य-गुरु-शिक्षा

(रागः कसमे वादे...)

तू ही तेरा शिष्य गुरु... तू ही तेरी शिक्षा/(विद्या, ज्ञान) रेऽऽ ।
सीखने के भाव शिष्य... रुचि प्रयास तत्परऽऽ ।। (ध्रुव पद)

अन्तःप्रज्ञा तेरा गुरु... हिताहित विचारऽऽ ।
सत्यग्राही गुणग्राही... सत्यनिष्ठ आचारऽऽ ।। (1)

शिक्षा तेरी निज प्राप्ति... सत्य शिव सुन्दरऽऽ ।
इसी हेतु शिष्य गुरु... बाह्य शिक्षा प्रकारऽऽ ।। (2)

यदि ऐसा नहीं होता... शिक्षा सर्व बेकारऽऽ ।
शिष्य यदि योग्य नाहीं... श्री गुरु ज्ञान बेकारऽऽ ।। (3)

शैलघन भग्नघट... अहि/(सर्प) चालनी महिषा/(भैंसा)ऽऽ ।
मेढ़ा जोंक शुक मिट्टी... मशक सम जो शिष्यऽऽ ।। (4)

नहीं होते योग्य शिष्य... शिक्षा हेतु विशेषऽऽ ।
गाय हंस बीज दीप... सम होते योग्य शिष्यऽऽ ।। (5)

गाय सम हितकारी... हंस सम विवेकीऽऽ ।
बीज से विशाल वृक्ष... दीपक से आलोकऽऽ ।। (6)

निश्चय से आत्मा ही है... शिष्य गुरु शिक्षा भीऽऽ
इसी हेतु व्यवहार है... शिष्य गुरु शिक्षा भीऽऽ ।। (7)

अन्य सब बाह्य रूप... धर्म किंवा लौकिकऽऽ ।
अयोग्य व अहित भी... बोध किया कनकऽऽ ।। (8)

झाड़ोल (फ.) 27.4.2012, रात्रि 10.50

(साध्वी सुनिधि मती की भावना से यह कविता बनी)

(14 नवम्बर, बाल दिवस के उपलक्ष्य में)

बाल कविता

(रागः चन्दा मामा...)

गुरुदेव हो! नमस्ते...[2], हम बनेंगे अच्छे/(सच्चे)[2]।
पानी पीयें छानकर, जीव बचायें जानकर।।

सब से हम प्रेम करें, लड़ाई झगड़ा नहीं करे।
झूठ हम नहीं बोलें, सच्चाई पर हम चलें।।

बडों का सम्मान करें, छोटों को हम प्यार करें।
प्रभु को याद करें, ईर्ष्या-द्वेष नहीं करें।।

मांस मछली नहीं खायेंगे, सब जीवों की रक्षा करें।
मद्यपान नहीं करें, अहंकार से दूर रहें।।

धूम्रपान भी नहीं करे, तम्बाखू सेवन नहीं करे।
फैशन हम नहीं करे, सादा जीवन हम जीयें।

जुआ हम नहीं खेले, पुरुषार्थ से काम करें।।

वेश्यागमन नहीं करे, एड्स रोग से बच जाये।
चोरी हम नहीं करे, नैतिक हम सदा रहें।।

उच्च विचार हम करें, विश्व नागरिक हम बनें।
आधुनिक हम भी बनें, धर्म-विज्ञान हम जाने।।

रुढ़िवादिता न माने, प्रगतिशील हम बनें।
फैशन-व्यसन नहीं करे, आदर्श जीवन हम जीये।।

भ्रष्टाचार से दूर रहें, राष्ट्रीय प्रेम हम पाले।
पर्यावरण रक्षा करें, स्वस्थ्य जीवन हम जीये।।

गुरुवरों का सम्मान करें, आध्यात्म ज्ञान हम पाये।
गुरुवरों को आहार दे, उनकी सेवा हम करें।।

खेल-व्यायाम हम करें, योग प्राणायाम हम करें।
ज्ञानार्जन हम करें, हर जीवों से शिक्षा ले।।

तोता रटन्त नहीं बनें, सत्य-तथ्य ज्ञान करें।
प्रकृति प्रेमी हम बनें, उनसे हम शिक्षा ले।।

आध्यात्म प्रेमी हम बनें, साधु बनें ध्यान करें।
सर्वज्ञानी हम बनें, अनन्त सुखी हम बनें।।

सर्वोदय के विभिन्न ज्ञाता-प्रवक्ता एवं कार्यकर्त्ता

(राग :- नरेन्द्र राग...)

सर्वोदय के हुए विविध प्रवक्ता... प्राचीन काल से अभी तक के।
विभिन्न क्षेत्र व काल खण्ड के... उनका योगदान बहुत/(बहुविध) हुए।।(1)

आदि तीर्थंकर 'ऋषभदेव'... प्रजाहित हेतु षट्कर्म कहा।
असि मसि कृषि वाणिज्य... शिल्प सेवा का उपदेश दिया।। (2)

ऋषभदेव से पहले भी कुछ... ''कुलंकर-मनु'' भी चौदह हुए।
भोगभूमि के आर्य के बाद... दुःखित प्रजा का उपकार किये।। (3)

भोगभूमि के 'आर्य' लोग तो... चौसठ कला से सहित थे।
अक्षर चित्र गणित शिल्प व... संगीत कला में निपुण थे।। (4)

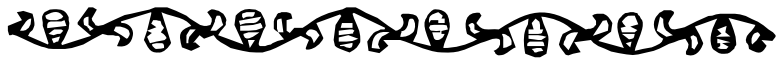

इनका यह ज्ञान था स्वाभाविक... पूर्व कर्म संस्कार से सहज था।
भोगभूमि के अन्त तक यह ज्ञान... धीरे-धीरे लोप होता गया।। (5)

कर्मभूमि के प्रारम्भ पहले तथा... भोगभूमि के अन्तकाल में।
पुण्यकर्मजन्य संस्कारहीन से... ज्ञानहीन होता गया अन्त में।। (6)

जिससे वे सब संत्रस्त हुए... उसी काल की समस्या से।
समस्याओं के समाधान हुए... उसी काल के मनुओं से।। (7)

ग्रहों का ज्ञान 'प्रतिश्रुति' ने दिया... तारों का ज्ञान 'सन्मति' मनु ने।
पशुपालन 'क्षेमंकर' ने सिखाया... पशु से सुरक्षा 'क्षेमंधर' ने।। (8)

सीमा निर्धारक 'सीमंकर' हुए... कल्पवृक्षों की सीमाएँ बान्धी।
सीमा चिह्नित 'सीमन्धर' ने किया... कलह निवारण हेतु ये किया।। (9)

पशु सवारी के हुए उपदेशक... 'विमलवाहन' नामक कुलंकर।
सन्तान को बताने वाले हुए... 'चक्षुष्मान' नामक कुलंकर।। (10)

आशीर्वाद उपदेशक 'यशस्वान' हुए... चन्द्रदर्शक 'अभिचन्द्र' हुए।
जन आल्हादक 'चन्द्राभ' हुए... नौका उपदेशक 'मरुदेव' हुए।। (11)

'प्रसेनजित' हुए जरायु शोधक... नाभिकर्तक हुए 'नाभिराय'।
दोष निवारक व दण्ड विधायक... हुए वे कुलंकर आद्यप्रवर्तक।। (12)

कुलंकर अनन्तर आदिनाथ हुए... नाभिराय के जो पुत्र महान्।
सर्वोदय के श्रेष्ठतम प्रवक्ता... लौकिक-आध्यात्मिक दोनों निदान।।(13)

जीवन निर्माण से निर्वाण तक... समस्त विधा का किया उपदेश।
रत्नत्रयरूपी मोक्षमार्ग द्वारा... गुणस्थान-अपेक्षा किया निर्देश।। (14)

उनके शत पुत्र दो पुत्रियाँ हुई... जिनसे अंकाक्षर विधाएँ हुई।
राजनीति से धर्मनीति तक... अनेक विद्यायें/(विधाएँ) प्रारम्भ हुई।।(15)

तथाहि और भी तेईस तीर्थंकर... गणधर आचार्य पाठक हुए।
साधु महात्मा तथा गौतम बुद्ध... लेखक चिन्तक ऋषि मुनि भी हुए।।(16)

रामकृष्ण व्यास याज्ञवल्क्य ऋषि... वाल्मिकि कणाद कपिल हुए।
चरक सुश्रुत वाक् भट्टाचार्य... पतञ्जलि अष्टावक्र भी हुए।। (17)

विदेशों में भी हुए दार्शनिक... सुकरात पाइथागोरस प्लेटो।
अरस्तु कन्फ्यूशियस ईसा मसीह... लोयेत्से से लेकर कार्ल-मार्क्स।।(18)

तथाहि राजनेता अनेक हुए... देश विदेशों में गुणी महान्।
वाशिंगटन व अब्राहम लिंकन... लाल बाल पाल गाँधी महान्।। (19)

नेताजी सुभाष विनोबा भावे... भगतसिंह व चन्द्रशेखर।
नेल्सन मण्डेला मार्टिन लूथर (किंग)... बनार्ड शॉ रस्किन टालस्टाय।।(20)

सेवा (क्षेत्र) में नाईटिंगल मदर टेरेसा... लॉटरी व लायन्स क्लब।
रेडक्रॉस या एम्बुलेन्स तथा... यूनिसेफ नारायण (सेवा) संस्था।। (21)

संयुक्त राष्ट्र संघ पर्यावरण सुरक्षा... मानवाधिकार पशुरक्षा संस्था।
विश्वधर्म संसद एन.सी.सी संस्था... धर्मार्थ संस्था से होता ये काम।।(22)

वैज्ञानिक लेखक कवि चिन्तक आदि... समाजसेवक जन करते काम।
'कनकनन्दी' भी सदा प्रयासरत... शिष्य-भक्तों के द्वारा करते काम।।(23)

ओगणा, 22.2.2012, रात्रि 3.42

सर्वोदय भजनीय - परतन्त्रता त्यजनीय

(बहुभाषीय - बहुरागीय सर्वोदयी गीत)

सतत स्वात्मा स्मरणीय... नित्य सत्कर्म करणीय...
सतत गुण वरणीय... दुर्गुण सदा त्यजनीय...

वैभाविक गुण त्यजनीय... आत्म स्वरूपे रमणीय...
उदार भाव करणीय... वैश्विक कुटुम्ब भावनीय...

अन्धश्रद्धा त्यजनीय... सत्य श्रद्धान/(विश्वास) भजनीय...
मिथ्याज्ञान त्यजनीय... सम्यक् ज्ञान ग्रहणीय...

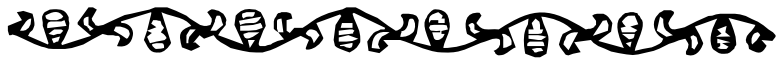

मिथ्या चारित्र त्यजनीय... सदाचरण पालनीय...
क्षमा धर्म धारणीय... क्रोध भाव त्यजनीय...

मृदु भाव वरणीय... अहंभाव/(अहंकार) त्यजनीय...
आर्जव धर्म पालनीय... कुटिल भाव त्यजनीय...

सत्य सदा धारणीय... असत्य सदा वर्जनीय...
शुचि भाव वरणीय... लोभ भाव त्यजनीय...

संयम धर्म पालनीय... प्रमाद भाव वर्जनीय...
इच्छा निरोध करणीय... तप धर्म पालनीय...

परिग्रह त्यजनीय... त्याग धर्म पालनीय...
मैथुन भाव त्यजनीय... ब्रह्मस्वरूपे रमणीय...

संकीर्णता त्यजनीय... वैश्विक भाव भजनीय...
परतन्त्रता त्यजनीय... सर्वोदय सेवनीय...

सच्चिदानन्दे रमणीय... सर्व विभाव त्यजनीय...
''कनक'' द्धारा भावनीय... स्वात्मोपलब्धि करणीय...

ओगणा, 21.2.2012, रात्रि 3.38 के बाद 4.38 तक, ब्रह्ममुहूर्त, महाशिवरात्रि

पावन भावना एवं व्यवहार

(रागः अच्छा सिला दिया...)

''सत्यमेव जयते'' का गान गायेंगे, सदाचरण को सदा पालेंगे।
''परस्पर उपग्रहो'' काम करेंगे, वैर-विरोध ईर्ष्या नहीं करेंगे।। (ध्रुवपद)।।

''अहिंसा परमोधर्म'' हम पालेंगे, पर्यावरण सुरक्षा हम करेंगे।
''हित-मित-प्रिय'' हम बोलेंगे, अन्यथा मौन हम पालेंगे।। (1)

''जीओ और जीने दो'' काम करेंगे, वैश्विक शान्ति हम लायेंगे।
''विद्या ददाति विनय'' हम पढेंगे, विनम्र भाव से हम बढेंगे।। (2)

''यथा बोया तथा पाया'' हम मानेंगे, पुरुषार्थ से हम भाग्य पायेंगे।
''आत्मदीप परदीप'' हम बनेंगे, तम विनाश/(अन्धेरा नाश) हेतु ज्योति बनेंगे।।(3)

''लोभ पाप का बाप'' हम मानेंगे, शोषण भ्रष्टाचार नहीं करेंगे।
''सन्तोष परम सुख'' हम मानेंगे, भोग लालसा तृष्णा नहीं करेंगे।। (4)

''भाव से भाग्य निर्माण'' हम करेंगे, स्वर्ग-नरक-मोक्ष हम मानेंगे,
''वस्तु स्वभाव धर्म'' हम मानेंगे, समता भाव से हम जीयेंगे।। (5)

''विश्वगुरुत्व अनेकान्त'' को मानेंगे, उदार-सहिष्णु हम बनेंगे।
''स्याद्वादमयी वाणी'' बोलेंगे, पूर्वाग्रह-दुराग्रह हम त्यजेंगे।। (6)

गुरु गुणी जनों को हम मानेंगे, अनक्षरी ज्ञान (पाठ) हम पढेंगे।
तोतारटन्त पाठ नहीं पढेंगे, वाचन-पाचन-अनुभव करेंगे।। (7)

सत्य समता शान्ति हम पायेंगे, आदर्शमय जीवन हम जीयेंगे।
''नहि ज्ञानेन सदृश्यमिह विद्यते'', आध्यात्म ज्ञानमय हम बनेंगे।। (8)

''प्रमत्तभावमय हिंसा'' छोड़ेंगे, आध्यात्मिक विकास हम करेंगे।
ढोंग-पाखण्ड आडम्बर त्यजेंगे, सरल-सहज-पावन बनेंगे।। (9)

सात्विक भोजन हम करेंगे, फैशन-व्यसन नहीं करेंगे।
सनम्रसत्यग्राही हम बनेंगे, अन्धानुकरण नहीं करेंगे।। (10)

स्व-पर उपकारी हम बनेंगे, विश्वमैत्री भाव हम धरेंगे।
उदार पवित्र भाव हम धरेंगे, 'कनक' की भावना मोक्ष वरेंगे।। (11)

खाखड़ 21.5.2012, रात्रि 12.14 से 3.26

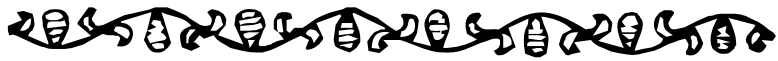

बहुरागीय गीत

"करणीय एवं त्यजनीय"

(शान्तिप्रद भजनीय दुःखप्रद त्यजनीय)

(तर्जः इक प्यार का नगमा है... चुपके-चुपके रात दिन...)

शुभ भावना करणीयम्... अशुभ भाव त्यजनीयम्।
सतत आत्म चिन्तनीयम्... स्व-दोष गुण स्मरणीयम् ।।1।।

दोष समूह त्यजनीयम्... सुगुण गण/(सर्व) भजनीयम्।
हेय-उपादेय चिन्तनीयम्... उत्तम गुण वर्द्धनीयम् ।।2।।

राग-द्वेष-मोह त्यजनीयम्... दुःख उत्पादक अतः हेय।
हेय सर्व दोष प्रद (म्)... सर्व उपादेय (है) गुण प्रद (म्) ।।3।।

शान्ति कारक गुणज्ञेयम्... अशान्ति कारक दोष ज्ञेयम्।
स्व-पर हितकारी उपादेय... इससे विपरीत सर्व हेय ।।4।।

सत्य समता उपादेय... इससे विपरीत सर्व हेय।
आत्म-उत्थानक गुणज्ञेय... आत्म विनाशक दोष हेय ।।5।।

ईर्ष्या तृष्णा त्यजनीय... मलीन भाव वर्जनीय।
मद-मत्सर त्यजनीय... संक्लेश द्वन्द वर्जनीय ।।6।।

सरल सहज क्षमाभाव... धैर्य संयम मृदुभाव।
दया सेवा करणीय... उदार सहिष्णु वरणीय ।।7।।

ज्ञानानन्द वरणीय... आत्म भावे रमणीय।
'कनक' द्वारा भावनीय... पावन भाव पालनीय ।।8।।

झाडोल (फ.) 12.4.2012 रात्रि- 3.10 से 4.23

'सुखप्रद-स्वास्थ्यकर जीवन के नियम'

(धार्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से)

(तर्जः चंदा मामा दूर के... चौपाई...)

मानव जनम अनमोल है, इसे धन से न तोल है।
दौलत तो है जड़ वस्तु, तू तो परमात्म तुल्य है ।।ध्रु.।।

भौतिक शरीर निर्वाह हेतु, जो है निम्नतम वस्तु।
न्याय से उपार्जन तू करले, अधिक से तृष्णा छोड़ ले ।।1।।

धन से ही कोई सुखी न होता, धर्म तो सदा ही कहता।
अनुसंधान भी अभी कहता, चार फीसदी सुख धन से पाता ।।2।।

चार फीसदी सुख शादी से पाता, विज्ञान अभी कहता।
पैंतीसी फीसदी सुख व्यक्तित्व देता, व्यक्तित्व गुणों से मिलता ।।3।।

स्वस्थ्य व गुणी तू बनना, सुखी व दीर्घजीवी होना।
तेरे ही भाग्य का तू निर्माता, यह कभी तू न भूलना ।।4।।

वैज्ञानिक खोज अभी बताती, तनाव से आयु भी घटती।
पांच वर्ष आयु घट जाती, सफलता शान्ति भी मिटती ।।5।।

इससे विपरीत ध्यान योग से, तनाव रोग के नाश होने से।
पांच वर्ष की आयु बढ़ती, प्रसन्नता व शान्ति बढ़ती ।।6।।

ऐसा ही स्वाध्याय मनन चिन्तन से, मानसिक व्यायाम काम होने से।
अलजाइमर्स रोग भी न होता, पांच वर्ष आयु विकास होता ।।7।।

ऐसा ही तन व्यायाम से होता, पांच वर्ष आयु विकास होता।
हित मित सात्विक भोजन द्वारा, सन्तुलित स्वास्थ्य जीवन होता ।।8।।

धूम्रपान है अतिहानिकारक, स्वास्थ्य तथाहि आयुनाशक।
कैंसर आदि रोग कारक, पन्द्रह वर्ष आयु नाशक ।।9।।

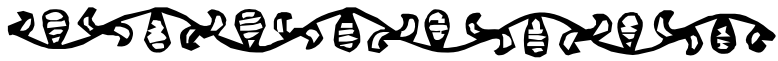

प्रदूषण रहित वातावरण, सज्जन संगति हितकारक।
दया परोपकार सेवा दान, उच्चविचार व सादा जीवन ।।10।।

सुख शान्ति के लिए ये कारक, धार्मिक आयुर्वेद मान्य।
अभी विज्ञान में (भी) हुआ मान्य, कनक द्वारा भी है मान्य ।।11।।

झाडोल (फ.) 11.4.2012 मध्याह्न - 5.02

सभी के लिए नैतिकाचार
धार्मिक या अधार्मिक सबके लिए करणीय

(सुख प्राप्ति के लिए धार्मिक या अधार्मिक के लिए करणीय)

(तर्जः परदेशियों से न अखियाँ मिलाना...)

मानव चाहो यदि सुख है पाना, नैतिक मार्ग पे सदा ही चलना।
किसी भी धर्म पंथ मानो या न मानो, नैतिक सदाचार सदा ही पालना।। (टेक)

क्रोध मान माया लोभ न करना...[2], हित मित प्रिय वचन बोलना...[2]।
हत्या व चोरी ठगी जूआ को त्यागना, पराई स्त्री से भोग न करना ।।1।।

नशीली वस्तुओं का सेवन त्यागना...[2], मछली मांस व अण्डा को छोडना...[2]।
निरीह पशुओं की हत्या न करना, पर्यावरण की रक्षा भी करना ।।2।।

विनम्र सदाचारी गुणग्राही बनना..[2], सत्य-तथ्य को स्वीकार करना...[2]।
रोगी गरीबों की सहायता करना, माता-पिता की सेवा भी करना ।।3।।

मिलावट शोषण कभी न करना...[2], भ्रष्टाचारी व आतंकी न बनना...[2]।
दीन-हीनों को कभी न सताना, विधर्मियों से भी द्रोह न करना ।।4।।

अधर्मी विधर्मी कुधर्मी जनों से...[2], सुख व शान्तिमय जीवन बिताना...[2]।
किसी भी भाषा-भाषी राष्ट्रों के जनों से, वैरत्व भाव भी कभी न रखना ।।5।।

सरल सहज व प्रसन्न रहना...[2], सुख व शान्तिमय जीवन बिताना...[2]।
इसलिए तो सदा नैतिक रहना, उक्त विषयों को पालन करना ।।6।।

क्रिया की प्रतिक्रिया होती है सभी में...[2], सुख हेतु सुख अन्य को देना...[2]।
विषमता से ही विषम उपजे हैं, समता भाव से समता को पाना ।।7।।

जल व वायु सम ये सब नियम...[2], सुख व शान्ति से जीने के नियम...[2]।
देशी व विदेशी राजा व रंक के, धर्मी व अधर्मी सभी के हित के ।।8।।

विभिन्न धर्म व विज्ञान पढ़ के...[2], राजनीति तथा कानून पढ़ के...[2]।
नीति-नियम व स्व-अनुभव से, सर्व हित हेतु ''कनक'' रचा ये ।।9।।

झाडोल (फलासिया) 30.3.2012, मध्याह्न 2.21

''सुभाव-कुभाव का स्वरूप एवं फल''

(तर्जः दुनियाँ में रहना है तो...)

भावना करो जिया! भावना करो, कुभाव छोड़ कर सुभाव करो।
इसके हेतु धन नहीं चाहिये, इसके लिये जन नहीं चाहिये ।।1।।

धन जन श्रम बिना सुभाव होता, धन जन श्रम बिना कुभाव होता।
सुभाव से अनेक सुफल मिले, कुभाव से अनेक कुफल मिले ।।2।।

राग-द्वेष मोह ईर्ष्या घृणा कुभाव, पाप रोग दुःखादि जनक भाव।
सत्य निष्ठा समता शान्ति सुभाव, पुण्य आरोग्य सुख जनक भाव ।।3।।

कुभाव से टेंशन फोबिया होते, शरीरदर्द व सिरदर्द भी होते।
व्यग्रता कुंठा दुश्चिन्ता अशान्ति होती, विभिन्न रोग व आत्महत्या भी होती।।4।।

सुभाव से प्रसन्नता शान्ति मिलती, तन-मन आत्मा की बीमारी जाती।
प्रेम संगठन सहयोग बढ़ते, इह-परलोक सुखमय बनते ।।5।।

तथापि जिया! क्यों कुभाव करो, अनावश्यक अनेक दुःखों को वरो।
दृढ़ संकल्प से जिया! सुभाव करो, अनेक सुखद सुफल वरो ।।6।।

सुभाव से तीर्थंकर सिद्ध बनते, कुभाव से रावण कंस बनते।
भाव से भावी भाग्य निर्माण होते, भाव से ही स्वर्ग व निर्वाण पाते ।।7।।

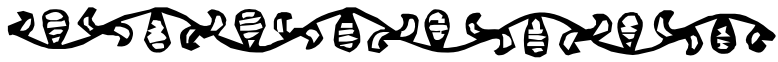

अतएव सतत सुभाव करो, कुभाव को सतत दूर ही करो।
इसी हेतु ''कनक'' प्रयासरत, सर्व जीव करें यह प्रयत्न ।।8।।
ओगणा- 25.3.2012 प्रातः 6.13

''अनुभवज्ञानी- कृषक की आत्मकथा''

(प्रायोगिक भौतिक-ऋतुविज्ञान आदि से युक्त होता है कृषक)

कृषक मेरा नाम है, कृषि करना काम है।
परम्परा व अनुभव से, चलता मेरा काम है।। (ध्रुवपद)।।

प्रकृति माता पाठशाला है, धरती प्रयोगशाला,
ऋतु मेरी समयसारणी, सतत प्रयोगवाला।
भूविज्ञान व भौतिकशास्त्र को, कृषि में प्रयोगवाला,
रसायन प्रकृति विज्ञान जीवन्त प्रयोगवाला ।। (1)...

ऋतु विज्ञान का प्रायोगिक ज्ञान, मेरी समयसारणी।
ऋतु के गुणदोष अनुसार, चलाऊँ कार्य प्रणाली।
वनस्पतिज्ञान कीटविज्ञान, तथा ही प्राणी विज्ञान।
मानसुनज्ञान भविष्य ज्ञान, मेरा है प्रयोगज्ञान।। (2)...

कर्मभूमि के प्रारंभ काल से, प्रयोग मेरा चल ही रहा।
सत्य त्रैतया द्वापर कलिकाल का, में भी साक्षी जो रहा।
पूर्व कालों में मेरा काम, प्राकृतिक अधिक रहा।
जिससे मेरा उत्पादन अधिक पौष्टिक सुस्वाद रहा।। (3)...

कलिकाल या कलयुग में, कलिप्रवेश भी कृषि में हुआ।
रसायन खाद कीटनाशकों से, कृषि उपज भी विषाक्त हुआ।

इसी से जमीन बंजर हुई, मृदाजलवायु दूषित हुई।
कृषि उपकारी कीट-पतंग, पशु-पक्षी की मृत्यु भी हुई ।। (4)...

अनाज फल सब्जी आदि की, गुणवत्ता भी विनाश हुई।
पौष्टिकता व औषधीयगुण रस, सुगन्धी विकृत हुई।

जिस से भोक्ता को तृप्ति न होती, नहीं मिलती है सही शक्ति।
शारीरिक मानसिक दुर्बलता आती, क्षीण होती रोगरोधक शक्ति।।(5)...

जिससे अनेक रोग होते हैं, जिससे होती समस्या भारी।
प्रकृति विरोध काम होने से, उत्पन्न हुई है समस्या सारी।

प्रकृति पूजारी मैं कृषक, प्रकृति मेरी पूज्यामाता।
मेरी सेवा से मेरा पोषण, करती रहती प्रकृति माता।। (6)...

दुग्धपान सम दोहन योग्या, प्रकृति का न करो शोषण।
अन्यथा माता क्षुब्ध होकर, करेगी मानव का शोषण।

मैं हूँ कृषक अनुभवी ज्ञानी, सबका मैं हूँ अन्नदाता।
तथापि मुझे गंवार माने, साक्षरमूर्ख शोषककर्त्ता।। (7)...

यदि मैं अन्न न हूँ, बन जायेंगे सब निराहारी।
नेता अभिनेता सेठ साहुकार, साक्षरी हो या निरक्षरी।

मैं अन्नदाता माता के समान, सब का मैं हूँ पालनहार।
मेरा शोषण अनादर कभी, नहीं करो है नर पामर।। (8)...

मेरी आत्मकथा कनकनन्दी ने कविता से किया उजागर।
इसी से मानव कृतज्ञ बने, अन्नदाता व प्रकृति पर।।

कृषक मेरा नाम रे, कृषि करना काम है,
परम्परा व अनुभव से, चलता मेरा काम है।। (9)...

खाखड़ 23.5.2012, रात्रि 11.30

"सेवा का व्यापक स्वरूप एवं फल"

(रागः छुप गया कोई रे...)

- सेवा धर्म महान् है... पापी नहीं करता।
  जीवन्त अहिंसा धर्म... सेवा रूप होता ।।ध्रु.।।

- सेवा तो परमो धर्म... हर धर्म बताता।
  जैनधर्म इसे तो... वैयावृत्ति बताता।।

  आहार औषधि ज्ञान... अभयदान रूप है।
  उपकरण दान तथा... वसतिका दान है।। (1)

- पात्रदान सहित व... अनुकम्पा/(दयादत्ति) रूप भी।
  दीन-हीन दरिद्र व... रोगी विकलांग की।।

  दशविध साधुओं की... वैयावृत्ति करना।
  उपसर्ग परीषह... रोग दूर करना।। (2)

- शरीर मर्दन द्वारा... श्रम दूर करना।
  विहार के समय में... व्यवस्थादि करना।।

  यह है वात्सल्य धर्म... भक्ति पूजा आराधन।
  अन्तरंग तप यह... मान-लोभ मर्दन।। (3)

- इसी से स्व-पर का... होता महोपकार।
  सातिशय पुण्य होता... बनें तीर्थंकर।।

  निरोग शरीर मिले... बने बलशाली।
  मुनि बन कर प्राप्त... करे मोक्षपुरी।। (4)

- मिथ्यादृष्टि यदि करे... दान सेवा आदि।
  भोग भू आर्य बने... पाये स्वर्ग भूमि।।

  भव्य यदि होता वह... बने सम्यग्दृष्टि।
  साधना से सिद्धि मिले... पाये मोक्षभूमि।। (5)

- ऐसा महा सेवा धर्म... भाग्यशाली करता।
  पूजक से पूज्य बने... आत्म/(मोक्ष) सुख पाता।।
  सेवा नहीं दीन वृत्ति... सेवा नहीं चाकरी।
  सेवा नहीं बाह्य क्रिया... सेवक न भिखारी।। (6)

- सेवा का महा आदर्श... तीर्थंकर होते।
  पार्श्वनाथ जीवन्धर... सुग्रीवादि होते।।
  ईसा मसीह टेरेसा... नाइटेंगल आप्टे।
  गाँधी विनोबा सुभाष... दयामयी माते।। (7)

- गाय भैंसा नदी वृक्ष... बादल व प्रकृति।
  धरती अग्नि वायु... सेवा करे प्रभृति।।
  अतएव मानव तू... सदा सेवा करना।
  सेवा से तू स्व-पर को... सदा सुखी बनाना।। (8)

- सेवा से क्रूर शत्रु (भी)... नम्र बन जाते।
  पाप नशे पुण्य मिले... अन्ते मोक्ष मिले।।
  कनक (नन्दी) भावना भाये... सेवा धर्म पाले।
  व्यवहार निश्चय से... यथायोग्य पाले।। (9)

खाखड़- 25.5.2012, रात्रि 10.21
(श्रुतपञ्चमी, शनिवार दि= 26.5.2012)

भाव से पुण्य-पाप-मोक्ष

(भाव से भाग्य भविष्य एवं निर्वाण)

(रागः उड गया पंछी रे...)

भाव करो भाव करो, भाव ही महान् है।
भाव से ही पुण्य-पाप, भाव से निर्वाण है।। (धत्ता)

शुभाशुभ शुद्ध रूप, भाव त्रय विध है।
शुभ से अशुभ त्यागो, अन्ते पाओ शुद्ध है।।

अशुभ अन्ध-विश्वास, क्रोध मान माया है।
लोक काम विकार व, फैशन-व्यसन है।।... (1)

ईर्ष्या तृष्णा घृणा व, तनाव कलह है।
वैर विरोध निन्दा, प्रमाद आलस्य है।।

इसे त्याग करने का, प्रयत्न है शुभ भाव।
उदार वात्सल्य प्रेम, दान दया सेवा भाव।।... (2)

सहिष्णु सन्तोष वृत्ति, क्षमा मादर्व आर्जव।
सरल सहज भाव, स्वाध्याय आत्म चिन्तन/(तत्त्व)।।

इसी से शुभ आस्रव, होता पाप निरोध।
तनाव ईर्ष्या विद्वेष, विनाश होता दुर्भाव।।... (3)

शरीर मन निरोग, होता आत्मिक विकास।
जिससे उत्तरोत्तर, पुण्य वृद्धि सविशेष।।

मानसिक होती शुद्धि, सुध्यान की वृद्धि/(विशुद्धि)
शुद्धि में होती सम्वृद्धि, जिससे मिलती सिद्धि।।.. (4)

सिद्धि में अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख निधान।
जिसके लिए 'कनक', करता है आत्मध्यान/भाव करो भाव।।... (5)

खाखड़ 26.5.2012, रात्रि 11.18 (श्रुतपंचमी)

''शान्ति के उपाय : शान्ति सन्देश''

(रागः छुप गया कोई रे...)

- मन्द-मन्द बयार है... बहती चली जा।
  मेरा सन्देश है... विश्व को कहे जा ।।ध्रु.।।

- शान्ति न मिलती है... सत्ता व सम्पत्ति से।
  शान्ति तो मिलती है... आत्मा की विशुद्धि से/(सत्य व समता से)।।
  शान्ति है आत्म-भाव... जड़/(बाह्य) में नहीं होती।
  जड़ तो अचेतन... चेतना शून्य होती।। (1)

- शान्ति की प्राप्ति हेतु... चक्री भी राज्य त्यागे।
  शान्ति कुन्थु अरह... तीनों ही राज्य त्यागे।।
  बाहुबली भी त्यागा... विजय अनन्तर।
  चक्री भरत त्यागा... भोग के अनन्तर।। (2)

- संकल्प-विकल्प व... संक्लेश त्याग से।
  शान्ति तो मिलती है... आत्मविशुद्धि से।।
  समता सहजता... सन्तुष्टि भाव से।
  मन की स्थिरता से... आत्मलीनता से।। (3)

- यह परम रहसय... आध्यात्म सार है/(आध्यात्म रहस्य का...परम सार है)।
  'कनक' इसी हेतु... त्यागा संसार है।।
  मन्द-मन्द बयार है... बहती चली जा।
  मेरा सन्देश है... विश्व को कहे जा।। (4)

खाखड़- 26.5.2012, रात्रि 1.59 (श्रुतपञ्चमी)

(अन्तर्राष्ट्रीय परिवार दिवस पर विशेष)

परिवार रूपी वृक्ष का स्वरूप

(भारतीय परिवार व्यवस्था का व्यापक स्वरूप)

(रागः माईन-माईन मुण्डेर पे तेरे...)

परिवार है वृक्ष के समान, जिसके मूल है माता।

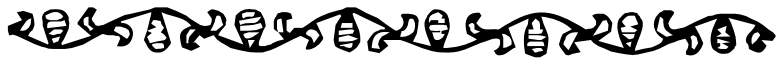

स्कन्द जिसके होते हैं पिता, शाखायें सगा व सखा।
आर्य संस्कृति की जय... भारतीय संस्कृति की जय ।।ध्रु.।।

फल-फूल-बीज होते हैं बच्चे, पत्ते है भोजनशाला।
पशु-पक्षी तथा कीट के समान, होते हैं अतिथिवाला।

धरती के सम होता है घर, समाज जल व मिट्टी।
त्याग सेवा व परोपकार, परिवार व वृक्ष की वृत्ति।
आर्य संस्कृति की जय... भारतीय संस्कृति की जय।। (1)

मूल के समान परिवार की माता तो पोषण कर्त्ती।
पत्तों के समान खाना बनाकर, खिलाती ममता मूर्ति।

स्कन्द के समान पिता ही होते, सबके आश्रय दाता।
परिवार के भरण-पोषण, करते वे अन्नदाता।
आर्य संस्कृति की जय... भारतीय संस्कृति की जय।। (2)

फल-फूल-बीज समान बच्चे, परिवार के भविष्य।
उनसे शोभा समृद्धि पाता, परिवार का भविष्य।

परिवार के अतिथि होते, वृक्ष के पशु पक्षी सम।
आदर सत्कार आश्रय भोजन, सेवा भी देव के सम।।
आर्य संस्कृति की जय... भारतीय संस्कृति की जय।। (3)

धरती के समधर भी होता, सबके निवास स्थल।
समाज से मिले सहयोग सेवा, यथा है मृदा व जल।

परोपकार यथा वृक्ष करता, परिवार करता तथा।
गुरु-गुणी जन वृद्ध माता-पिता, परिवार आश्रय दाता।
आर्य संस्कृति की जय... भारतीय संस्कृति की जय।। (4)

परिवार संस्था भारत भूमि की, आदर्श आश्रम संस्था।
ब्रह्मचर्य गृहस्थवान यतिव्रत, मध्य में गृहस्थावस्था।

परिवार से ही ब्रह्मचारी बनते, तथाहिवान व यति।
धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष पुरुषार्थ, युक्त थी आर्यजाति।
आर्य संस्कृति की जय... भारतीय संस्कृति की जय।। (5)

जिससे भारत विश्वगुरु रहा, सिखाया विश्व को ज्ञान।
सभ्य सुसंस्कृत समृद्धशाली, रहा भारत महान्।

अभी क्या हुआ हार रे! भारत, भूला स्व-गौरव गाथा।
परिवार संस्था छिन्न-भिन्न हुई, सर्वत्र करुण/(पतन) गाथा।
आर्य संस्कृति की जय... भारतीय संस्कृति की जय।। (6)

आश्रमप्रथा लोप हो गई, खुल गये वृद्धाश्रम।
वृद्ध माता-पिता हुये बहिष्कृत, पुरुषार्थ हीन श्रम।

अर्थ-काम की लालसा ही रही, धर्म मोक्ष हुये हीन।
सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि हेतु ही, खटते है निशदिन।
आर्य संस्कृति की जय... भारतीय संस्कृति की जय।। (7)

इसलिये आज महान् भारत, बना है महाभारत।
भ्रष्टाचार हिंसा मिलावट चोरी, रोगों से बना गारत/(का महाभारत)

सुख-शान्ति समृद्धि की इच्छा, यदि है भो! भारतीय।
परिवार संस्था आश्रम व्यवस्था, अपनाओ भारतीय।
आर्य संस्कृति की जय... भारतीय संस्कृति की जय।। (8)

चारों पुरुषार्थ सहित जीवन-यापन से पाओ मुक्ति।
इसीलिये ही कनकनन्दी करता है सदा युक्ति।

परिवार है वृक्ष के समान, जिसके मूल है माता।
स्कन्द जिसके होते हैं पिता, शाखायें सगा व सखा।।
आर्य संस्कृति की जय... भारतीय संस्कृति की जय।। (9)

खाखड़ 19.5.2012, रात्रि 12.03

आध्यात्मिक रहस्यवादी

''तू ही तेरे शत्रु-मित्र-सत्य''

(हर जीव के अशुभ-शुभ-शुद्ध स्वरूप)

(रागः 1. कसमें वादे प्यार... 2. बंगला राग...)

तू ही तेरा कर्त्ता भोक्ता... तू ही तेरा हर्त्ता है/(रे)।
तू ही तेरा शत्रु-मित्र... तू ही तेरा सत्य है ।।ध्रु.।।

भाव तेरा जैसा होता... वैसा तेरा कर्म है/(रे)।
जैसा तेरा कर्म होता... वैसा तेरा भाग्य है।। (1)

जैसा तेरा भाग्य होता... वैसा तेरा भावी है।
शुभाशुभ शुद्ध रूप... भावमय तेरा रूप है।। (2)

शुभभाव मित्र सम... अशुभ तेरा शत्रु है।
शुद्ध तेरा निज रूप... वही शाश्वत सत्य है।। (3)

कामक्रोधमानमाया... लोभ-मत्सर-ईर्ष्या है।
ये ही तेरा परम शत्रु... अशुभभाव तेरा है।। (4)

अशुभभाव के दूर हेतु... प्रयास तेरा जो भाव है।
वही तेरा परम मित्र... प्राप्त हेतु शुद्धभाव है।। (5)

अनन्तज्ञानदर्शनसुख... वीर्य व अव्याबाध है।
ये ही तेरा शुद्धरूप... परम सत्य रूप है।। (6)

इसी की प्राप्ति स्वयं की प्राप्ति... सत्य-शिव-सुन्दरम्।
इसी के लिए 'कनकनन्दी'... प्रयत्न करे अन्दरम्/(अन्तरम्)।। (7)

झाड़ोल (फ.) 27.4.2012, रात्रि 9.47

सार्वभौम हैं महावीर के सिद्धान्त

(भगवान महावीर के सिद्धान्तों से प्राप्त शिक्षायें)

महावीर के सिद्धान्त शाश्वत होते, देशकाल जाति परे सबके होते।
यथा सीमा-बद्ध नभ नहीं होता, सबके आधारभूत आकाश होता।। (टेक)

अनेकान्त अहिंसा व अपरिग्रह, अचौर्य व ब्रह्मचर्य समतामय।
स्याद्वाद सत्यनिष्ठा क्षमा संयम, विनय त्याग तपस्या पावनमय।। (1)

अनेकान्त व्यापक दृष्टिकोण बताता, सत्यग्राही बनने की प्रेरणा देता।
इसी से संकीर्ण दृष्टि विनाश होती, मताग्रही दृष्टि कभी नहीं रहती।। (2)

सर्वजीव अधिकार अहिंसा दृष्टि, सहअस्तित्व शाकाहार यह बताती।
युद्ध हत्या आत्महत्या सर्व मिटाती, पर्यावरण सुरक्षा इसी से होती।। (3)

परिग्रह द्वि-विध बहिरंग व अन्तः, क्रोधमानमायालोभ होते हैं अन्तः।
धन-धान्य दासी-दास होते हैं बहि, दोनों से विभिन्न कष्ट होते हैं सही।।(4)

परिग्रह से तनाव कलह होते, प्रकृति हनन व प्रदूषण भी होते।
शोषणयुद्ध व हत्या भी होते, मिलावट भ्रष्टाचार आतंक होते।। (5)

अपरिग्रह से यह सब न होते, आदर्श साम्यवादी जन सर्वत्र होते।
साम्यवाद हेतु न होता भी युद्ध, साम्यवाद से भी अधिक विशुद्ध।। (6)

अचौर्य से न होता मिलावट व चोरी, डाका डालना या कर्त्तव्य चोरी।
हिनाधिक माप तोल या तस्करी, परीक्षा में नकल या रिश्वतखोरी।। (7)

ब्रह्मचर्य से न होता जनसंख्या विस्फोट, परस्त्री गमन या वेश्या-गमन।
एड्स रोग न होता जो प्राणहारी, पूर्ण ब्रह्म से मिले आध्यात्मपुरी।। (8)

समता से छोटा-बड़ा कोई न होता, धनी-गरीब का भेदभाव न होता।
तनाव दुःख संताप कुछ न होते, रागद्वेषमोहघृणाईर्ष्या न होते।। (9)

स्याद्वाद सत्य-कथन पद्धति श्रेष्ठ, सत्यांश कथन से न होता अनिष्ट।
वाद-विवाद कलह हठ न होते, शेष सत्यांश गुण-धर्म लोप न होते।।(10)

सत्यनिष्ठा से असत्य दूर हो जाते, कूट-कपट-मायाचारी-धोखा न होते।
सत्य में अनन्त शक्ति निहित होती, सत्यनिष्ठा से वह शक्ति प्रगट होती।।(11)

क्षमा से वैर विरोध द्वेष न होते, शरीर-मन-आत्मा स्वस्थ्य भी होते।
पूर्वार्जित पाप-कर्म नष्ट भी होते, आध्यात्मिक गुण-धर्म प्रगट होते।।(12)

संयम से अनर्थभावकाम न होते, तन-मन-आत्मा के बल बढ़ते।
समय-शक्ति-साधन व्यर्थ न होते, स्व-पर विकास हेतु खर्च भी होते।। (13)

विनय से ज्ञान-गुण शोभा को पाते, विनय से आत्मगुण विकास होते।
स्नेह सहयोग संगठन बढ़ते, विनय से इहपरलोक सुखी बनते।। (14)

त्याग से स्व-पर उपकार ही होता, अन्तरंग-बाह्य-रूप त्याग जो होता।
अन्तरंग त्याग से जीव पावन होता, बहिरंग त्याग से परिग्रह छूटता।।(15)

तृष्णा त्याग ही यथार्थ से तपस्या होती, तृष्णा त्याग से दुःखों की निवृत्ति होती।
तृष्णा-त्याग से लोभ का त्याग हो जाता, लोभ-त्याग से पाप का बाप नशता।।(16)

इन कारणों से जीवन पावन होता, पावन जीवन अमृतमय हो जाता।
जिससे जीवों को शाश्वतिक सुख मिलता, इसी हेतु ही ''कनक'' प्रयास करता।।(17)

झाड़ोल (फ.) दि= 3.4.2012, मध्याह्न - 2.33

''सत्य एवं वचन-सत्य का विश्व रूप''

(रागः 1. कसमें वादे प्यार... 2. आपकी नजरों ने...)

हित-मित-प्रिय सत्य/(पथ्य)... कथन वचन/(वाचनिक) सत्य है।
सर्वोपकारी वचन हित... स्वल्प कथन मित है ।।ध्रु.।।

मधुर साम्य सत्य कथन... आह्लादकारी प्रिय है।
क्रोध-मान-माया-लोभ रहित... मोह काम से रहित है।। (1)

इसी से भिन्न वचन कथन/(कहना)... नहीं यथार्थ सत्य है।
देखा या सुना हुआ भी... पढ़ा या लिखा हुआ भी।। (2)

सर्वोपकारी हित वचन... पापों से जो रहित हैं।
वही सर्वोच्च श्रेष्ठ वचन... हित-मित गौण हैं।। (3)

दयावन्त गुरु जब... समझाते शिष्यों को।
मित व प्रिय रहित... सत्य होता सर्वोच्च।। (4)

अन्यथा मित प्रयोग... करणीय विधेय है।
असम्बद्ध प्रलाप भी... असत्य सम ही हेय है।। (5)

चाटुकार ठग वेश्या... कथित प्रिय वचन।
नहीं होता सत्य वचन/(कथन)... हित सत्य विरहित।। (6)

यदि सदा सम्भव हो... मौन गुप्ति धारणीय।
आत्मशान्ति कार्यसिद्धि... कर्मनाश करणीय।। (7)

धर्मनाशे क्रियाध्वंसे... सत्य तथ्य विलोपने।
बिना पूछे सत्य कहो... दोष नहीं है कथने।। (8)

सत्य पालन के लिये ही... सत्यधर्म सत्यव्रत।
भाषासमिति भाषागुप्ति... हित-मित-प्रिय वचन।। (9)

सत्य सदा ज्ञातव्य है... सत्य सदा धातव्य।
सत्य सदा कथनीय है... सत्य सदा पालनीय।। (10)

सत्य ही परम प्राप्य... सत्य सदा पूजनीय।
सत्य शिव सुन्दर है... सच्चिदानन्द है सत्य।। (11)

सत्यमय होता धर्म... सत्य परमेश्वर है।
सत्यमय होता ज्ञान... सत्यसम विज्ञान है।। (12)

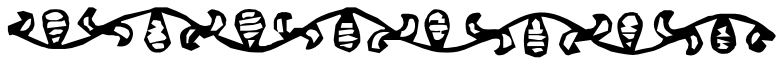

न्याय व राजनीति... संविधान व समाज।
व्यापार कला कविता... सत्य से ही प्रतिष्ठित।। (13)

सत्य रहित सर्व ही... होते हैं अस्तित्वहीन।
अतएव कनकनन्दी... माने सत्य सर्वश्रेय।। (14)

झाडोल (फ.) 29.4.2012, मध्याह्न 2.55

विश्व की सम्वृद्धि एवं शान्ति के सार्वभौम उपाय

परस्परोपग्रहो जीवानां-द्रव्याणाम्

(रागः छोटी-छोटी गैया...)

परस्परोपग्रहो सूत्र बताता, उपकार करने का भाव जगाता।
जीना हो तो जीने दो हमें बताता, संकीर्ण स्वार्थ से दूर हमें कराता ।।ध्रु.।।

शरीर के सम यह जीव जगत्, अंग-अंगी सम यह प्राणी जगत्।
परस्पर निर्भर यह सर्व जगत्, अन्तःसम्बन्ध सहित जीव अस्तित्व।। (1)

जल भूमि सूर्य रश्मि प्राप्त करके, वनस्पति फूले-फले प्राणी हित के।
प्राणवायु लकडी दवा प्रदाता, प्रदूषण दूर करे छाया भी देता।। (2)

वनस्पति पर निर्भर पशु-पक्षी भी, पशु-पक्षी पर निर्भर मानव जाति।
बीज विकीर्ण तथा परागण से, उपकार करते निम्न प्रजाति।। (3)

सभी मानव के अन्नदाता कृषक, दूध प्रदाता मित्र पशु पालक।
वस्त्र प्रदाता वस्त्र निर्माण कर्त्ता, उपकरण दाता उसके कर्त्ता।। (4)

सफाई कर्मी सफाई कार्य करता, वैद्य-डॉक्टर रोगी के रोग हरता।
शिक्षक से शिक्षार्थी पाठ पढ़ता, गुरु से आत्मा का ज्ञान मिलता।। (5)

सेवक स्वामी की सेवा करता, स्वामी से आर्थिक लाभ मिलता।
अभिभावक से शिशु का पोषण होता, बड़ा होकर शिशु सेवा करता।। (6)

सहयोग से सहयोग मिलता, कर्म के अनुसार फल मिलता।
पर्यावरण सुरक्षा इसी से होती, परस्पर मित्रता इसी से होती।। (7)

सन्तुलित सम्वृद्धि इसी से होती, शोषण-शोषित वृत्ति नशाती।
जीवन निर्वाह व निर्माण वृत्ति, इसी सूत्र के द्वारा सभी सधती।। (8)

परस्परोपग्रहो द्रव्याणां होता, गति स्थिति व परिणमन होता।
अवकाश दान आकाश देता, कर्म-नोकर्म पुद्गल कर्त्ता।। (9)

तथाहि गुण-पर्याय में होता, शुद्ध-अशुद्ध-मिश्र में होता।
शुभ-अशुभ-शुद्ध में होता, सुगुण-दुर्गुण सभी में होता।। (10)

यह है अनेकान्त इकोसिस्टम, पारिस्थितिकी व थ्योरी एम।
पारिवारिक व संघ व्यवस्था, राष्ट्रीय व वैश्विक व्यवस्था।। (11)

इसी से विपरीत जब काम भी होता, उससे विग्रह व विनाश होता।
शोषक-शोषित युद्ध कलह होता, पतन विध्वंस व पाप भी होता।। (12)

अतएव उपकार सदा विधेय, सर्वोदय करणीय सदा विधेय।
यह है वैश्विक सूत्र हर क्षेत्र के, कनकनन्दी द्वारा ग्राह्य हर क्षेत्र के।। (13)

झाडोल (फ.) 2.5.2012 प्रातः 8.05

''तू ही स्वर्ग-नर्क-मोक्ष रूप है''

(रागः 1. आपकी नजरों ने... 2. कसमें वादे प्यार वफा...)

तू ही तेरे पुण्य पाप... तू ही तेरा बन्ध है।
तू ही तेरे स्वर्ग-नर्क... तू ही तेरा मोक्ष है ।।ध्रु.।।

तू ही तेरे शुभाशुभ... तू ही तेरा शुद्ध है।
तू ही तेरे सुख-दुःख... तू तेरा ज्ञानानन्द है।।

भाव तेरा मलीन अशुभ... प्रशस्त तेरा शुभ है।
अशुभ भाव ही तेरा पाप... प्रशस्त भाव पुण्य है।। (1)

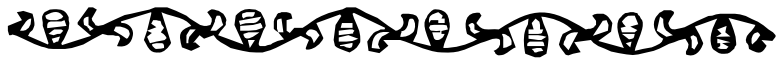

दोनों भावों से परे तू... शुद्ध निश्चय भाव है।
ज्ञान-दर्शन-सुख व वीर्य... अनन्त अक्षय गुण है।।

नरक निगोद पशु रूप... तेरा ही अशुभ भाव है।
मानव-देव आर्य रूप... तेरा ही शुभ भाव है।। (2)

क्रोध-मान-माया-लोभ... अशुभ भाव पाप है।
इसी से तेरा पतन होता... अशुभ भाव त्याज्य है।।

दया सेवा परोपकार... नम्र सरल भाव है।
त्याग संयम शुचिता... पुण्य भाव ग्राह्य है।। (3)

अशुभ त्यागो शुभ गहो... शुभ से शुद्ध प्राप्य है।
शुद्ध ही है तेरा रूप... सत्य-शिव-सुख-मंगल।।

'कनकनन्दी' प्रयासरत... शुद्ध हेतु ही शुभ करे।
'कनक' शुद्धि प्राप्ति हेतु... कनक पाषाण ग्राह्य हुए।। (4)

झाड़ोल (फ.) 5.5.2012, रात्रि 10.07

23 सितम्बर, विश्व हृदय दिवस के अवसर पर

मानव चाहो यदि सदा सुखी रहना

(तर्ज:- 1. बच्चों तुम निर्माता हो... 2. परदेसियों से न अखियाँ मिलाना... 3. जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा...)

दिल/(हृदय) दिमाग/(बुद्धि) देह/(शरीर) को सदा स्वस्थ्य रखना
मानव चाहो यदि, सदा सुखी रहना... (स्थायी)...

इसके लिए करो... सदा ही प्रयत्न
पथ्य हो आहार... विहार चिन्तन
शरीर श्रम व सुध्यान प्राणायाम... मानव... (1)

व्यायाम योगासन... पैदल विहार/(भ्रमण)

सात्विक आहार... दुग्ध फलाहार
हरी सब्जी भी खाओ-ताजा व हितकर... मानव... (2)

प्रदूषणों से रहित... स्थान हो तेरा सदा
आहार विहार... शयन ध्यान तथा
व्यायाम प्राणायाम... स्वाध्याय श्रम तथा... मानव... (3)

सादा हो जीवन... प्रकृति अनुसार
फैशन-व्यसनों से... रहो सदा दूर
क्रोध मान माया लोभ... मोह करो दूर... मानव... (4)

दिमाग रहे शान्त... तनाव विवर्जित
जिससे रहेगा... दिल/(हृदय) तन्दुरुस्त
जिससे रहोगे तुम भी... स्वस्थ्य मस्त... मानव... (5)

हरति ददाति जो... रक्त को यमयति
हृदय तेरा रहेगा... सदा/(सदैव) स्फूर्ति/(चुस्ति)
जीवन में रहेगी... तेरी सदा मस्ती... मानव... (6)

प्रतीक हृदय तुम्हारा... दयार्द्र का
करुणा प्रेम वात्सल्य... कोमल का
परोपकार सेवा व... दानादि का... मानव... (7)

इनके/(इसके) बिना तेरा... हृदय जड़ाकार
शक्ति स्फूर्ति बिना... मांस कलेवर
जिससे होता है... हृदय विकार... मानव... (8)

'कनकनन्दी' कहे/(अतएव मानव) बनो... तुम सदाचारी
शरीर श्रम युक्त... दयालु शाकाहारी
करो हे! पुरुषार्थ... सर्व दुःखहारी/(सर्व सुखकारी)... मानव...(9)

ECO-FRIENDLY SONG

पर्यावरण-परिस्थितिकी गीत

मानव पशु-पक्षी के कृतज्ञ बने न कि कृतघ्न

वनस्पति से लेकर पशु-पक्षी भी वैज्ञानिक एवं उपकारी

(वृक्ष से लेकर पशु-पक्षी से भी उपकृत है मानव)

(रागः- शायद मेरी...)

पशु-पक्षी नहीं अज्ञानी-जड़... नहीं होते अपकारी
वे भी होते हैं ज्ञानी-विज्ञानी... होते बहु उपकारी... स्थायी...

मानव पूर्व भी अस्तित्व उनका... विज्ञान ऐसा है माना
मानव समान उनका अस्तित्व... अनादि से धर्म माना
पशु-पक्षी भी पञ्चेन्द्रिय होते... होते भी हैं मन सह
सम्यक्त्व सहित तीनों ज्ञान युक्त... होते अणुव्रत युक्त (1)

वनस्पति से कीट व पतंग... स्व-योग्य इन्द्रिय युक्त
मतिज्ञान व श्रुतज्ञान युक्त... भले न होता सम्यक्त्व
वनस्पति से प्राण वायु मिले... अनाज फूल व फल
औषधि लकड़ी छाया शीतलता... प्रदूषण दोष हर (2)

मधुमक्खी आदि कीट पतंग से... परागण आदि हुए
जिससे अनाज फल प्राप्त हुए... गीत-नृत्ये मन मोहे
गाय बकरी व ऊँटनी भेड़ से... दूध मिले गुणकारी
विहंगम हमें संगीत सुनाये... बहुविध नृत्य करी (3)

विविध आसन संगीत के स्वर... पशु-पक्षी से ही बने
वैज्ञानिक शोध-बोध के निमित्त... इनसे भी शिक्षा मिले
वैज्ञानिक शोध-बोध के पहले... करोड़ों वर्षों के पूर्व
इन्हीं जीवों ने आविष्कार किये... विज्ञान जन्म के पूर्व (4)

कागज का आविष्कार (तो) हुआ है... दो हजार वर्ष पूर्व
ततैया इसका निर्माण करता... करोड़ों वर्षों के पूर्व
सोनार यन्त्र का प्रयोग करती... डॉलफिन है विशेष
मानव निर्मित सोनार से पूर्व... हुआ है लाखों वर्ष (5)

न्यूटन का प्रति-क्रिया सिद्धान्त... स्कूइट करे विशेष/(निष्णात)
करोड़ों वर्षों से प्रयोग करता... जेट विमान सिद्धान्त
गन्ध से आग को जानने का यन्त्र/(अंग)... बिटल/(झिंगुर) करे प्रयोग
इसे तो मानव अब जान पाया... कृत्रिम यन्त्र से संग (6)

सुरक्षा के हेतु एयर बैग का... केनेड पक्षी जो करे
उसका निर्माण विज्ञान ने किया... कुछ ही दशक पहले
शब्द रहित उल्लू तो उड़ते... लाखों वर्ष पहले
निशब्द विमान निर्माण हुआ... अभी तो वर्षों पहले (7)

तैराकी पोषाक मानव बनाया... कुछ ही वर्षों पहले
मिको शार्क तो करोड़ों वर्षों से... करती आयी पहले/(शान से)
केको/(छिपकली) चढ़ती है काँच की दीवार... वैक्यूम सिद्धान्त द्धारा
अभी तो मानव सीख रहा है... केको की पद्धति द्धारा (8)

फ्रिजम के द्धारा बुलफ्रक/(मेंढक) तो... स्वयं की सुरक्षा करता
यह काम अभी विज्ञानी द्धारा भी... सरल में नहीं होता
लंगफिश तो चार साल तक... सूखे में जिन्दा रहती
महाप्रलय व बमविस्फोट से... कंकरोच नहीं मरती (9)

जन्म के बाद भी बच्चादानी में... कंगारू भ्रूण पालती
ध्रुवीय भालू की शीत निद्रा तो... महीनों जारी रहती
इत्यादि अनेक पशु-पक्षी में भी... होती है विचित्र क्षमता
दूरश्रवण व दूरदर्शन या... दूर घ्राण की क्षमता (10)

इसीलिए तो इनके द्वारा भी... होता भविष्य ज्ञान
भूकम्प वर्षा सुनामी आदि का... विज्ञानी से ज्यादा/(श्रेष्ठ) ज्ञान
वनस्पति स्वयं भोजन बनाता... प्राण वायु हमें देता/(की है देन)
इत्यादि का अभी वैज्ञानिक द्वारा... नहीं हो पाया है ज्ञान/(काम) (11)

अतः हे मानव! घमण्ड न करो... न करो उन्हें संहार
तुम्हें जीना हैं तो उन्हें जीने दो... 'कनकनन्दी' का विचार (12)

(भारतीय अन्तर्ज्ञान से स्टीव जाब्स बना महान् आविष्कारक)

स्टीव जाब्स से प्राप्त शिक्षाएँ

(पाश्चात्य संस्कृति से भारतीय संस्कृति महान् तो भी भारत पिछड़ा क्यों?)

(रागः- जब जीरो दिया मेरे भारत ने...)

क्या हो गया उस भारत को... जो विश्वगुरु पूर्व में रहा
अभी भ्रष्टाचार गन्दगी रोगों में... उच्च स्थान को प्राप्त हो रहा... (स्थायी)...

भौतिकता से आध्यात्म तक में... जो विश्व में शिरमौर/(अग्र) रहा।
धर्म अर्थ और काम मोक्ष में... आत्मशुद्धि का भाव रहा।।... (1)

विश्व को दिया जिसने ज्ञान... आज क्यों वह है पीछे रहा।
बिल गेट्स आज दान देने हेतु... भारतीयों को उपदेश दे रहा।।... (2)

स्टीव जाब्स जब भारत आये... भारत के ग्राम कस्बा में गये।
साधु-सन्त के जीवन/(चारित्र) जाना... अन्तर्ज्ञान का महत्व माना/(जाना)।।...(3)

पाश्चात्य संस्कृति तर्क प्रधान... बुद्धि का महत्व अधिक जान।
कारण प्रभाव करे वर्णन... इसी से परे है अन्तर्विज्ञान।।... (4)

अन्तर्ज्ञान से अन्तः प्रकाश होता... जिससे बाह्य भी प्रकाश होता।
इसी से स्टीव ने किया निर्माण... आईपॉड सहित व आईफोन।।... (5)

जिससे अरबों डॉलर पाया... दूरसञ्चार को सुगम किया।
ज्ञान सहित भी यश कमाया... सबके दिल में राज भी किया।।... (6)

भारत से बना यशस्वी महान्... सात महीना में सीखा जो ज्ञान।
भारतवासी को नहीं है भान... अन्तर्ज्ञान की शक्ति है महान्।।... (7)

इसी से भारत पिछड़ा रहा... अन्तर्ज्ञान बिना क्षमता कहाँ।
प्राण बिना यथा शरीर होता... अन्तर्ज्ञान बिना तथा क्षमता।।... (8)

भारत से सीखे पश्चिम ज्ञान... जिससे बनाये ज्ञान-विज्ञान।
अन्धानुकरण करे भारत जन... अन्तर्ज्ञान बिन न बढ़े ज्ञान।।... (9)

स्टीव से शिक्षा लो भारत जन... आत्मज्ञान/(अन्तर्ज्ञान) का करो सन्मान।
'कनकनन्दी' का सुनो आह्वान... आत्मशक्ति का करो है ध्यान।।... (10)

वैश्विक सच्चा-अच्छा भाव एवं काम

(रागः- 1. न कजरे की धार...)

न विवशता का भाव... हो श्रद्धापूर्वक काम
हो अनुभव से काम... सही निर्णय होता है... हो हो... (टेक)...

संकीर्ण न हो भाव... उद्दण्ड न हो काम...2
आत्मविश्वास भाव... सद् विकास होता है... (1)

अहंकार का न भाव... हो आत्मगौरव काम...2
स्वावलम्बन से काम... सच्चा सुख मिलता है... (2)

भाव न हो भेद-भाव... हो वैश्विक उदार भाव...2
स्वार्थ न हो भाव... सुप्रभाव पड़ता है... (3)

न हठग्राहिता भाव... हो विवेकग्राह्य काम...2
हो सत्यनिष्ठ काम... सद्ज्ञान बढ़ता है... (4)

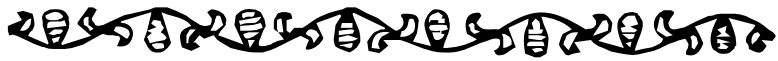

न पक्षपात का भाव... न तोड़-फोड़ का काम...2
सबमें हो सद्भाव... तब संगठन होता है... (5)

संक्लेश का न भाव... हो सत्य-समता काम...2
हो विमल सहज भाव... सद्धर्म होता है... (6)

हो संस्कार सदाचार... बौद्धिक न विचार...2
हो सर्वोदय का ज्ञान... सही शिक्षण होता है... (7)

न ख्याति पूजा का भाव... हो आत्म-उद्धार काम...2
हो आत्म-प्राप्ति काम... सत् साधक होता है... (8)

हो विनम्र आज्ञाधार... जो गुणग्राही उदार...2
जो ज्ञान-सेवा तत्पर... सच्चा शिष्य होता है... (9)

है 'कनकनन्दी' का भाव... हो विश्व का उद्धार...2
हो सत्य-शान्ति प्रसार... विश्व कल्याण होता है... (10)

''आचार-विचार-प्रबन्धन''

(सर्वधर्म व विकास के मूल आचार : नैतिकाचार
नैतिक आचार बिना न धर्म, न विकास)

(तर्जः चौपाई...)

नैतिक आचरण (व) सामान्य ज्ञान... सार्वभौम सर्वोत्तम जान।
हर द्रव्य क्षेत्र काल व धर्म... सर्व मान्य व सहज जान।। (स्थायी/टेक)...

जो आचरण न योग्य स्वयं को... सो न करो प्रयोग अन्य को।
जो व्यवहार है प्रिय स्वयं को... सो व्यवहार करो अन्य को।। (1)

स्वयं को यथा सुख ही प्रिय... तथा ही हर प्राणी को प्रिय।
अतएव किसे भी दुःख नहीं दो... सुख चाहते हो सुख ही दो।। (2)

असत्य कटु तुम्हें न प्रिय... अन्य को तथा न होता प्रिय।
तुम्हारी चोरी तुम न चाहो... तथा ही अन्य प्राणी की चाह।। (3)

ऐसा ही हिंसा क्रूरता जानो... शोषण धोखा दासत्व मानो।
अन्याय तुच्छता अत्याचार... भर्त्सना गाली कभी न कर।। (4)

अनुशासन व शिष्टाचार... प्रामाणिक व सेवा उपकार/(सत्कार)।
कर्त्तव्य निष्ठा करुणाधर... सबके लिए साम्य-आचार।। (5)

शील शालीनता नैतिकाचार... भद्रता मर्यादा निष्पक्षाचार।
प्राणवायु सम मूल आधार... सर्व विकास का मूलाचार।। (6)

प्राणवायु यदि नहीं मिलती... सत्ता-सम्पत्ति बेकार होती।
तथाहि नैतिक आचार बिन... विकास विहीन होता जीवन।। (7)

रावण कंस हिटलर सद्दाम... लादेन गद्दाफी अन्यायवान्।
विकास उनका बना विनाश... यथा अग्नि में पतंग नाश।। (8)

तथाहि हर देश जाति की होती... उसकी रक्षा कभी न होती।
यह प्रकृति का सच्चा नियम... क्रिया-प्रतिक्रिया होता निदान।। (9)

विकास-सुख इच्छुक जन... सदा ही करो नीति-आचरण।
'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो/(मानो)...
आत्मचेतना का स्पन्दन/(आह्वान) मानो/(सुनो)।। (10)

शान्ति प्राप्ति की कला

(राग - दुनियाँ में रहना है तो...)

सुखमय जीना है तो शान्त रहो प्यारे ऽऽ
मस्त रहो व्यस्त रहो धैर्य धरो प्यारे ऽऽ

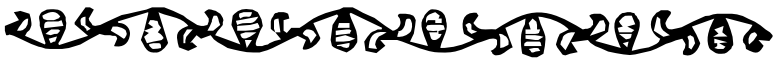

सत्य जानो सत्य मानो सत्य को ही पालो/(स्वीकारो) ऽऽ
समता से वैषम्य को दूर तुम करो ऽऽ... (स्थायी/टेक)

क्षमा सहिष्णुता युक्त आगे आगे बढ़ो... प्रतिस्पर्द्धा बिना ही विकास तुम करो।
संसार तो पंक सम तुम पंकज बनो... निर्लिप्त भाव से तुम लक्ष्य प्राप्त करो।।

विश्वमैत्री विश्वशान्ति भावना तू धर... सबको सन्तुष्ट करना असम्भव कर।
नाना जीव नाना कर्म नाना है विचार... सब के सम विचार असम्भव कर।।

तीर्थंकर बुद्ध को भी क्या सभी ने माना... सुकरात ईसा को भी मानवों ने हना।
स्वात्मा को भी है क्या सभी ने माना... स्वयं को भी जड़मय माने मन्यमाना।।

इसीलिये सच्चा-झूठा सब कुछ जानो... सच्चे-झूठे जनों को भी सही पहिचानो।
तथापि सच्चा-सच्चे को भाव से मानो... झूठा व झूठे को भाव से न मानो।।

आग को आग जानो तथा पहिचानो... विष को विष जानो तथा ही है मानो।
दोनों से स्वयं की रक्षा करना सद्ज्ञान... अन्यथा तुम्हारा ज्ञान होगा मिथ्याज्ञान।।

तथाहि संसार में संभल कर चल... दूसरों से स्वयं की रक्षा करते चल।
आत्मपरिणाम हत्या कभी नहीं कर... स्व-पर रक्षा करके समता से चल।।

तुम्हारे अन्दर यदि होगी कमजोरी... अन्य जनों के करोगे नौकरी।
क्रोध मान माया लोभ होती कमजोरी... सबल बनने हेतु नाशो कमजोरी।।

सहमति बने या न बने सभी की... सन्मति से चर्या करो नव ही कोटि की।
सन्मति से सहमति यदि देता कोई... ग्रहणीय अन्यथा त्यजनीय होई।।

आत्मजय द्वारा जब विजयी बनोगे... तीन लोक में भी तेरे शत्रु न रहेंगे।
इसीलिए आत्मजयी बनो हे आत्मनः... 'कनकनन्दी' स्वयं को करे है आह्वान।।

सम्पूर्ण सफलता के मूलसूत्र

सुविचार ही संस्कार-सदाचार-संस्कृति के जनक

(सुविचार से संस्कार, संस्कार से सदाचार, सदाचार से संस्कृति- आध्यात्मिकता)

(ओडिसी बंगला राग...)

बीज से अंकुर उत्पन्न होता... जिससे विशाल वृक्ष बनता।
वृक्ष में फूल-फल बहु आते... जिससे मानव क्षुधा मिटाते।। स्थायी/मूल।।

(सु) विचार से संस्कार उपजता... संस्कार से सदाचार बनता।
जिससे संस्कृति उत्पन्न होती... जिससे मानव श्रेष्ठ बनता।। (1)

(सु) विचार सबका मूल कारण... जिससे बने व्यक्ति महान्।
जिससे सभ्यता संस्कृति बनती... आध्यात्मिकता उत्पन्न होती।। (2)

आध्यात्मिकता है आत्मिक भाव... जिसमें समाहित सुख-स्वभाव।
ज्ञान दर्शन व समता शान्ति... सत्य अहिंसा पावन क्षान्ती।। (3)

इसलिए सुविचार आद्य कर्त्तव्य... हर कार्य में सर्वप्रथम।
इसी में होती है पॉजिटिव शक्ति... हर कार्य को मिलती है शक्ति।। (4)

पॉजिटिव थिंकिंग में करणीय भाव... सनम्र सत्यग्राही भाव।
सरल-सहज उत्साह भाव... आदर प्रेम व उदार भाव।। (5)

फैशन-व्यसन से रहित भाव... श्रद्धा सहित निर्मल भाव।
क्रोध मान माया लोभ रहित... कुण्ठा भय व स्वार्थ रहित।। (6)

इसी से आत्मिक शक्ति बढ़ती... वैश्विक ऊर्जा की प्राप्ति होती।
अन्तरंग-बहिरंग बाधा घटती... सर्वोदय में प्रगति होती।। (7)

आधि-व्याधि-उपाधि घटती... तन-मन-आत्मा को शक्ति मिलती।
वैर-विरोध तनाव रहित... जीवन बनता आदर्श युक्त।। (8)

सर्व धर्म में यह सब कहा... आधुनिक विज्ञान भी यह सब पाया।
'कनकनन्दी' भी अनुभव किया... स्व-पर हित हेतु यह सब गाया।। (9)

''स्व-उपलब्धि ही सर्व उपलब्धि''

(स्व-आत्म सम्बोधन एवं मेरा अन्तिम लक्ष्य)

(रागः कसमें वादे प्यार वफा सब बातें हैं...)

तू ही तेरा परम सत्य है... अन्य सब सहयोग है
तू ही तेरा आदि अन्त...मध्य शाश्वतिक/(सार्वभौम) शाश्वत सत्य है...
(स्थायी/धत्ता)...

जब से हैऽऽ ब्रह्माण्ड भी यह... तब से तेरा भी अस्तित्वऽऽ
अनादि अनन्तऽऽ शाश्वतिक यह... तेरा भी हैऽऽ सह अस्तित्व
तू ही तेरा परम सत्य है...(1)...

तू जो चेतनऽऽ ज्ञानानन्दमय... विश्व/(ब्रह्माण्ड) उभय रूप हैऽऽ
तेरे समान हीऽऽ अनन्त चेतन... और भी अचेतन रूप हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(2)...

अणु से लेकरऽऽ निहारिका तक... अनन्त अचेतन रूप हैऽऽ
निगोदिया सेऽऽ... नित्यानन्दमय...अनन्त चिन्मय रूप हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(3)...

तेरा अस्तित्वऽऽ यदि न होता... अन्य से (तेरा) क्या लाभ हैऽऽ
तुझे तू हीऽऽ यदि न पाया/(मिला) तो... अन्य लाभ क्या लाभ हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(4)...

यदि शरीर मेंऽऽ तू न रहा तो... शरीर जड़ का पिण्ड हैऽऽ
जलाओ गाढ़ोऽऽ या फेंक दो... तुझसे नहीं सम्बन्ध हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(5)...

ऐसा ही तेराऽऽ अस्तित्व कारण... विश्व/(ब्रह्माण्ड) अस्तित्त्ववान हैऽऽ
अन्यथा स्वऽऽ अस्तित्व बिन... तेरे लिए सत्ता शून्य हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(6)...

तू है ज्ञाताऽऽ ब्रह्माण्ड ज्ञेय... ज्ञाता बिना न ज्ञेय हैऽऽऽ
ज्ञाता-ज्ञेयऽऽ उभय सम्बन्ध... ज्ञाता से ज्ञेय अनुबन्ध हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(7)...

यथा दीपऽऽ स्व-पर प्रकाशी... ज्योति से प्रकाशित द्रव्य हैऽऽ
द्रव्य से दीपऽऽ न प्रकाशित है... तथा ही ज्ञान व ज्ञेय है
तू ही तेरा परम सत्य है...(8)...

इसीलिये तोऽऽ स्वयं को जानो... ब्रह्माण्ड/(विश्व) बनेगा ज्ञेय हैऽऽ
स्वज्ञान हेतुऽऽ अनन्तज्ञान... जिससे ब्रह्माण्ड ज्ञेय है
तू ही तेरा परम सत्य है...(9)...

स्वात्मोपलब्धिऽऽ सर्वोपलब्धि... यह आध्यात्मिक सार हैऽऽ
'कनकनन्दी' काऽऽ सर्वस्व यह... अन्य तो मिथ्या मोह हैऽऽ
तू ही तेरा परम सत्य है...(10)...

"समाधि से स्वात्मोपलब्धि"

(समाधिमरण का स्वरूप एवं फल)

(तर्जः 1. सुनो! सुनो! हे दुनियाँ वालों... 2. सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु...)

सुनो! सुनो! हे दुनियाँ वालों, वीरमरण की सच्ची पद्धति।
जो वरता है वीरमरण, संसार-चक्र/(बन्ध)/(दुःख) से पाता निवृत्ति ।।ध्रु.।।

इसे कहते हैं समाधिमरण... संथारा या सल्लेखना वृत्ति।
इसी से जीव को प्राप्त होती... स्वर्ग से लेकर मोक्ष विभूति ।।1।।

यह है उच्च आध्यात्मिक क्रिया... सामान्य जन की नहीं प्रवृत्ति।
मोह ममत्व कषाय त्याग... यथार्थ से है दुरूह वृत्ति ।।2।।

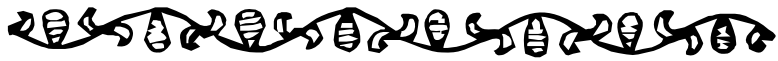

युद्ध में मृत्यु वरण करना... कंथचित् है सरल वृत्ति।
समतापूर्वक आत्मलीनता में... मृत्यु वरना दुर्लभ/(दुरूह) वृत्ति ।।3।।

आत्महत्या तो कायरजनों की... पलायनवादी नीच प्रवृत्ति।
उनमें होती हैं क्रोध-मान-माया... लोभ या काम की क्षुद्र प्रवृत्ति ।।4।।

इससे भिन्न समाधि में होती... आत्मशुद्धि की प्रबल वृत्ति।
तनाव दबाव फोबिया संक्लेश... आवेशरहित आत्मविशुद्धि/(आत्मिक वृत्ति)।।5।।

अप्रतिकार उपसर्ग व जरा... रोग/(अकाल) दुर्भिक्ष आदि निमित्ते/(होने से)।
मरण वरना वीरमरण है... भाव दुर्बलता नहीं होने से ।।6।।

मरण अवश्यम्भावी जीव का... क्यों स्वोद्धार हेतु मरा न जाये।
कायर का भी मरण निश्चित... वीरमरण को क्यों न धारे ।।7।।

कषाय/(संक्लेश) सहित जो मरण होता... उससे आत्मा का होता पतन।
कषाय रहित सल्लेखना से... आत्मा का अवश्य होता उत्थान ।।8।।

इसी कारण से महापुरुष... सल्लेखना से वरते मरण।
केवलज्ञानी का होता मरण... वह होता है श्रेष्ठ मरण ।।9।।

पण्डित-पण्डित मरण युक्त... केवली करते मोक्ष प्रयाण।
जन्म-जरा-मृत्यु-रोगरहित... मोक्ष में पाते हैं आनंदघन/आनंदधाम ।।10।।

साधुसमाधि है पण्डितमरण... जिससे पाते वे स्वर्ग का धाम।
स्वर्ग से मानव जन्म पाकर... पुनः करते आत्म उत्थान/(कल्याण)।।11।।

साधु बनके साधना करके... केवली बन कर मोक्ष प्रयाण।
तथाहि व्रती सम्यग्दृष्टि भी... स्वयोग्य करते समाधिमरण ।।12।।

वे भी स्वर्गादि गति पाकर... अन्त में जाते मोक्ष के धाम।
इसीलिए तो समाधिमरण... आत्मोत्थान के लिये सोपान ।।13।।

इसके विस्तार परिज्ञान हेतु... करो अध्ययन जैन आगम।
श्रावकाचार मरणकण्डिका... भगवती आराधना बहु प्रमाण ।।14।।

तथाहि महाभारत आदि... वैदिक ग्रन्थों में मिले प्रमाण।
मैंने भी मेरे ग्रन्थों के मध्ये... सल्लेखना का किया वर्णन ।।15।।

अभी भी जैन साधु-साध्वी आदि... अन्त में करते समाधिमरण।
विनोबा भावे भी जैन धर्मानुसार... अन्त में किया है समाधिमरण ।।16।।

समाधिमरण समाधि साधना... आत्मलीनता है आत्मसाधना।
यह भारतीय आध्यात्मपद्धति... अन्य संस्कृति में नहीं साधना ।।17।।

भौतिकवादी देहात्मवादी... भोगवादी की भी नहीं साधना।
परमात्म/(शुद्धात्म) रूप बनने हेतु... समाधिमरण है अन्तः साधना ।।18।।

बोधि समाधि परिणामशुद्धि... स्वात्मोपलब्धि शिवसौख्यसिद्धिः।
इसी हेतु ही कनकनन्दी... त्याग करता है सर्व प्रसिद्धि ।।19।।

झाडोल (फ.), दि= 9/4/2012, रात्रि 10.51

(आर्यिका सुविधेयमती माताजी की भावना से यह कविता रची गयी)

"स्वात्म भवन में आनन्द घन है"

(निजानन्द प्राप्ति के उपाय)

(रागः 1. मोक्ष पद मिलता... 2. आओ झूले मेरे चेतन...)

आओ धीरे-धीरे चेतन आतम/(आनन्द) भुवन में...2
आनन्द भुवन में चेतन अपने भवन मेंऽऽऽ...
अपने भवन में चेतन... अपने रूप में...।। (टेक)

शरीर इन्द्रियों से परे मन है, मन से परे चेतन भाव हैऽऽ
चेतन भाव ही तेरा भुवन/(भवन) है, उसी में तेरा आत्मानन्द है ।।1।।
आओ धीरे...

आनन्द घन रूप तेरा ही घर है, उसी की प्राप्ति का विश्वास/(प्रतीति) कर है/(ले)ऽऽ
उसी की प्राप्ति हेतु संकल्प कर है, सतत प्रयत्न से मनन कर है/(ले) ।।2।।
आओ धीरे...

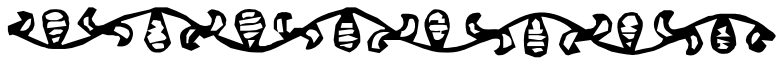

विषय कषायों को दूर भी कर है, संक्लेश भावों को क्षीण/(नाश) भी कर हैऽऽ
धैर्य व संयम से समता वर है, सहनशीलता से क्षमा को कर है ।।3।।
आओ धीरे...

शत्रु व मित्रता का भाव न धर है, राग व द्वेष को समाप्त कर हैऽऽ
अपना पराया का भेद न कर है, समत्व का भाव सर्वत्र कर है ।।4।।
आओ धीरे...

हानि-लाभ को चित्ते न धर है, ख्याति-पूजा को दूर ही कर हैऽऽ
ईर्ष्या व घृणा को शान्त ही कर है, दीन अहं का भाव न धर है ।।5।।
आओ धीरे...

द्रव्य आगम/(श्रुत) को भाव में कर है, भाव से भावना स्वयं की कर हैऽऽ
इसी से वैभाव दूर ही कर है, चित्त से चैतन्य शुद्ध करो है ।।6।।
आओ धीरे...

अभिन्न षट्कारक को वर है, अन्य प्रपंच को दूर कर हैऽऽ
निज को निज द्वारा प्राप्त कर है, अन्य से अप्रभावित रहा करो रे ।।7।।
आओ धीरे...

आनन्द घन रूप तेरा निज धर, प्राप्त करना तेरा स्व अधिकार/(अभी तेरा ही अधिकार)
निज को भुलाकर भटक रहा तू, अब तो प्राप्त कर चेतना जगाकर ।।8।।
आओ धीरे...

स्व-वैभव का श्रवण कर ले, उसी का अध्ययन मनन कर लेऽऽ
ध्यान व लीनता स्वयं में कर ले, सच्चिदानन्दमय स्वयं को वर ले/(तेरा ही घर है)।।9।।
आओ धीरे...

'कनकनन्दी' तेरा अमूर्त घर है, अजर-अमर शाश्वत घर है/(पुर है)ऽऽ
इसी के अतिरिक्त कहीं न वास कर, तब ही मिलेगा आनन्द घन पुर/(आनन्द भरपूर)।।10।।
आओ धीरे...

झाडोल (फ.) 8.4.2012, रात्रि 12.39 से 2.14, 5.53 प्रातः

परिच्छेद - 2

संकीर्ण शिक्षा का स्वरूप एवं फल

(विकृति को त्यागकर संस्कृति को पाले धार्मिक जन)

(जैन धर्मावलम्बियों के लिए आह्वान)

(तर्जः- छोटी छोटी गैया...)

आज धार्मिक जनों को क्या हो गया,
धर्म से विपरीत जीवन हो गया।

कभी दीपक नीचे तम होता था,
आज बल्ब के ऊपर अन्धेरा हो गया ।।1।।

वीतरागी धर्मी वित्तरागी हो गये,
अनेकान्त धर्मी संकीर्ण हो गये।

आत्मकल्याण मार्ग से च्युत हो गये,
परमार्थ स्थान में स्वार्थी हो गये ।।2।।

भेद-विज्ञान हो भेद-भावी हो गये,
अपरिग्रह छोड़कर संग्रही हो गये।

स्याद्वाद छोड़कर मिथ्यावादी हो गये,
जिनवाणी (को) त्यागकर जनवादी हो गये ।।3।।

सिद्धान्त रहित शंकाशील हो गये,
गुणग्राही न होकर गुणद्वेषी हो गये।

क्षमाभाव रहित क्षमावाणी हो गई,
आत्मदृष्टि बदले दोषदृष्टि हो गई ।।4।।

मोक्षलक्ष्मी बदले धनलक्ष्मी पूजते,
द्रव्य अहिंसा हेतु भावहिंसा करते।

दूरदर्शन में रुचि आत्मदर्शन बिना,
पढ़ाई में रुचि धर्मज्ञान के बिना ।।5।।

धर्म भी करते आज धन निमित्त,
धर्म के पहले करते धन अर्जित।

धन से धर्म का आज करते मूल्य,
धन बिना सच्चा धर्म होता अमूल्य ।।6।।

आत्मशान्ति विरहित धर्म हो गया,
दिखावा के लिये सब धर्म हो गया।

धनजनमान हेतु करते धर्म,
ज्ञान वैराग्य विरहित करते धर्म ।।7।।

न धर्मो धार्मिकैः बिना या स्वभाव/(सिद्धान्त),
इसीलिये जैनीओं का नहीं प्रभाव।

वैश्विक धर्म आज क्षीण हो रहा,
इसीलिये 'कनक' को दुःख हो रहा ।।8।।

दोष निवारण हेतु यह रचना हुई,
धर्म प्रभावना हेतु कविता हुई।

द्वेष-घृणा-दृष्टि मेरी नहीं है,
संस्कृति को पाले सब भाव यही है ।।9।।

झाडोल (फ.) 8.4.2012 मध्याह्न 4.49

''मानव की विषमतापूर्ण विचित्र प्रवृत्ति''

(तर्जः- चौपाई...)

अति विचित्र है मानव वृत्ति... कथनी करनी में विषम प्रवृत्ति।
तनमन काम में समता नहीं... हिताहित विवेकपूर्ण भी नहीं ।।ध्रु.।।

स्व-हित चाहे अहित करे... स्वास्थ्य चाहे पर तम्बाखू खाये।
प्रेम भी चाहे द्वेष भी करे... शान्ति चाहे पर तनाव करे ।।1।।

अन्य से सन्मान सदा ही चाहे... पर सन्माननीय कार्य न करे।
स्वयं के लिये अधिकार चाहता... स्वेच्छा से कर्त्तव्य न करता ।।2।।

व्यायाम के बिन स्वास्थ्य चाहता... योगासन प्राणायाम न करता।
तनाव करता अयोग्य खाता... भ्रमण व परिश्रम न करता ।।3।।

स्व-अनुकूल अन्य को चाहता... स्वयं को सुयोग्य नहीं बनाता।
अन्य सुधरे सदा चाहता... नहीं स्वयं का सुधार करता ।।4।।

नीति-नियम कानून बनाता... अन्य ही पाले यही चाहता।
स्वेच्छा से पालन नहीं करता... प्रयोग स्वार्थानुरूप करता ।।5।।

स्व-अपेक्षा की पूर्ति चाहता... परापेक्षा की उपेक्षा करता।
स्व-विकास का गर्व करता... पर-विकास से ईर्ष्या करता ।।6।।

श्रेष्ठपने का ढोंग करता... इसी से विपरीत काम करता।
बिन साधना के साध्य चाहता... साधन को ही महत्व देता ।।7।।

भाग्य से ही सफलता चाहता... सुयोग्य पुरुषार्थ कम करता।
पढ़े हुए का ज्ञान न करता... ज्ञान-अनुरूप कार्य न करता ।।8।।

सदा सर्वदा सुख ही चाहता... तद्नुकूल वह नहीं बनता।
दुःख के योग्य पात्र वह बनता... सुख-प्राप्ति की इच्छा करता ।।9।।

प्रकृति से प्रतिकूल चलता... प्रकृति को विकृत भी करता।
स्व-अनुकूल प्रकृति चाहता... प्रकृति के अनुकूल न बनता ।।10।।

पाप-खण्डने पाप करता... क्रियाकाण्ड से ही मोक्ष चाहता।
समता शान्ति व निस्पृह वृत्ति... धर्म में इनकी नहीं प्रवृत्ति ।।11।।

आदर्श महापुरुषों के न माने... उनसे अपने स्वार्थ को साधे।
पूजाराधना का दिखावा करता... आदर्श के अनुरूप न चलता ।।12।।

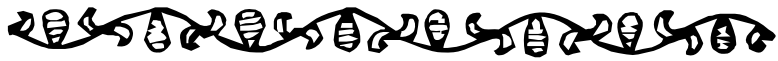

इससे मानव श्रेष्ठ न बनता... असफलताओं से त्रस्त रहता।
इन विषमताओं को जो त्यागे... सफल हो सुख शान्ति में झूले ।।13।।

तीर्थंकर राम बुद्ध आदि मानव... दोष त्याग से बने महामानव।
दोष त्याग हेतु रचना सही... 'कनक' के भाव अन्यथा नहीं ।।14।।

झाड़ोल (फ.) 13.4.2012, रात्रि 11.22

व्यंग्यात्मक सुधारपरक कविता

"मन्यमाना सभ्य मानव की असभ्य-बर्बर वृत्ति"

(रागः सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों!...)

सुनो सुनो हे सभ्य मानव!... तुम्हारी असभ्य बर्बर वृत्ति।
सत्ता-सम्पत्ति बुद्धि के द्वारा... जो करते हो क्रूर प्रवृत्ति ।।ध्रु.।।

सत्तादि द्वारा शोषण करते हो... जो होते हैं सत्तादि हीन।
शोषण से सत्तादि प्राप्त करके... बन जाते हो और महान्।।

यह प्रवृत्ति तुम्हारी होती... राजनीति धर्म अर्थतन्त्र में।
राजतन्त्र व समाजवाद... लोकतन्त्र या पूंजीवाद में।। (1)

राज्यविस्तार या धर्मप्रचार... उपनिवेश व व्यापार द्वारा।
अन्य राज्यों पर कर आक्रमण... विध्वंस शासन सत्तादि द्वारा।।

देश-विदेशों के इतिहास हैं... कलंकित इस कृति के द्वारा।
कलंकित इस कृतित्व को तू... महिमा-मण्डित किया स्वयं के द्वारा।।(2)

महाभारत व रामायण युद्ध... राजा चक्री के दिग्विजय।
सिकन्दर व चैंगेज खाँ... अकबर बाबर के दिग्विजय।।

अंग्रेजी फ्रांस के उपनिवेश... अथवा रोमन साम्राज्य गाथा।
दोनों विश्वयुद्ध सभ्य मानव की... गा रहे हैं बर्बर गाथा।। (3)

दासप्रथा व कालागोरा-भेद... बलिप्रथा व दहेज हत्या।
जातिमद आदि अनेक मद... शोषक-शोषित भ्रूणों की हत्या।।

मालिक मजदूर या बन्धुआ मजदूर... ऊँच-नीच की घृणित प्रथा।
गरीब असहाय बाल व महिला... कृषक शिल्पि की शोषण कथा।। (4)

रोगी पशु-पक्षी प्रकृति शोषण... आतंकवाद व नृशंस हत्या।
डाकिनी-प्रथा व बालविवाह... अनमेल विवाह फैशन प्रथा।।

व्यसन विलास पशुक्रूरता... मिलावट अति व्याज की प्रथा।
अश्लील सिनेमा संगीत नृत्य... नशा सेवन सभ्य की गाथा।। (5)

मानव अभी तू सभ्य न बना... नैतिक अध्यात्म दूर की गाथा।
सभ्य साक्षर संस्कारवान् बनो... फिर गाओ हे! नैतिक गाथा।।

नैतिक से धार्मिक बनो... जिससे तुम्हारी सुधरे दशा।
उदार सहिष्णु क्षमावान् बनो... दया परोपकार से सुधरे दशा।। (6)

पावन समता से आध्यात्मिक बनो... जिससे मिलेगी मोक्ष की दशा।
इसी हेतु ही ''कनकनन्दी''... प्रयासरत अन्तरंग की दशा।।

सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों... तुम्हारी असभ्य-बर्बर वृत्ति।
सत्ता-सम्पत्ति बुद्धि के द्धारा... जो करते हो क्रूर प्रवृत्ति।। (7)

खाखड़- 24.5.2012, मध्याह्न 5.18

व्यंग्यात्मक सुधारपरक कविता

''दुर्जनों की पहचान-कथनी-करनी में भिन्नता''

(रागः अच्छा सिला दिया...)

''सत्यमेव जयते'' का तो गान गाते, असत्यमय काम लोग करते।
''परस्पर उपग्रहो'' वाक्य लिखते, वैर-विरोध-ईर्ष्या-द्वेष करते।। (ध्रुवपद)

''अहिंसा परमो धर्म'' नारा लगाते, पर्यावरण विनाश खूब करते।
''हित-मित-प्रिय'' का गाना गाते, अहित-अप्रिय खूब बोलते।। (1)

''जीओ और जीने दो'' नारा लगाते, ''जीओ और जाने दो'' काम करते/
''जीव जीवस्य भक्षण'' काम करते।
''विद्या ददाति विनय'' पाठ रटते, उद्दण्ड दुराग्रह काम करते।। (2)

''यथा बोया तथा पाया'' नीति बोलते, कर्त्तव्य बिना अधिकार चाहते।
''आत्मदीप परदीप'' श्लोगन बोलते, अज्ञानमय भाव काम करते।। (3)

''लोभ पाप का बाप'' लोग कहते, शोषण भ्रष्टाचार खूब करते।
''सन्तोष परम सुख'' लोग कहते, भोग लालसा तृष्णा बहु करते।। (4)

स्वर्ग-नरक-मोक्ष रट्ट लगाते, उत्तम भाव-व्यवहार नहीं करते।
''वस्तु स्वभाव धर्म'' लोग बोलते, जड़ (पर) वस्तु संग्रह में लगे रहते/
(अशान्त तनाव से युक्त रहते)।। (5)

स्वयं को अनेकान्ती जन मानते, उदार सहिष्णु नहीं रहते।
स्याद्वाद का गुणगान करते, पूर्वाग्रह दुराग्रह नहीं छोड़ते।। (6)

गुरु गुणीजन की पूजा करते, उनका आदर्श नहीं मानते।
तोता रटन्त पाठ को महत्व देते, अनुकरण अनुभव नहीं करते।। (7)

सत्य समता शान्ति नारे बोलेंगे, जीवन में तिरस्कृत उसे करेंगे।
''नहि ज्ञानेन सदृश्यमिह'' कहेंगे, आध्यात्मज्ञान से रिक्त रहेंगे।। (8)

भाव हिंसा को महाहिंसा कहेंगे, पवित्र भावना से रिक्त रहेंगे।
ढोंग-पाखण्ड नहीं कर बोलेंगे, सरल-सहज से शून्य रहेंगे।। (9)

शाकाहार का गुणगान करेंगे, फैशन-व्यसन में मस्त रहेंगे।
सत्यग्राही बनने का पाठ पढेंगे, नकलची जीवन ढोते रहेंगे।। (10)

परोपकार महापुण्य बोलेंगे, पर अपकार के काम करेंगे।
उदार पवित्र भाव नहीं रखेंगे, गोमुख व्याघ्र सम काम करेंगे।। (11)

यह भाव-व्यवहार युक्त नहीं है, विकास करने का मार्ग नहीं है।
मन वचन काय से पावन बनो, 'कनक' की भावना महान् बनो।। (12)

खाखड़- 22.5.2012, मध्याह्न - 3.18

व्यंग्यात्मक सुधारपरक कविता

''दुर्जन की प्रकृति एवं प्रवृत्ति''

(रागः रघुपति राघव राजा...)

मन वच काय से सत्य प्रवृत्ति, सज्जन महात्मा को होती प्रवृत्ति।
मन वच काय से भिन्न प्रवृत्ति, दुर्जन पापात्मा की होती वृत्ति ।।ध्रुवपद।।

''रघुपति राघव राजाराम'', सब कुछ मुझे ही दे दो भगवान्।
''सत्यमेव जयते'' कहना काम, सब कुछ असत्य से करना काम।। (1)

'''बगल में छुरी और मुँह में राम'', कथनी करनी में होता न साम्य।
''परस्पर उपग्रहो'' मेरे लिए काम, अन्य के काम हेतु जाने भगवान्।। (2)

''अहिंसा परमो धर्म'' स्व रक्षा काम, स्वार्थपूर्ति हेतु हिंसा से काम।
''जीओ और जीने दो'' बोलना काम, स्वयं के जीने हेतु मारना काम।। (3)

मुणे तो सब कहे ''हित-मित-प्रिय'', अन्य को मैं कहूँ मुझे जो प्रिय।
''आत्मानं प्रतिकूलानि'' मेरे लिए ग्राह्य, अन्य से व्यवहार मुझे जो ग्राह्य।। (4)

मन्यमाना मेरा सब होता ही सत्य, अन्य की मान्यता सब ही असत्य।
Mine is Right सर्वथा सत्य, Right is Mine मानूँ न सत्य।। (5)

पापात्मा का पतन अवश्य होता, सज्जन महात्मा का विकास होता।
पाप प्रवृत्ति के वर्जन हेतु, 'कनक' की रचना सृजन हेतु।। (6)

खाखड़ 23.5.2012, मध्याह्न 5.01

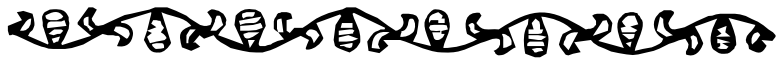

"मोह का साम्राज्य"

(अशान्तिप्रद मोही जीवों की विपरीत-प्रवृत्ति)

(मोही जीव विपरीत भाव-व्यवहार करके स्वयं को श्रेष्ठ-ज्येष्ठ मानता है)

(रागः दिल है छोटा-सा...)

देखो! देखो! देखो! मोह को देखो!... संसारी जीवों के काम को देखो!
संकीर्ण स्वार्थ भाव को देखो!... अन्याय अत्याचारों को देखो! (ध्रु.)

अनावश्यक काम को देखो!... फैशन-व्यसन-अहं/(दम्भ, मद) को देखो!
आलस्य प्रमाद भय को देखो!... वाद-विवाद व कलह देखो! (1)

क्रोध-मान-काम-लोभ को देखो!... ढोंग पाखण्ड व मिथ्यात्व देखो!
ठगी मायाचारी शोषण देखो!... मिलावट भ्रष्टाचार को देखो! (2)

राजा महाराजा चक्री को देखो!... आक्रमण युद्ध हत्या को देखो!
चोरी लूटपाट विनाश देखो!... बलात्कार अत्याचार को देखो! (3)

अन्य को दास बनाना देखो!... दास/(गुलाम) प्रजा का शोषण देखो!
ठाट बाट भोग विलास देखो!... मनमाना श्रेष्ठपना को देखो! (4)

मन्त्री सेनापति सेना को देखो!... राजा के पाप के भागी को देखो!
कृषक अन्नदाता को देखो!... श्रमिक प्रजा का शोषण देखो! (5)

ढोंगी पाखण्डी धार्मिक देखो!... मिथ्या आडम्बर काम को देखो!
बलि सतीदाह भेदभाव/(विद्वेष) देखो!... अन्य धर्मी से घृणा को देखो!(6)

धर्मप्रचार का माध्यम देखो!... आक्रमण युद्ध हत्या को देखो!
अत्याचार भ्रष्टाचार को देखो!... आतंकवाद राज्य-विस्तार देखो! (7)

अभी के मन्त्री सांसद देखो!... राष्ट्रपति कर्मचारी को देखो!
भ्रष्टाचारी तानाशाही को देखो!... मन्यमाना लोक सेवक देखो! (8)

सेठ साहुकार व्यापारी देखो!... मालिक उद्योगपति को देखो!
मिलावट ठगी शोषण देखो!... पापी धनी के अहं को देखो! (9)

हीरो हीरोइन नटों को देखो!... अश्लील कामुक्त कार्य को देखो!
मनमाना महानायक देखो!... इनके पुजारी मानव देखो! (10)

भौतिकता हेतु पाप को देखो!... धर्म के विरुद्ध कर्म को देखो!
अनर्थकारी कार्य को देखो!... उसी के निमित्त पाप को देखो! (11)

गप्पबाजी निन्दा चुगली देखो!... ईर्ष्या-द्वेष-घृणा भाव को देखो!
बड़प्पन का दिखावा/(नकल) देखो!... अकल बिना नकल देखो! (12)

शान्ति के नाशक कामों को देखो!... अज्ञानी मोही जीवों को देखो!
आत्मपतन के कार्यों को देखो!... उसी में आसक्त जीवों को देखो! (13)

इनसे भिन्न भावों को देखो!...शान्ति/(मोक्ष) प्राप्ति के कार्यों को देखो!
ज्ञान वैराग्य समता देखो!... 'कनक' निस्पृह भाव को देखो! (14)

झाड़ोल (फ.) 26.4.2012 रात्रि 11.01

''आत्म पतन के सहयोगी मोही जीव''

(स्व-सांसारिक स्वार्थ के सहयोगी हैं मोही मानव)

**(रागः 1. भातुकलीच्या खोळा मधली (मराठी राग)... 2. नरेन्द्र छन्द...
3. बस्ती-बस्ती पर्वत-पर्वत... 4. आत्मशक्ति से...)**

यदि है करना आत्मविकास, स्वयं ही करो प्रयत्न रे।...2
सांसारिक जन न होंगे सहयोगी, पतन हेतु प्रयत्न रे।। (टेक)

सांसारिक स्वार्थ साधने वाले, होते हैं अधिक जन रे।
आत्मिक विकास करने वाले, होते हैं विरल जन रे।। (1)

मोही अज्ञानी कामासक्त जन, न जाने आत्मिक हित रे।
संकीर्ण स्वार्थ में लिप्त हुए जन, करते अन्य को लिप्त रे।। (2)

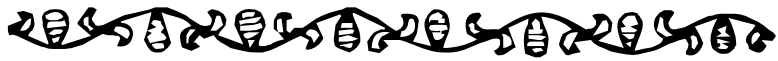

अनादि अनन्त कर्मबद्ध जन, स्वयं भी होते पतित रे।
अन्य को भी पतित करते, यथा ही पत्थर पोत रे।। (3)

यथा ही चोर अन्य को भी, सिखाता चोरी का काम रे।
तथा ही मोही अज्ञानी जन, अन्य को सिखाते मोह रे।। (4)

दुर्गन्ध वस्तु दुर्गन्ध फैलाती, तथाहि मोहान्ध/(अज्ञानी) जन रे।
बुझा हुआ जो दीप समान, कहाँ से लाये सुज्ञान रे।। (5)

माता पिता भाई कुटुम्ब भार्या, पति या पुत्र पुत्री रे।
निज निज के स्वार्थ के कारण, बनते आत्मिक वैरी रे।। (6)

पास-पडौसी व समाज जन भी, न होते आत्मिक बन्धु रे।
जन्ममरण व विवाह निमित्ते, साधते अपने स्वार्थ रे।। (7)

तीर्थंकर बुद्ध साधु सन्त साथ, ऐसा ही होता भी आया रे।
आत्मविकास में सहायक कम, बाधक अधिक हुआ रे।। (8)

दीक्षा लेने में भी बनते बाधक, साधना में भी विघ्न रे।
मोक्ष या मरण अनन्तर ही, करते अधिक नमन रे/(बनते अधिक पूज्य रे)।।(9)

ध्यान भी रत मुनिवरों को, जलाया गया है अग्नि से।
ताडन मारन अपमान भी, किया गया है मानवों से।। (10)

तीर्थंकर मुनि महावीर को, कष्ट दिया है मानवों ने।
सुकरात व ईसा मसीह का, प्राण हरा है मानवों ने।। (11)

मीराबाई को विष पिलाया, ये ही मोही मानव ने।
आध्यात्म जन को कष्ट दिया, सदा ही दुष्ट मानवों ने।। (12)

क्रूर पशु से भी अधिक क्रूर, होता है मोही मानव रे।
हिताहित व कार्य-अकार्य को, जानता नहीं है मानव रे।। (13)

इसलिए तो ऐसा मानव, जाता है घोर नरक रे।
संसार चक्र में भ्रमण करता, करके पाप अनेक रे।। (14)

यदि रे मानव स्वयं तू जब, न करता है आत्मकल्याण।
बाधक तू क्यों बनता रे, जो करता है आत्मकल्याण।। (15)

ऐसा यदि तू काम करता (है), तू न यथार्थ मानव रे।
मानव आकार के दानव तू, अथवा वनमानव रे।। (16)

अतः हे मानव स्व को जानो, करो है आत्मविकास।
'कनकनन्दी' इसके लिए, करे हैं सदा प्रयास।। (17)

झाड़ोल (फ.) 25.4.2012, रात्रि 9.25 से 11.14

(आर्यिका सुनिधिमती माताजी के अनुरोध से यह कविता बनी।)

''विनाश उन्मुखी सफलता एवं सर्वोदयी सफलता''

(रागः- मनहरण छन्द)

बहिरंग विकास को (ही) सफलता मान लिया।
पढ़ाई बड़ाई दमड़ी चमड़ी (को) सफलता मान लिया।। ध्रु.।।

पुरुषार्थ चारों और आश्रमों को भूल गया।
पढ़ाई बड़ाई दमड़ी चमड़ी में मस्त हुआ।।
इसलिये मानव का अन्तरंग शून्य हुआ/(रहा)
आत्मज्ञान सदाचार आनन्द से दूर हुआ।
पढ़ाई आज तोतारटन्त डिग्री आधारित हुई।।
संवेदना संस्कार व सदाचार रिक्त हुआ।
सेवा दान दया क्षमा धैर्य शान्ति से दूर हुआ।।
बड़ाई हेतु पढ़ाई (करे)चमड़ी दमड़ी चमकाये।
इसीलिये सदाचार आनन्द से दूर हुआ।। (1)

बड़ाई के लिये करे धर्म कर्म खाना पीना।

फैशन व व्यसन या वेश-भूषा लेना-देना।।
दमड़ी हेतु पढ़ाई (से) चमड़ी तक बेच रहा।
इसी हेतु धर्मशील सदाचार (भी) बेच रहा।।
भ्रष्टाचार मिलावट (व) मादक द्रव्य बेच रहा।
नकली वस्तु (शील) सौन्दर्य राष्ट्र हित बेच रहा।।
बुचडखाना (व) मद्य मांस तम्बाकू बेच रहा।
हत्या चोरी बेईमानी कालाधन चल रहा।। (2)

चमड़ी सजाने वाला चर्मकार बन गया।
चर्बी खून हड्डी से चमड़ी को सजा रहा।।
चमड़ी महाव्यापार सर्वत्र ही फैल रहा।
अंग प्रदर्शन द्धारा शील (कौमार्य) बेच रहा।।
विद्यालय कार्यालय (व) बाजार औ सिनेमा में।
टी.वी. क्लब कार्यक्रम सौन्दर्य स्पर्द्धा में।।
इससे मानव का पतनमय विकास हुआ।
सफलता (मृग) मरीचिका उसे भ्रमित जो किया।। (3)

तनाव फोबिया चिन्ता तन मन रोगी हुआ।
सुख शान्ति संतुष्टि से रहित हो जी रहा।।
आत्महत्या से जीवन को समाप्त भी कर रहा।
सफलता का भस्मासुर स्वयं को (ही) जला रहा।
अभी तो मानव चेतो साक्षरी व सभ्य बनो।
संस्कारी व सदाचारी आध्यात्मिकमय बनो।।
तब मिले सफलता सर्वोदयी बनोगे।
कनकनन्दी भावना है' सुख-शान्ति पाओगे।। (4)

झाडोल (फ.), दि=6/5/2012, रात्रि 2.32

''स्व-जाति हिंसक मानव-जाति''

(मातृ-जाति की हत्यारिनी मानव जाति)

(रागः सुनो सुनो हे दुनियावालों...)

सुनो सुनो हे! मानव जाति, तेरी जाति की हिंस्र प्रवृत्ति।
जिससे (तू) जन्मा जिसे जन्माया, उसकी हत्या की जघन्य वृत्ति ।।ध्रु.।।

जो तेरी माँ पत्नी पुत्री, बहन काफी मौसी भी होती।
जन्मदात्री भोग्या पन्ती, पालिका सेविका सहोदरी होती।।

गृहलक्ष्मी संस्कारदात्री, शिक्षिका रक्षिका वात्सल्यमूर्ति।
ममतामयी क्षमादात्री, धैर्यमूर्ति करूणामूर्ति।। (1)

जिसे पूजता देवी रूप से, मोहित होता रूप रंग से।
जिसे प्राप्त हेतु करे तू काम, विचित्रमय विविध काम।।

उसे तू मारो गर्भ से लेकर, जीवन के हर क्षेत्र में।
भ्रूण-हत्या दहेज हत्या, बलात्कार रूप में विविधहत्या।। (2)

इसी में सहभागी पुरुष-नारी, दोनों ही राक्षस तथा राक्षसी।
माता-पिता बन्धुसगा-सम्बन्धी, डॉक्टर पुरुष तथा ही नारी।।

प्राचीनकाल की बलिप्रथा, अभी तो सर्वत्र प्रसिद्ध हुई।
घर से लेकर अस्पताल तक, सर्वत्र वधशाला हुई।। (3)

पहले था धर्म में अन्धविश्वास, अभी हुये हैं स्वार्थ से/(में) अन्ध।
अभी अधिक साक्षरी अन्ध, धनीलोग व शहरी अन्ध।।

पहले खड्ग से हत्या/(बलि) होती थी, अभी यंत्रों से भी हत्या है होती।
अभी की हत्या हुई हाईटेक, संख्या व क्रूरतापूर्ण भी अधिक।। (4)

शिक्षा विज्ञान का किया कुयोग, विकास बदले विनाश काम।
अभी तू साक्षरी राक्षसी बनी, माता बहिन की हत्यारी बनी।।

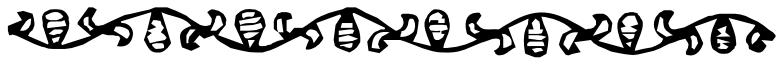

तुम हो साक्षर सभ्य बनो, संस्कार संस्कृति दया को पालो।
स्व-पर-विश्व हितैषी बनो, 'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो।। (5)

झाड़ोल (फ.) 8.5.2012, मध्याह्न 4.30

''हे मानव विनाशक युद्ध त्यागो, विकास के कर्म करो''

(सबसे विनाशक है मानव प्रजाति)

(रागः सुनो सुनो हे दुनिया वालों...)

सुनो सुनो हे! मानव जाति, तेरी जाति की नीच प्रवृत्ति।
स्वयं को माने महान् जाति, तो भी करती है क्षुद्र प्रवृत्ति ।।ध्रु.।।

महामानव व सज्जन लोग, तेरी जाति की सच्ची विभूति।
शिक्षा संस्कृति आध्यात्मिक भी, इन्हीं के द्वारा हुई प्रवृत्ति।।

अन्यथा तेरी जाति के द्वारा नीच प्रवृत्ति की होती जागृति।
समस्त पाप व्यसन मद, तेरी जाति द्वारा पाती सम्वृद्धि।। (1)

क्रोध मान माया लोभ वृत्ति, तेरी जाति में अधिक होती।
इसलिये ही तेरी जाति, चारों गति में गमन करती।।

नारकी मर के नरक न जाता, नर से वह कम पाप कमाता।
शेर भी सप्तम नरक न जाता, तू सप्तम नरक भी जाता।। (2)

धरती को तू बांट डाला, देश विदेश की सीमा बान्धा।
प्रकृति का शोषण किया, अन्य प्राणी का विध्वंस किया।।

अन्य देशों को तूने लूटा, हतया चोरी डाका डाला।
करोड़ों स्व-जाति को मारा, पर नारी से बलात्कार किया।। (3)

स्व-जाति को दास बनाया, सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि पाया।
राजा सम्राट विजयी बना, स्वयं को महान् सिद्ध भी किया।।

युद्ध हेतु (तू) सेना बनाई, उन्हें शुद्ध विद्या सिखाई।
लाठी प्रभृति/(आदि) अणुबम बनाया, रथ राकेट तक बनाया।। (4)

योग्य युवक सैनिक बने, महान् काम से वंचित हुये।
कृषि व्यापार कला व सेवा, आत्मविकास से वंचित हुये।।

उत्तम साधन धन व जन, समय शक्ति व पशु धन।
घातक युद्ध में हुये प्रयुक्त, स्वजाति नाशक बना ये योग।। (5)

स्वजाति को जो अधिक मारा, वीर अतिवीर पदवी धारा।
अधिक देश को जो दास बनाया, विजयी राजा पदवी पाया।।

इसी हेतु स्व-जन को मारा, भाई बन्धु पिता-माँ को मारा।
तो भी स्व को श्रेष्ठ जताया, अन्य से स्व का गुण-गवाया।। (6)

रावण कंस व जरासंध, चँगेज खाँ व सिकन्दर।
नेपोलियन व हिटलर, तेरी जाति के ये नरासुर।।

विध्वंसकारी तेरी ये जाति, सत्कार्य में यदि होती प्रवृत्ति।
इससे निवृत्ति यदि हो जाती, नरासुर नहीं महान् होती।। (7)

उदार सहिष्णु वृत्ति अपनाती, सत्य समता शान्ति को पाती।
तन मन आत्मा से पवित्र होती, वैर विरोध वृत्ति नश जाती।।

अन्याय अत्याचार न होते, पृथ्वी के खण्ड-खण्ड न होते।
आक्रमण युद्ध नाश न होता, शोषक-शोषित दास न होते।। (8)

सर्वोदय साम्यवाद भी होते, आतंकवाद भय न होते।
वैश्विक कुटुम्ब साकार होता, लोकतंत्र विश्व बन्धुत्व होता।।

इसी हेतु धर्म-उदय हुआ, उसका प्रचार-प्रसार हुआ।
न्याय संविधान विधान बना, परिवार व समाज बना।। (9)

इनका भी तूने किया विनाश, भस्मासुर सम नरराक्षस।
अभी तो राक्षसी वृत्ति को त्यागो, उत्तम कार्य को तुम तो भजो।।

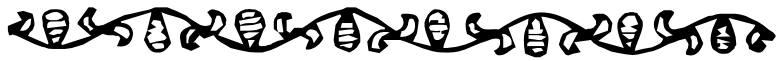

मानव से महामानव बनो, क्रमशः भगवान् भी बनो।
अतएव 'कनक' तुम्हें जगाता, तुम्हारा दुर्गण तुम्हें बताता।। (10)

झाड़ोल (फ.) 8.5.2012, रात्रि 12.08

"विज्ञापन की आत्मविज्ञप्ति"

(रागः 1. जय हनुमान ज्ञान... 2. मैं हूँ तम्बाखू...)

मैं हूँ विज्ञापन सबसे निराली... सबसे निराली मेरी शान।
लोभी-स्वार्थी मेरा जन्मदाता... मूर्ख मानवों की मैं हूँ जान ।।ध्रु.।।

उपभोक्ता को मोहित हेतु... जादू विद्या सम मेरा काम।
ढपोर/(गपोड़) शंख समान मैं हूँ... बोलता अधिक करता कम।। (1)

मेरे निर्माण व प्रचार हेतु... करोड़ो रुपया खर्च होता।
पत्र-पत्रिका टी.वी. द्वारा... मेरा प्रदर्शन बहुत होता।। (2)

नट-नटी/(हीरो-हीरोइन) व खिलाड़ी द्वारा... मोहिनी नाटक अभिनय होता।
जोकर भाण्ड विदूषक सम... मेरा गुणगान उनसे होता।। (3)

अश्लील बोल्ड पोज के द्वारा... मेरा प्रदर्शन उनसे होता।
अवास्तविक या बढ़ा-चढ़ा कर... मेरा स्तुतिगान उनसे होता।। (4)

कुछ मिनटों के विज्ञापन हेतु... करोड़ों रुपये नटादि लेते।
इसका खर्च (मूर्ख) ग्राहक देता... सस्ता माल भी महंगा लेता।। (5)

अप्रयोजन या मादकवस्तु... सौन्दर्य प्रसाधन (मैं) प्रचारकर्त्ता।
चमड़ी बाल नाखून हेतु... मेरा आवश्यक अधिक होता।। (6)

मृगमरीचिका जादूविद्या सम... मुझसे मोहित विमूढ़ जन।
मुझसे ज्ञापित तुच्छ वस्तु भी... उपभोग करते गँवाते धन।। (7)

धन के साथ स्वास्थ्य गँवाते... जिससे गँवाते धन व जान।
तथापि मेरी मोहिनी विद्या... मूर्खों के ऊपर करे शासन।। (8)

विवेकी संयमी मानव द्वारा... मेरी शक्ति का होता खण्डन।
इसीलिये तो 'कनकनन्दी'... मानवजाति को दे सद्ज्ञान।। (9)

झाड़ोल (फ.) 8.5.2012 रात्रि 10.36

"भ्रष्टाचार का साम्राज्य देखो"

(रागः 1. दिल है छोटा सा, छोटी सी आशा... 2. चौपाई...)

देखो! देखो! देखो! सर्वत्र देखो!, भ्रष्टाचार का साम्राज्य देखो!
शिक्षा में देखा! दीक्षा में देखो!, राजनीति व न्याय में देखो!! (ध्रुवपद)

व्यापार देखो! कला में देखो!, नौकरशाह डॉक्टर देखो!
मंत्री को देखो! तंत्री को देखो!, चपरासी व सरकार देखो!! (1)

विद्यार्थी देखो! शिक्षक देखो!, ट्यूशन के ट्यूटर देखो!
विद्यालयों के प्रवेश देखो!, परीक्षा तथा फल भी देखो!! (2)

धर्म में देखो! कर्म में देखो!, प्रवचन क्रियाकाण्ड में देखो!
ढोंगी पाखण्डी गुरु को देखो!, मोही व लोभी चेलों को देखो!! (3)

M.L.A. देखो! M.P. भी देखो! मंत्री व मुख्यमंत्री भी देखो!
राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री, चपरासी से अधिकारी-मंत्री!! (4)

चुनाव देखो! घोषणा देखो!, सरकार के कार्यों को देखो!
वेतन देखो! भत्ता भी देखो!, देश-विदेश यात्रा भी देखो!! (5)

कानून देखो! वकील देखो!, गवाह पेशी तारीख देखो!
न्यायधीश व न्याय भी देखो!, समय धन की बर्बादी देखो!! (6)

व्यापार देखो! व्यापारी देखो!, क्रय-विक्रय वस्तु/(माल) भी देखो!
मापतोल मोल (भी) देखो!, मिलावट झूठ चोरी भी देखो!! (7)

कला भी देखो खेल भी देखो!, हीरो हीरोइन खिलाड़ी देखो!
गाना भी देखो! बजाना देखो!, फैशन व्यसन अश्लील देखो!! (8)

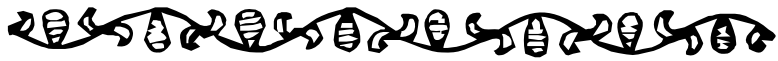

नौकर रूपी शाहों को देखो!, साक्षर रूपी राक्षस देखो!
सफेश पोश चोरों को देखो!, दिन दहाड़े डाका/(चोरी) को देखो!! (9)

पुलिस देखो! लाठी को देखो!, गोली व अश्रुगोली को देखो!
चोर अपराधी बॉस को देखो!, रक्षक नाम पे भक्षक देखो!! (10)

डॉक्टर देखो! काल को देखो!, कलि के भगवान् को देखो!
दवा व दवाकम्पनी देखो, दुकानदार व दलाल देखो!! (11)

यहाँ भी देखो! वहाँ भी देखो!, यत्र तत्र व सर्वत्र देखो!
तन मन व धन में देखो!, समय शक्ति श्रम में देखो!! (12)

व्यक्ति समाज समिति देखो!, खानपान वेश-भूषा में देखो!
आचार विचार संचार देखो!, कथनी-करनी-लेखनी देखो!! (13)

सर्वत्र भ्रष्टाचार को देखो!, भ्रष्टाचार का साम्राज्य देखो!
भ्रष्टाचार मुक्त व्यक्ति को देखो!, महान् व्यक्ति के व्यक्तित्व देखो!!(14)

लंका में भी विभीषण को देखो!, पंक में खिले पंकज देखो!
कनकनन्दी के प्रयास देखो!, कमल समान निर्लिप्त देखो!! (15)

झाडोल (फ.) 23.4.2012, रात्रि 1.50 से 3.15

''धनप्रधान भारत की दुर्दशा''

(तर्जः छोटी-छोटी गैया...)

आज श्रेष्ठ/(महान्) भारत को क्या हो गया?
आध्यात्मिक त्यागकर भौतिक हो गया।

जिससे भारत विश्वगुरु कहाया,
उसके त्याग से भ्रष्टदेश कहाया ।।1।।

आध्यात्मिकता से ज्ञान-विज्ञान पाया,
सभ्यता संस्कृति गणित शिक्षा पाया।

राजनीति कानून व्यापार कृषि,
अध्यात्म प्रभावी गृहाश्रमी, ऋषि ।।2।।

भौतिकमय वर्तमान हो गये,
ज्ञान-विज्ञान से लेकर ऋषि (भी) हो गये।

भौतिक ही लक्ष्य साधना साध्य रूप,
हर धर्म जाति क्षेत्र भौतिक रूप ।।3।।

पढ़ाई का प्रारम्भ भौतिक/(धन) से होता,
माध्यम साधन साध्य भौतिक होता।

ज्ञानदान के बदले में शोषण होता,
जिसका परिणाम भ्रष्टाचार में होता ।।4।।

'यथा बोया तथा पाया' सूत्र बताता,
पढ़ाई का परिणाम सर्वत्र दिखता।

बाल-काल का संस्कार आगे फलता,
पूर्वप्रयोग से आगे कार्य भी होता ।।5।।

हर क्षेत्र में आज (जो) भ्रष्टाचार भी होते,
प्रायः भौतिकता से प्रभावी होते।

पढ़ाई व राजनीति व्यापार सेवा,
कानून से लेकर राष्ट्र /(रक्षा) की सेवा ।।6।।

भौतिकता प्रभाव जहाँ अधिक होता,
उसकी महानता आज देश मानता।

इसी से भी हर क्षेत्र भौतिकमय हो गया,
शिक्षा से लेकर धार्मिक क्षेत्र में हो गया ।।7।।

शील सदाचार धर्म क्षीण हो रहे,
न्याय राजनीति देश बेचे जा रहे।

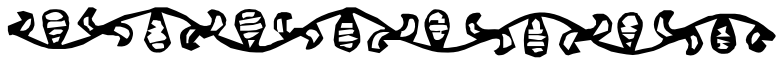

औषधि से भौजन तक विष हो गये,
नेता-अभिनेता आदि राजा हो गये ।।8।।

भौतिक रक्तबीज सर्वत्र हो रहा,
भस्मासुर के समान सब खा रहा।

धर्म भी तो आज धनमय हो गया,
धन-जन-मान हेतु धर्म हो गया ।।9।।

धनज्ञान धनमान धनधर्म हो गया,
धन बिना सब कुछ शून्य हो गया।

जिसके त्याग होते थे मानव महान्,
आज उसके ग्रहण से (होता) पापी भी महान् ।।10।।

त्याग-धर्म भी संग्रहमय हो गया,
त्याग उपदेश भी धन हेतु हो गया।

धन के एजेंट भी त्यागी-साधु हो गये,
गृहस्थ भी इनसे लाभ ले रहे ।।11।।

इसी से भारत आज नरक हो गया,
भ्रष्टाचारी धनिकों का स्वर्ग हो गया।

निस्पृह सन्तों की आज नहीं है डिमांड,
धनद सन्तों की होती सर्वत्र डिमांड ।।12।।

इसी से वैराग्य मेरा बढ़ता जा रहा,
धार्मिक आयोजन से भी विरक्त हो रहा।

'आदहिदं कादव्वं' बढ़ता जा रहा,
'कनक' का भाव अध्यात्म हो रहा ।।13।।

झाड़ोल (फ.)- 7.4.2012 रात्रि 11.05

“भारतीय शिक्षा के उद्देश्य, पद्धति, पुस्तकों में कमियाँ उसके परिणाम तथा निवारण”

1. **उद्देश्य**- शिक्षा का उद्देश्य सर्वांगीण विकास है तो उसमें फिर विशेषतः भारतीय शिक्षा का उद्देश्य तो जीवन निर्वाह, सर्वांगीण-सार्वभौम विकास के साथ-साथ परम सत्य की उपलब्धि, अध्यातम-ज्योति की प्राप्ति से युक्त अमृत स्वरूप बनना है। परंतु अभी शिक्षा का उद्देश्य साक्षरता (वर्णमाला का ज्ञान) हस्ताक्षर करना, परीक्षा में पास होना, डिग्री प्राप्त करना, नौकरी प्राप्त करना, सामाजिक मान्यता, प्रतिष्ठा प्राप्त करना, संकीर्ण स्वार्थ सिद्ध के गुर (उपाय) सीखना, विवाह की योग्यता प्राप्त करना, समय काटना आदि-आदि है।

2. **पद्धति**- भारत में प्राचीन काल में शिक्षा योग्य-विद्यार्थी के शारीरिक, मानसिक विकास होने के बाद योग्य शिक्षक द्वारा संकीर्ण स्वार्थ से रहित होकर आत्मीयता से अंक-अक्षर शिक्षा से लेकर यथा योग्य समस्त लौकिक, आध्यात्मिक विद्या का अधिगम कराया जाता था जिसके फलस्वरूप भारत अर्थ से लेकर परमार्थिक, लौकिक से लेकर आध्यात्मिक दृष्टि से सम्पन्न, श्रेष्ठ, ज्येष्ठ रहा जिसके कारण भारत ''विश्वगुरु'' कहलाया। किंतु वर्तमान में भारत में ऊपर वर्णित संकीर्ण उद्देश्य से प्रेरित शिक्षा पद्धति अनुदार है। प्रथमतः जिस अविकसित सुकुमाल शिशु अवस्था में माता की सुरक्षात्मक वात्सल्यमयी गोद/सेवा/निकटता चाहिए उस अवस्था में शिशु को अपरिचित कृत्रिम, दण्डात्मक वातावरण में क्षमता, इच्छा, रुचि के विपरीत औपचारिक रटन्त शिक्षा दी जाती है। मासूम शिशु की मानसिक समस्या, पीड़ा उस समय से और भी बढ़ जाती है जिस समय में स्व मातृभाषा से भी अपरिचित शिशु में एक विदेशी गुलामी भाषा के माध्यम से जानकारियाँ ठूँसी जाती हैं। जिस कोमल

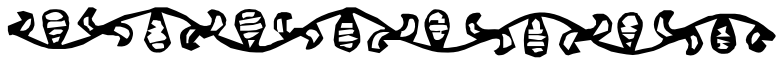

मासूम कली को प्राकृतिक रूप से मुक्त खिलना चाहिए उसे केवल उपरोक्त मानसिक घर्षण से कुचला ही नहीं जाता परंतु स्कूल बैग के दबाव से उसे दबा दिया जाता है जिसके कारण उसके सर्वांगीण विकास के बदले में प्रायः देश-विदेश के कोई भी व्यक्ति महान् कार्य करने में सक्षम नहीं होते है। भले ही दुष्ट कार्य करके कुख्यात क्यों न होते हो। ऐसी शिक्षा से तीर्थंकर, गणधर, ऋषि, बुद्ध, महात्मा, युगपुरुष, आदर्श पुरुष, समाज सुधारक, तत्त्ववेत्ता, दार्शनिक, न्यूटन, एडिसन, आइन्स्टीन, पाइथागोरस जैसे वैज्ञानिक भी नहीं बन सकते। भले ऐसी शिक्षा से डिग्रीधारी नौकर, नौकरशाही, फैशन-व्यसनी, आलसी, बेरोजगारी करोड़ों की संख्या में बन सकते है।

3. **पाठ्यपुस्तक-** साहित्य दर्पण के समान है। समतल स्वच्छ दर्पण के समान सत्-साहित्य व्यक्ति से लेकर राष्ट्र का यथार्थ प्रतिबिम्ब के दर्शन कराके दोषों को स्वच्छ करने में सुसज्जित करने में सहयोगी बनता है। परंतु असमतल, अस्वच्छ दर्पण के समान असत्य साहित्य अयथार्थ प्रतिबिम्ब का दर्शन कराके विकृत करने में और अव्यवस्थित, उच्छृंखल, विनाश करने में सहयोगी बनता है। पाठ्यपुस्तकों में भाषा, व्याकरण, काल, क्षेत्र, व्यक्ति, कार्य, स्वभाव, सत्य-तथ्यात्मक अनेक गलतियाँ, भ्रांतियाँ, कमियाँ पायी जाती हैं तथा पुस्तकों में अनेक भाषागत व्याकरण सम्बन्धी गलतियाँ रहती हैं। भारत की संस्कृति को 5000 वर्ष प्राचीन मानना, बाहर से आर्यों का आगमन, आर्यों के आगमन से पहले यहाँ के निवासी अनार्य (द्राविड़, म्लेच्छ, असभ्य) थे। वास्कोडिगामा (कोलम्बस) ने भारत की खोज की, दुष्यन्त शकुंतला के पुत्र के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा, अकबर महान् आदि ऐतिहासिक गलतियाँ है। भारत को गुलाम बनाने के लिए, शोषण करने के लिए जो कानून विदेशियों के द्वारा बनाये गये थे प्रायः वहीं कानून अभी भी भारत में है। अनेक विदेशी संविधानों

को तोड़-मरोड़ कर भारतीय संविधान बनाया गया है जबकि भारत की संस्कृति, सभ्यता, भौगोलिक परिस्थिति, परम्परा, भाषा, मानसिकता, उद्देश्य, पर्व रीति-रिवाज विदेशों से भिन्न है। हमारी संस्कृति आदि के अनुकूल संविधान, कानून आदि बनाना केवल आवश्यक ही नहीं, विधेय एवं अनिवार्य भी है।

विज्ञान की पुस्तकों में यह कमी है कि जिन सिद्धान्तों को प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया उनका वर्णन कम पाया जाता है। इतना ही नहीं प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों के सत्य-तथ्यात्मक सिद्धान्त भी जब तक विदेश के वैज्ञानिक सही नहीं मानते हैं तब तक उसे पाठ्यपुस्तकों में नहीं दिया जाता है। भले विदेशी वैज्ञानिकों के सिद्धान्त परिकल्पित/भ्रमपूर्ण/अपूर्ण क्यों नहीं हो उसे अवश्य पाठ्यपुस्तकों में स्वीकार करते हैं। इसके सविस्तार वर्णन मैंने मेरी (आ. कनकनन्दी) 1) प्रथम शोध-बोध-आविष्कार, 2) विश्व द्रव्य विज्ञान, 3) ब्रह्माण्डीय जैविक भौतिक एवं रसायन विज्ञान, 4) अनन्त शक्ति सम्पन्न परमाणु से लेकर परमात्मा, 5) सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान, 6) भारतीय आर्य आदि में किया है। प्राथमिक सरल उदाहरणतः भारतीय योग, शाकाहार, आयुर्वेद, प्राकृतिक प्रसाधन सामग्री आदि को जब विदेश के लोग महत्त्व देने लगे तब भारत के लोग भी उसे धीरे-धीरे महत्त्व दे रहे हैं तथा पाठ्यपुस्तकों में महत्त्व दे रहे हैं। सापेक्षसिद्धान्त, परिस्थितिकी विभिन्न विधाओं के पाठ्यपुस्तकों में निष्पक्षता, पारदर्शिता, गहन-गंभीरता, सत्य-तथ्यात्मक विषय वस्तु, सत्यग्राहिता, उदारता, वैज्ञानिक तटस्थ-समीक्षा कम पाई जाती है। संकीर्ण मत, पंथ, परम्परा, राजनीति, अहिंसा, आध्यात्मिकता, कर्म सिद्धान्त, अतिमानवीय-शक्ति आदि-आदि को अभी भी व्यापक रूप से पाठ्यपुस्तकों में स्वीकारा नहीं गया है। क्षेत्रवाद, जातिवाद, पाश्चात्य अन्धानुरण आदि के मिश्रण भी पाठ्यपुस्तकों में पाये जाते हैं।

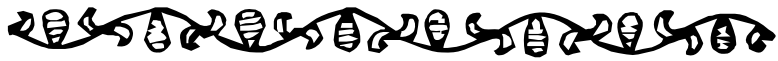

गणित- सबसे अधिक सत्य-तथ्यात्मक विषय होने के कारण गणित की पाठ्यपुस्तकों में वैसे कोई विशेष गलतियाँ नहीं हैं तथापि हिंदी प्रदेश में हिंदी के अंक (नम्बर-यथा 1,2,3,4) प्रयोग नहीं होता है और ना ही सिखाते हैं, जिससे प्राचीन साहित्यों, लेखों में जो गणित आदि का प्रयोग है उससे वंचित हो जाते हैं। प्राचीन भारतीय गणित का समावेश पाठ्यपुस्तकों में नहीं होने से केवल प्राचीन भारतीय गणित से ही वंचित होना नहीं है परंतु प्राचीन महान् गंभीर तत्त्व ज्ञान, अध्यात्म ज्ञान, खगोल ज्ञान से वंचित होना है। इसके साथ-साथ प्राचीन गणितज्ञों, वैज्ञानिकों, लेखकों, महापुरुषों के चरित्र, इतिहास कार्य-कलापों का इतना वर्णन नहीं पाया जाता है जितना वर्णन विदेशी आक्रांता लुटेरे, विध्वंसक भारत को गुलाम बनाने वालों को है। इनका वर्णन पुनरावृत्ति रूप से निम्न कक्षाओं से लेकर उच्च कक्षा तक में किया जाता है। इससे ही इतिहास, साहित्य ज्ञान कहते रहते हैं, मानते हैं। **भारतीय श्रेष्ठ भाषाओं** के ज्ञान के परिवर्तन में विदेशी भाषा अंग्रेजी को अनावश्यक रूप से अति महत्त्व देने के कारण केवल भारतीय भाषा के महत्त्व से ही वंचित होना ही नहीं है अपरंच उन भाषाओं के साहित्य में निहित ज्ञान-विज्ञान से वंचित होना है। आधुनिक वैज्ञानिक शोधों से भारतीय भाषा, ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म, आयुर्वेद, योग-ध्यान, संस्कृति, सभ्यता, भोजन आदि श्रेष्ठ, ज्येष्ठ परम वैज्ञानिक सिद्ध होता जा रहा है किंतु भारतीयों की अयोग्यता के कारण भारतीय उत्कृष्ट उपेक्षित है, अपमानित है, विकृत है।

वैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक केन्द्र- केवल विद्यालय से लेकर विश्व विद्यालयों में उपर्युक्त कमियाँ आदि नहीं पाई जाती है परंतु कमबेशी भारतीय वैज्ञानिक केंद्रों में भी पायी जाती हैं। इसके लिए अन्यान्य अनेक उदाहरणों साथ-साथ मैं स्वयं (आ. कनकनन्दी) भुक्त भोगी हूँ। नोबल पुरस्कार विजेता

वैज्ञानिक हरगोविन्द खुराना को भारत में एक सामान्य नौकरी नहीं मिली तो महान् गणितज्ञ रामानुजम को कोई महत्त्व नहीं दिया गया। मेरा स्वयं का इस संबंधी दीर्घकालीन अनुभव है। मैं प्रायः 30 वर्षों से विज्ञान के अणु सिद्धान्त, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, प्रकाश सिद्धान्त, गति सिद्धान्त, डार्विन का विकासवाद, न्यूटन के सिद्धान्त, वर्ण (रंग) सिद्धान्त, जिनोम सिद्धान्त, फ्रायड के सिद्धान्त, महाविस्फोट आदि संबंधी कमियों को प्रोफेसर्स, वैज्ञानिकों, विज्ञान के केंद्रों को बता रहा हूँ तथापि वे तब तक नहीं मानते हैं जब तक विदेश के वैज्ञानिक नहीं मानते हैं। इतना ही नहीं विज्ञान संबंधी जो मेरे लिखित तथा मौखिक प्रश्न हैं उसका सही उत्तर नहीं देते हैं। जो कुछ उत्तर देते हैं वह भी पुस्तकीय, रटा रटैया, पिसा-पिसाया, रूढ़िवादी उत्तर देते हैं। भारत में प्रतिभा का सदुपयोग नहीं किया जाता है। भारतीय प्रतिभा जब विदेश में जाती है तब उसका सार्वभौम समुचित विकास होता है। विदेश में भारत की प्रतिभा वैज्ञानिक, डॉक्टर, उद्योगपति रूप में चमक रही है। क्योंकि विदेश में योग्य वातावरण, सहयोग, प्रोत्साहन, सदुपयोग, पुरस्कार, प्रशंसा, उपकरणादि प्राप्त होते हैं। भारत में उपर्युक्त अच्छाइयों की कमी है। इन कमियों को दूर करके हमारी प्रतिभाओं को समस्त योग्य क्षेत्र में आगे बढ़ाना केवल आवश्यक ही नहीं परंतु अति अनिवार्य है। क्योंकि भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता से युक्त प्रतिभाओं से विश्व का योग्य समुचित विकास के साथ-साथ विश्व में सुख, समृद्धि एवं शांति की स्थापना संभव है। इस प्रयास में सतत संलग्न हूँ तथा विभिन्न क्षेत्र में मुझे सफलता भी प्राप्त हो रही है। इस श्रृंखला में मेरे कुछ वैज्ञानिक शिष्यों को (डॉ. राजमल जैन, डॉ. नारायण लाल कछारा, अमृतलाल जैन) विदेश में धर्म प्रचार के लिए भेज रहा हूँ। भारत में भी साहित्य लेखन, संगोष्ठी, शिविर, कक्षाओं के माध्यम से यह कार्य कर रहा हूँ। शिक्षा में परिवर्तन के लिए भी जो प्रयास चल

रहे हैं उसमें भी सफलता मिल रही है।

धार्मिक व्यक्ति, समाज, संगठन में भी धार्मिक शिक्षा में उदारता, व्यापकता, गुणग्राहकता, परमतसहिष्णुता, अन्य व्यक्ति-समाज-संगठन से समन्वय की कमी पाई जाती है। वे धार्मिक रूढ़िवादी-मतवाद-परम्परावाद से आवेशित होकर धार्मिक शिक्षा का ग्रहण, प्रचार-प्रसार करते हैं। धर्म के सारभूत सत्य, अहिंसा, सरल-सहजता, उदारता, व्यापकता, शांति, मैत्री, परोपकार, वैज्ञानिकता, प्रगतिशीलता, समन्वय, दूरदृष्टि, सम्पन्नता, प्रामाणिकता, कर्त्तव्यनिष्ठा, सादा जीवन उच्च विचार आदि से प्रायः धार्मिक शिक्षा वंचित रहती है। इसलिए ऐसी धार्मिक शिक्षा से प्रेरित व्यक्ति, समाज, संगठन में भी उपर्युक्त धर्म के सारतत्त्व के अभाव में केवल धार्मिक निस्सारता, कठोरता, बाह्याडम्बर, भेदभाव, घृणा, संक्लेश, युद्ध, कलह आदि पाये जाते हैं।

विश्व साक्षरता दिवस के उपलक्ष्य में

अच्छाइयों के नाशक भारत की रूढ़िवादी पढ़ाई

अभी तक मैंने (आ.कनकनन्दी) सच्ची शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षाफल, के बारे में 1. सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान (वृहत् एवं लघु) 2. नैतिक शिक्षा एवं सामान्य ज्ञान (हिन्दी, अंग्रेजी) 3. करें साक्षात्कर यथार्थ धर्म, भाव, शिक्षा, संस्कृति का लेखन किया तथा दो राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठियों का आयोजन हुआ। इसके साथ-साथ 26 धर्म दर्शन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शताधिक प्रशिक्षण कक्षाएँ, स्कूल-कॉलेज में प्रवचन, अनेक शोधपूर्ण लेखों का प्रकाशन हुआ है। शिक्षा तथा पाठ्य पुस्तकों की कमियों को दूर करने के लिए राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक शिक्षा अनुसंधान केंद्रों को सुझाव देकर कुछ परिवर्तन किया है एवं कर रहा हूँ। यह सब इसलिए कर रहा हूँ कि भारत में जो रूढ़िवादी शिक्षा है उसमें परिवर्तन हो, सबका सर्वांगीण विकास हो, स्व-पर राष्ट्र, विश्व में

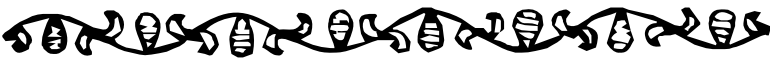

शोध-बोध, सुख-समृद्धि, शांति हो। मेरा दीर्घ 45 वर्षों का 15 प्रदेशों का अनुभव है कि भारतीय शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षाफल, शिक्षा-पद्धति कम गुणकारी है तथा अधिक अहितकारी है। इससे मुझे पीड़ा है कि विश्वगुरु भारत स्वतंत्रता के 58 वर्षों के बाद भी इतने भ्रष्ट, पिछड़े, नकलची, फैशनी-व्यसनी, अनैतिक, अवैज्ञानिक है तथा आध्यात्मिकता से दूर क्यों है? इस पीड़ा एवं भावना से प्रेरित होकर पुनः यह लेख लिख रहा हूँ जिससे भारतीय अपने दुर्गुणों को जानकर उसे त्याग एवं सुगुणों को स्वीकार करके महान् आदर्श, सुसंस्कृत, पुरुषार्थी, सदाचारी, प्रगतिशाली, वैज्ञानिक, उदार, धार्मिक, अनुशासी, आध्यात्मिक बनें। क्योंकि इससे ही समस्त व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक सुख-शांति-समृद्धि सम्भव है। भारत में अभी शिक्षा का प्रचार-प्रसार बहुत हो रहा है, कुछ शिक्षित व्यक्ति देश-विदेश में विभिन्न क्षेत्रों में अच्छे कार्य कर रहे हैं, विज्ञान-प्रौद्योगिकी में कुछ विकास हो रहा है तथापि शिक्षा में जो धन-जन-मन-समय श्रम का विनियोग हो रहा है उसके अनुपात से लाभ कम परन्तु हानियाँ अत्यधिक है। अर्थात् आय/उत्पादन से व्यय/खर्च अधिक है जो कि दिवालिया/विनाश/समस्या/बुराइयों के लिए कारण है। निम्न में कुछ बिंदुवार इस सम्बन्धी खुलासा प्रस्तुत है।

1. स्व शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिकता के विध्वंसक- शारीरिक मानसिक रूप से अपरिपक्व दो तीन वर्ष के शिशु को उसकी इच्छा के विरुद्ध तथा भारी बस्ता लादकर उसके सोने के समय के अन्तर्गत भी स्कूल भेजते हैं। शीत ऋतु में जब 7 बजे बच्चे स्कूल जाते है जबकि सूर्योदय 7:15 बजे होता है और बच्चों को 6 बजे प्रायः जगाकर, भेजते हैं। इससे बच्चों की शारीरिक-मानसिक दिनचर्या प्राकृतिक जैविक घड़ी के ऊपर कुप्रभाव पड़ता है। इतना ही नहीं परिवार के वियोग से, जाने-आने की समस्या से, स्कूल के स्नेह रहित वातावरण से, कृत्रिम-बोझिल इच्छा विरुद्ध दण्डात्मक रटन्त पढ़ाई से, गृहकार्य से, ट्यूशन से उपर्युक्त कुप्रभावों में और भी वृद्धि होती है। जिस शिशु अवस्था में 15-16 घण्टे की पर्याप्त नींद शारीरिक-मानसिक विकास एवं स्वास्थ्य के

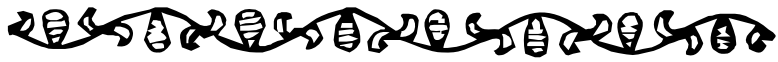

लिए चाहिए उस अवस्था में उसे पढ़ाई के कारण अपर्याप्त नींद लेने पड़ी है जिससे उसके शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य के विकास के परिवर्तन में विभिन्न शारीरिक-मानसिक रोग हो जाते हैं जिससे वह पढ़ाई भी सही रूप से नहीं कर पाता है। पढ़ाई में गुणवत्ता, उत्पादकता भी नहीं आ पाती है। इसके साथ-साथ वह अवसाद, चिड़चिड़ा, डरपोक, हीनग्रंथी से ग्रसित हो जाता है जिससे और भी अनेक शारीरिक-मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

उपर्युक्त कारणों के साथ-साथ पढ़ाई की अस्त-व्यस्तता के कारण विद्यार्थी पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय, सेवा, परोपकार, आध्यात्मिकता आदि जीवनोपयोगी कार्यक्रमों में भाग नहीं ले पाता है जिससे वह उपर्युक्त पारिवारिक आदि की शिक्षा-दीक्षा, गुणवत्ता, अच्छाइयों से वंचित हो जाता है। विद्यार्थी केवल स्कूल की पढ़ाई को ही सब कुछ मानकर और पढ़ाई की सफलता को ही जीवन की सफलता मानकर पुस्तकीय रटन्त जानकारी में 15-20 वर्ष लगा देता है जिससे वह शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक दृष्टि से स्व-कार्य, गृहकार्य, सामाजिक कार्य, धार्मिक कार्य आदि नहीं करता है या नहीं कर पाता है जिससे भी वह शारीरिक आदि से अयोग्य, दुर्बल हो जाता है, जिससे वह स्व-दैनिक कार्य भी शारीरिक रूप से करने में असमर्थ होता है। तो मानसिक संकीर्णता, हीनग्रंथी, अहंग्रंथी आदि के कारण मानसिक उर्वरता, गुणवत्ता, उदारता, उत्पादकता आदि की कमी होने से अन्य विषयों को कम महत्त्व देता है, स्वीकार कम करता है, जिससे मानसिक रूप से भी प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से हानि होती है। लौकिक शिक्षा में प्रायः आध्यात्मिक शिक्षा का अभाव होने से विद्यार्थी आध्यात्मिक ज्ञान से अपरिचित हो जाता है, उससे घृणा करने लगता है और उससे दूर हो जाता है। इससे जो महान् अपूरणीय क्षति होती है उसके अनुपात से लाभ अत्यंत कम है भले इस लौकिक शिक्षा से वह चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी से लेकर उद्योगपति, वैज्ञानिक, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति तक क्यों न बन जाए क्योंकि नैतिक, आध्यात्मिक विकास ही सम्पूर्ण विकास है व

उससे प्राप्त सुख-सुविधाएँ तो क्षणिक हैं एवं मानसिक आदि विभिन्न अशांति व समस्याओं को जन्म देने वाली है। परंतु यह विषय आध्यात्मिक ज्ञानाभाव के कारण वह कैसे समझ सकता है।

2. पारिवारिक-आर्थिक-सामाजिक-राष्ट्रीयता के विध्वंसक- उपर्युक्त वर्णित कारण एवं परिणाम (हानियाँ) के साथ-साथ अन्य भी अनेक हानियाँ है। यथा-विद्यार्थी स्व-रूढ़िवादी पढ़ाई में इतना अस्त-व्यस्त एवं दबाव से युक्त हो जाता है कि जिससे वह पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय कार्यक्रम में सहभागिता एवं सहयोग से वंचित हो जाता है। **पहले तो विद्यादान था बाद में विद्या का व्यापार हुआ किंतु वर्तमान में विद्या के माध्यम से शोषण एवं भ्रष्टाचार चल रहा है।** इससे विद्यार्थी-जीवन में आर्थिक हानियाँ एवं अपव्यय भी होता है। जब वह पढ़ाई, ट्यूशन, एडमीशन के लिए, परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए, परीक्षा एवं प्रतियोगी परीक्षा में शुल्क से लेकर लाखों रुपये घूस देता है तब उसमें विद्रोह, शोषण, दगाबाज, असामाजिकता की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। विद्यार्थी जीवन में पारिवारिक-उत्तरदायित्व, सहयोग के कार्य नहीं करने के कारण वह परिवार निर्वाह भी नहीं कर पाता है जिससे वह विवाह के बाद एकल परिवार में रहना पसन्द करता है। वह इसके लिए परिवार में लड़ाई झगड़ा भी करता है। इस कारण भारत में वर्तमान में संयुक्त परिवार विघटित हो रहे हैं जिससे नई पीढ़ी सामाजिक संरचना, मधुरता, समन्वय, शिक्षा, अनुभव से वंचित होती जा रही है। इस कारण से अनेक शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। इस परिस्थिति में राष्ट्रीयता असंभव है क्योंकि राष्ट्रीयता, पारिवारिकता एवं सामाजिकता का वृहत् स्वरूप है। **इतना ही नहीं मेरा (आ. कनकनन्दी) का व्यक्तिगत अनुभव है कि ऐसे साक्षर व्यक्ति पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय सेवा, सहयोग आदि कार्य से घृणा करते हैं उससे दूर रहने को अपनी विशेषता मानते हैं। उपर्युक्त पारिवारिक कार्य करने वाले को गंवार, अशिक्षित, गरीब, पिछड़े, असहाय, अयोग्य मानते हैं।**

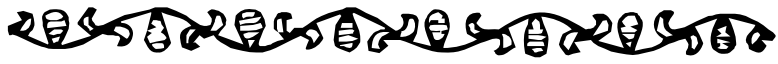

3. **परम सत्य, संस्कृति, सभ्यता के विध्वंसक-** विद्यालय की पढ़ाई में परम सत्य यथा-आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि के बारे में विशेष अध्ययन, अध्यापन, प्रशिक्षण नहीं होने के कारण ऐसे विद्यार्थी इससे वंचित हो जाते हैं। विशेषतः भारतीय संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, आध्यात्मिकता, परम सत्य के लिए, परम सत्य के द्वारा, परम सत्य के निमित्त है परंतु भारत में ऐसे महान् ज्ञान का धर्म निरपेक्षता के नाम पर, आधुनिकता के नाम पर, पाश्चात्य अन्धानुकरण के कारण या विषम पंथ-मतवाद के कारण इसका अध्ययन, अध्यापन नहीं हो रहा है। भले ही आज वैज्ञानिक अनुसंधान के कारण पाश्चात्य जगत् में विशेषतः वैज्ञानिकों में इस प्रकार की रुचि, आवश्यकता, गुणवत्ता, महानता बढ़ती जा रही है। **इसलिए आज भारत में महान् आदर्श, महान् लक्ष्य के अभाव से विद्यार्थियों के लिए भी भ्रष्ट नट-नटी (हीरो-हीरोइन), नेता, राजनेता, खिलाड़ी आदर्श पुरुष हैं, जिनका अन्धानुकरण करते हुए विद्यार्थी स्वयं को गौरव, आधुनिक, प्रगतिशील अनुभव करते हैं।** इस कारण विद्यार्थियों को हमारे प्राचीन महापुरुष या आधुनिक देश-विदेश के महापुरुषों के बारे में ज्ञान नहीं है परंतु नट-नटियों के दीवाने हैं। इसलिए ऐसे विद्यार्थियों के लिए रटन्त पुस्तकीय सही या गलत ज्ञान ही सत्य है, अश्लील, भ्रष्ट, फैशन-व्यसन ही संस्कृति है, अर्धनग्न, विकृत, कुत्सित वेशभूषा, खान-पान, रीति-रिवाज, रहन-सहन, भाषा, व्यवहार ही सभ्यता है।

आधुनिक शिक्षा की अच्छाइयाँः- उपर्युक्त विभिन्न कमियाँ, विकृतियाँ एवं समस्याओं के साथ-साथ मेरे कुछ उज्ज्वल, मधुर अनुभव यह है कि कुछ आधुनिक उच्च शिक्षित विशेषतः विज्ञान एवं गणित के अध्येता (विद्यार्थी) या वैज्ञानिक आधुनिक सोच सम्पन्न, देश-विदेश के कुछ व्यक्ति, विनम्र, जिज्ञासु, कर्त्तव्यनिष्ठ, उदार, धार्मिक, आध्यात्मिक बनते जा रहे हैं। इसमें विभिन्न कारणों में से एक कारण वैज्ञानिक ज्ञान एवं अनुसंधान है। वैज्ञानिक ज्ञान, अनुसंधान पद्धति से बुद्धि एवं भावना के साथ-साथ कर्त्तव्य भी सत्यग्राही,

उदार, प्रगतिशील बन जाता है जिससे वे स्वयंमेव श्रेष्ठ बनते जाते हैं। और भी एक कारण यह है कि विज्ञान के अनुसंधान से स्वयं का ज्ञान कितना कम है यह परिज्ञान हो जाता है तथा आध्यात्मिक ज्ञान की श्रेष्ठता-ज्येष्ठता एवं उपादेयता का परिज्ञान आनुषंगिक रूप से हो जाता है, इससे वह धर्म/आध्यात्मिकता की ओर स्वयंमेव प्रभावित होकर आकर्षित हो जाते हैं। यह गुण एवं प्रवृत्ति मध्य काल में नहीं थी। इस दृष्टि से आधुनिक शिक्षा श्रेष्ठ है, ज्येष्ठ है एवं अनुकरणीय भी है। उपर्युक्त कमियाँ मैंने हिंदी भाषी प्रदेशों में अधिक अनुभव की हैं। अहिंदी भाषी प्रदेशों में उपर्युक्त कमियाँ कम हैं। इसलिए भारत के अधिकांश वैज्ञानिक, लेखक दार्शनिक, साधु-संत, समाज सुधारक, नोबल पुरस्कार विजेता आदि अहिंदी भाषी प्रदेश के ज्यादातर हुए हैं और हो रहे हैं।

कारण एवं निवारणः- इस संबंधी विस्तृत वर्णन मैंने मेरे उपर्युक्त ''सर्वोदय शिक्षा मनोविज्ञान'' आदि में किया है तथापि इस लेख में कुछ संक्षिप्त वर्णन निम्नोक्त है-

शिक्षा केवल औपचारिक, कागजी, रटन्त, परीक्षा पास, डिग्री, नौकरी, स्टेटस सिम्बल अर्थोपार्जन, शादी-विवाह, समय पास, भेड़चाल आदि के लिए ही न होकर सर्वांगीण विकास, जीविका निर्वाह के साथ-साथ जीवन निर्माण-निर्वाण (सा विद्या या विमुक्तये) ज्ञानार्जन शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास, स्व-पर राष्ट्र, विश्व में सुख, शांति, समृद्धि के लिए होना केवल आवश्यक ही नहीं अनिवार्य होना विधेय है। एतदर्थ शिक्षाफल, शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षा पद्धति होना भी अनिवार्य शर्त है इसके लिए एक फार्मूला भारतीय प्राचीन श्रेष्ठ आध्यात्मिक पद्धति एवं आधुनिक प्रगतिशील वैज्ञानिक पद्धति का समुचित सम्यक् समन्वय। केवल हिंदी भाषी प्रदेश में ही नहीं भारत तथा विश्व में सत्य-तथ्य परक सर्वोदयी आध्यात्मिक वैज्ञानिक, गणितीय, सर्वजीव हितकारी, सर्वजीव सुखकारी शिक्षा-दीक्षा का प्रचार-प्रसार, प्रयोगीकरण हो ऐसी महती मंगल भावना के साथ।

कन्या भ्रूण हत्या की आत्मकथा

तर्ज :- (चन्दा मामा दूर के...)

मैं ही बड़ी दुःखियारी हूँ, गर्भ मे शंकिता वाली हूँ
गर्भ में ही मेरे स्वजन द्वारा, बलि मैं चढ़ने वाली हूँ
गर्भ में मेरा प्रवेश हुआ, जब कल्लोल के रूप में
कुछ सप्ताह में तीव्रगति से, विकास हुआ भ्रूण रूप में
कुछ महीनों में हाथ पैर शिर का विकास हुआ भ्रूण रूप में
नाक कान आँख तंत्रिका तंत्र भी विकास हुआ मुझ में
देखने सुनने अनुभव की, क्षमता बढ़ी है तीव्र में
सुख दुःख की चेतना शक्ति, बढ़ती गई है मुझ में
लिंग निर्धारण अवयव का विकास जब हुआ मुझ में
मेरे ही स्वजन सोनोग्राफी से परीक्षण किया जब मुझ में
तब ज्ञात हुआ मैं तो कन्या हूँ वज्रपात हुआ उनमें
मेरी हत्या हेतु षड़यंत्र का सूत्रपात हुआ उनमें
दयावन्त समझाया कि क्या अपराध इस कन्या में
स्वजन ने समझाया कि कुलविनाशिनी यह कन्या है
इसके कारण हमारे कुल को लज्जित होना पड़ेगा
दहेज के लिए अकूत धन भी, इसे तो देना पड़ेगा
वृद्ध अवस्था में यह क्या, हमारे काम में आयेगी
केवल पालन पोषण के लिए यह हमारी बोझ बन जायेगी
यौन शोषण घर से भाग जाने या विधवा होने का डर है
इसीलिए इसे गर्भ में ही मारने का उपाय करो है
मुझे मारने के लिए यमरूपी डॉक्टर आया पास जब मेरे
करुणा से पुकारा मेरी रक्षा तुम करो है स्वजन मेरे
मेरी रक्षा हेतु कोई न आया माता पिता भाई बन्धुजन रे

माता हत्यारिनी पिता हत्यारा बन्धु स्वजन भी सब हत्यारे
किसी के हृदय में प्यार न देखा सब के दिल पत्थर सारे
जब स्वजन ही हत्यारे बने रक्षक कहाँ से आवे रे
मानव शरीरधारी डॉक्टर को कहते हैं धरती का भगवान्
वह भी जब बना बर्बर डाकू कौन रक्षा करेगा मेरी जान
मानव के वरदान के लिए जिस विज्ञान का विकास हुआ
उस विज्ञान को मानव ने अभिशाप रूप में प्रयोग किया
कहते हैं मानव प्रकृति का सबसे महान् प्राणी है
परन्तु मेरी नन्हीं जान ने जाना सबसे निकृष्ट प्राणी है
पशु-पक्षी भी स्व-सन्तान हेतु अपनी बलि चढ़ा देते है
मानव पशु से भी नीच बनकर स्व-सन्तान की बलि चढ़ा देते हैं
कातिल डॉक्टर के अस्त्र जब, मुझे मारने आते हैं
डर के मारे मैं सिकुड़कर आत्म रक्षा हेतु सरकती हूँ
जब माता पिता भी मेरे दर्द न समझे निर्जीव अस्त्र क्या समझेगा
जब प्राण रक्षक डॉक्टर बना भक्षक तब जड़ अस्त्र क्या रक्षक होगा
मानो पूर्वजन्म का पाप अस्त्र रूप में मेरे पास आया
मैं भागूँ कहाँ मेरी माता का ही गर्भ जब मेरा जेल बना
जल्लाद बनकर जब स्वजन व डॉक्टर मेरा काल बने
क्रूर अस्त्र के प्रहार से मेरे शरीर के अवयव अलग बने
क्रिया की प्रतिक्रिया होती प्रकृति में मेरे हत्यारों की होगी क्या गति
यह सोचकर क्षमा देकर अगले जन्म के लिए कर ली गति
मेरी व्यथा-कथा सुनकर मानव यदि बदलेगा अपनी मति
अन्य कन्या की हत्या न होगी तब सुधरेगी मानव जाति
जाते जाते विश्व मानव को मैं सुना रही हूँ अपनी बात
जिस नारी से जन्म तू लेता उसी माता को करे तू घात
कन्या नहीं वधू चाहिए कन्या बिन कहाँ से वधु लाओगे

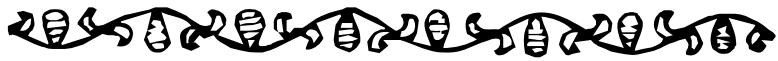

न चाहिये बीज वृक्ष चाहिए बीज बिना कहाँ से वृक्ष पाओगे
कुलदीपक यदि सुपुत्र होता है तो उभयकुल दीपिका सुपुत्री होती
दोनों कुल के संसस्कार द्धारा जो सन्तान को संस्कार देती
सम्पन्न साक्षर प्रदेश नगरे मेरे हत्यारे होते अधिक
बाह्य धर्माचार पालक जन मेरे हत्यारे होते अधिक
द्धापर युग में था एक कंस जो शिशुओं का था हत्यारा
कलियुग में लाखों है कंस स्व शिशुओं का बने हत्यारा
अभी तो मातायें बनी पूतना स्व-सन्तान की करती हत्या
घर घर में बनीं वधशाला जिसमें होती स्वकन्या हत्या
कषायी हत्या करें पशु की स्वजन करें कन्या की हत्या
कषायी से भी बड़ा हत्यारा जो करते हैं स्वभ्रूण की हत्या
भले सन्तान हो कुसन्तान माता न होती कभी कुमाता
यह कथन सत्य नहीं है माता भी कभी होती कुमाता
पाती रक्षति सन्तान की जो उसे कहते हैं यथार्थ पिता
मेरे पिता सन्तान भक्षक राक्षस सम नहीं है पिता
जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान् है की गाथा होती
कन्या की पूजा तो पर्व में होती गर्भस्थ की हत्या होती
इन्हीं कारणों से लिंगानुपात की विषमता भारत में बढ़ रही
वधु न मिलने की समस्या तो दिनोंदिन ही बढ़ रही
झुककर अभी वरपक्ष को दहेज देना भी पड़ रहा
अज्ञात कुल शील जाति धर्म की कन्या भी लाना पड़ रहा
पाप कभी न किसे भी छोड़ा हो कितना ही होशियार
कर्म के सामने सभी पापी तो होते जैसे हो सियार
अभी मेरी मानो पाप को छोड़ो, निर्दोषी का कर न संहार
'कनकनन्दी' गुरुवर द्धारा मेरा निवेदन तुम करो स्वीकार।।

विज्ञान के असत्य-मत तथा उससे हानियाँ

रागः- (यमुना किनारे...)

नित्य विज्ञान में होता अनुसन्धान, नये-नये मतों का होता निर्माण/(वर्णन)।
पुराने मतों का कुछ होता शोधन, कुछ नेष्ट-श्रेष्ठ कुछ होता जनम।। (1)

अज्ञ पथिक यथा आगे-आगे बढ़ता, कुछ आता-जाता कुछ मार्ग भूलता।
तथाहि विज्ञान यथा आगे-आगे बढ़ता, कुछ आता-जाता कुछ सत्य भूलता।। (2)

यथा अणु विखण्डन होता जा रहा, अणु के पूर्वमत क्षीण/(नष्ट, नेष्ट) हो रहा।
परमाणु प्रतिअणु बनता जा रहा, नया-नया मत भी बनता जा रहा।। (3)

तथा ही जीव विज्ञान विश्व ज्ञान, प्रकाश की गति व जिनोम ज्ञान।
मनोविज्ञान तथा स्वास्थ्य-विज्ञान, विज्ञानों में होता शुद्धिकरण।। (4)

विज्ञान भी नहीं है परम ज्ञान, अपरिवर्तनीय तथा सिद्धान्त ज्ञान।
विज्ञान तो अभी भी मार्ग पे चला, परम सत्य रूपी लक्ष्य न मिला/(पाया)।। (5)

प्रकाश की गति को परम माना, आइन्स्टीन ने इस मत को माना।
अभी तो विज्ञान इसे नकार रहा, न्यूट्रीनों की गति अधिक पाया।। (6)

इसी से भी अधिक गति होती अणु की, जैन धर्म में वर्णित परम/(शुद्ध) अणु की।
यह अणु विज्ञान को नहीं है ज्ञात, सर्वज्ञ ज्ञात है, नहीं विज्ञान को ज्ञात।। (7)

विग्रह गति तथा सिद्धजीव की गति, न्यूट्रीनों से भी अति तीव्र गति।
विज्ञान को यह सब ज्ञात नहीं है, सर्वज्ञ ज्ञान गम्य परम गति है।। (8)

विज्ञान को अनुमान चल ही रहा, विश्व सृष्टि बारे में सोच ही रहा।
काल्पनिक जगत् में विचर रहा, शून्य से सृष्टि को ही ढूँढ़ रहा।। (9)

समय व आकाश का अभाव माना, हठात् सिंगुलरटी जन्म को माना।
शुरू में आकर शून्य चीजों को माना, वजन भी उसमें नहीं है माना।। (10)

बिग बैंग जब हुआ उस काल में, बोसोन हिग्स जन्मा क्षण मात्र में।
जिससे चीजों में वजन आया, आपस में तत्त्वों का सम्बन्ध हुआ।। (11)

जिससे सूर्यादि का जन्म भी हुआ, बोसोन विनाश क्षण में हुआ।
ब्रह्माण्ड का विस्तार हो ही रहा, चौदह अरब वर्ष प्रायः हो रहा।। (12)

असत्य से सत्य जन्म नहीं लेता है, शाश्वतिक यह सत्य भूला बैठा है।
मूल में ही विज्ञान की यह भूल है, वस्तु स्वरूप से यह प्रतिकूल है।। (13)

विश्व अनादि अनन्त तथा ही अणु, वजन से रहित है परम अणु।
स्कन्ध रूप में जब अणु बनता, चीजों/(स्कन्धों) में वजन तब प्रगट होता।। (14)

आकाश व कालाणु होते शाश्वत्, दोनों ही अमूर्तिक भार रहित।
आकाश का विस्तार अनन्तानन्त, आकाश/(उसके) मध्य में ब्रह्माण्ड स्थित।।(15)

व्यवहार समय तो भौतिक कृत, अन्तरिक्ष व्यवहार दूर सापेक्ष।
यह तो व्यवहार में होता सम्भव, आकाश काल की सृष्टि नहीं सम्भव।। (16)

जड़ तत्त्व से जीवों की सृष्टि मानना, यह भी विज्ञान का अज्ञानपना।
जिनोम तक जड़ तत्त्व ही जानो, जीव तत्त्व को चैतन्य ही मानो।। (17)

इत्यादि विज्ञान के मतानुसार, समस्त ब्रह्माण्ड है शून्य विस्तार।
विश्व में नहीं सत्य शिव सुन्दर, सच्चिदानन्दमय आत्म विचार।। (18)

इसी से मानव क्षुद्र/(संकीर्ण) स्वार्थी बनेगा... भौतिकमय विचार उसका होगा।

खाओ पीओ मजा करो यह करेगा/(मानेगा)...मरण अनन्तर कुछ नहीं रहेगा।।(19)

पवित्र आध्यात्म भाव लोप होवेगा...आत्म विकास का भाव शून्य/(लोप) होयेगा।
सुख-दुःख सहिष्णुता भाव न होगा... हानि-लाभ में समभाव न होगा।
परलोक विकास का भाव न होगा... आत्मा में परमात्मा भान न होगा।। (20)

इसी से अनेक अनर्थ उत्पन्न होंगे... धर्म अर्थ काम मोक्ष नहीं सधेंगे।
कर्म सिद्धान्त का विनाश होगा... पाप-पुण्य परलोक नहीं रहेगा।। (21)

असत्य अन्याय पापाचार बढ़ेगा... युद्ध हिंसा भ्रष्टाचार खूब बढ़ेगा।
शील सदाचार संयम भाव न होगा... परम सत्य का शोध-बोध न होगा।।(22)

सत्य-तथ्य नैतिक व आत्मदृष्टि से... विज्ञान ग्राह्य नहीं सूक्ष्म दृष्टि से।
विज्ञान के सत्य पक्ष ग्रहणीय है... 'कनक' द्धारा सत्य वन्दनीय है।। (23)

क्षीण होता जा रहा है भारत ज्ञान-त्याग-शील से

रागः- (कौन परदेशी मेरा दिल ले गया...)

आज महान् भारत को क्या हो गया... ज्ञान-त्याग-शील में क्षीण हो गया।
रटन्त ज्ञान अनुभव विहीन... अव्यवस्थित तथा सार विहीन।।

जीवन उपयोगी नहीं है ज्ञान... नहीं होता है सही प्रारम्भ ज्ञान।
ज्ञान का साधन होता शब्द विज्ञान... शब्द ज्ञान बिन कहाँ परम ज्ञान।।

ज्ञान-विज्ञान हेतु गणित ज्ञान... लौकिक गणित तक नहीं है ज्ञान।
अलौकिक गणित तो महान् ज्ञान... उससे अपरिचित अधिक जन।।

जिज्ञासु गुण भी कम होता जा रहा... डिग्री मनोरंजन तक ज्ञान रह गया।
संकीर्ण पंथ मत स्वार्थ हो गया... उदार व्यापक ज्ञान क्षीण हो गया।।

चुटकुला-सास-बहू कथा ही भाती... निन्दा हास्य परिहास कथा सुहाती।
जीवन निर्माण कथा में नहीं रुचि... नैतिक शिक्षा बिना गप्प में रुचि।।

आध्यात्मिक ज्ञान रूढ़िवादी हो गया... आत्मसाधना बिन पंथवादी हो गया।
अहं धूर्त पाखण्ड का पाठ हो गया... धनजन भोग ही साध्य हो गया।।

प्राचीन आधुनिक ज्ञान भी नहीं... सामान्य सदाचार का भान भी नहीं।
आत्मा-परमात्मा को जानते नहीं... आधुनिक महाज्ञानी मानते सही।।

ज्ञान का मूल्यांकन धन से होता... भीड़ के अनुसार ज्ञान चलता/(बँटता)।
मान प्रदर्शन हेतु ज्ञान हो गया... जानकारी ही ज्ञान का मान हो गया।।

गाना-नाचना ही धर्म हो गया... भीड़ से धर्म का मान हो गया।
आध्यात्मिक भाव लोप हो रहा... प्रतिस्पर्द्धा का भाव बढ़ ही रहा।।

त्याग करना तो अति दूर ही रहा... भ्रष्टाचार संग्रह में मस्त हो रहा।
हर क्षेत्र में तो स्वार्थ हो रहा... धन या मान का स्वार्थ हो रहा।।

निःस्वार्थ भाव तो लोप हो रहा... समय श्रमदान ना हो रहा।
त्याग तप में भी स्वार्थ हो रहा... धन जन मान हेतु त्याग हो रहा।।

शील-सदाचार का तो लोप हो रहा... फैशन-व्यसनों में डूब-सा गया।
दिखावा व आडम्बर खूब हो रहा... सत्य-न्याय का पथ भूल-सा गया।।

सहज-सरल भाव वक्र हो रहा... बगुला के समान शुभ्र हो रहा।
सूट-बूट-टाई व्यक्तित्व हो गया... दर्जी से व्यक्तित्व निर्माण हो रहा।।

उद्दण्ड व अश्लील से बोल्ड हो रहा... भ्रष्टाचार के धन से विकास कर रहा।
विकास का पैमाना भौतिक हो रहा... आत्मपतन का भान न रहा।।

कमियों के शोध-बोध, त्याग के हेतु... कविता ये रची गई विकास हेतु।
'कनकनन्दी' की यह शुभ भावना... समग्र विकास हो ये ही कामना।।

-कम सृजनशील हैं आज के युवा- (Provoking thought)

कुछ वयस्कों को यह बात शिकायत जैसी लग सकती है लेकिन वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि आज के युवा पुराने जमाने के युवाओं की तुलना में कम सृजनशील और कल्पनाशील हो गये हैं। वर्ष 1970 के दशक में करीब तीन लाख सृजनशीलता परीक्षणों के अध्ययन के बाद अमेरिका के विलियम एण्ड मैरी कॉलेज के शोधकर्त्ताओं ने पाया है कि हाल के वर्षों में बच्चों के बीच सृजनशीलता में कमी आयी है। इस अध्ययन का नेतृत्व करने वाली क्यूंग ही किम ने कहा कि वर्ष 1990 से बच्चों की अद्वितीय और असामान्य विचार लाने की क्षमता कम हो गई है। उन्होंने कहा कि वे अब कम विनोदप्रिय कम कल्पनाशील हो गये हैं और नये नये विचार सामने रखने की उनकी क्षमता भी घटी है। (दैनिक भास्कर से साभार)

-बच्चों में कम होती रचनात्मकता-

उनमें नई चीजों के प्रति कल्पनाशीलता कम होने लगी है। वे अपने विचारों को ठीक से प्रदर्शित करने में भी असफल हो रहे हैं। किम ने बताया कि स्कूलों में एक ऐसी नीति की जरुरत है जिसमें साल में एक बार इस तरह का टेस्ट हो जिसमें बच्चों की रचनात्मकता का पता लगाया जा सके और इसके परिणाम के आधार पर राज्यों के शिक्षा का मानक तय किया जाना चाहिए।

किम ने बताया कि बच्चों में रचनात्मकता के कम होने का सबसे बड़ा कारण टी.वी. है। यह एक अप्रत्यक्ष गतिविधि है, जो कि बच्चों का दूसरे से सम्पर्क नहीं होने देता। (प्रातःकाल)

-अमीर लोग नहीं करते माता-पिता का ख्याल-

अमीर लोग अपने बुजुर्ग माता-पिता का ख्याल कम रखते हैं। यह बात एक अध्ययन में साबित हुई है। अमेरिका में लगभग 2790 लोगों पर अध्ययन में पाया गया है कि सैलरी बढ़ते ही लोग अपने माता-पिता को लेकर लापरवाही बरतने लगते हैं और वे अपने माता-पिता के काम में मदद करना लगभग बन्द कर देते हैं। इसके साथ ही रोज का काम और घर की साफ-सफाई के लिए भी कम वक्त देते हैं। शोध के अनुसार प्रति साल 10 प्रतिशत सैलरी बढ़ने के साथ ही अमेरिकी महिलाएँ बुजुर्ग का ख्याल 36 प्रतिशत तक कम कर देती हैं, वहीं अपने काम में पुरुष 18 फीसदी तक कम कर देते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि सगे भाई-बहन या किसी और को मदद के काम में लगाना स्थिति को और भी जटिल कर देता है। कीव इकोनोमिक इन्स्टीट्यूट के प्रमुख शोधकर्त्ता ओलीना नीजालोवा ने बताया कि इस अध्ययन से यह बात सामने आई है कि देखभाल के लिए बनाई गई वर्तमान वैश्विक नीतियाँ एक-दूसरे से मेल नहीं खाती हैं। उन्होंने कहा कि बुजुर्गों के लिए देखभाल करना ज्यादा कठिन समस्या बनती जा रही है, क्योंकि जन्म दर घट रही है और लोग ज्यादा दिनों तक जीवित रहने लगे हैं। रिकॉर्ड संख्या में लोग रिटायर हो रहे हैं। अर्थशास्त्रियों ने सलाह दी है कि इस बोझ से निपटने के लिए ज्यादा

संख्या में महिलाओं की नौकरी को प्रोत्साहित करना चाहिए और रिटायरमेन्ट की उम्र को भी बढ़ा देना चाहिए। इसके साथ परिवार और दोस्तों से यह कहा जाना चाहिए कि बुजुर्गों का ख्याल करें। हालांकि अध्ययन में पाया गया कि बुजुर्गों की देखभाल के प्रति ताजा रुझान अच्छा नहीं है।

(प्रातःकाल से साभार)

सत्य-समता-शान्ति के बिना शिक्षा, धर्म आदि अहितकर

(नैतिकता बिना धर्म शिक्षा आदि का दुष्परिणाम या कुफल)

तर्ज :- (जिस गली में तेरा घर न हो...)

पुस्तकों की पढ़ाई करने वाले,
स्वयं की पढ़ाई भी तुम करो।
बाह्य को देखने वाली आँखें,
स्वयं का स्वरूप स्वयं तुम देखो/लखो।। (टेक)

विद्यालयों में पढ़ाई करते, व्यवहार नैतिक ज्ञान नहीं,
डिग्री प्राप्त करते तो कागजी-2, भाव ड्राई हुआ यह भान नहीं।।... (1)

फैशन-व्यसन स्वार्थनिष्ठा में, शिक्षा का स्वरूप तुमने देखा,
आदर्श-संस्कार परोपकार में-2, तुमने पिछड़ापन ही तो देखा।।... (2)

इसलिए तो साक्षर बनकर, राक्षस बनना तुम्हें भाया,
इसलिए तेरे जीवन की सुरभि-2, कागज कुसुम सम ही रही।।... (3)

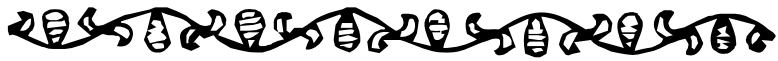

टेन्शन दुश्चिन्ता डिप्रेशन से, तेरा जीवन दूभर हुआ,
जिससे कलह से आत्महत्या तक-2, तुम्हारे जीवन में प्रवेश किया।।... (4)

धर्म भी पढ़ा धार्मिक बना, ढोंग-पाखण्ड का धर्म भी किया।
समता पवित्रता शान्ति त्याग-2, राग-द्वेष को तुमने अपनाया।।... (5)

भेद-भाव व अहंकार में, तुमने धर्म को सही माना।
जिससे तुमने शान्ति के बदले-2, अशान्तिमय जीवन ही जीया।।... (6)

इसी से कलह वाद-विवाद व, हिंसा प्रतिहिंसा का जन्म हुआ।
आतंकवाद व युद्ध महायुद्ध-2, धर्म के नाम पर तुमने किया।।... (7)

राजनीति व्यापार आदि में, ऐसा ही दुरुपयोग किया।
सत्य समता शान्ति के बिना-2, सभी प्रयासों ने कुफल ही दिया।।... (8)

अभी तो चेतो सत्य को जानो, स्व-पर विश्व का कल्याण करो।
''कनकनन्दी'' का आह्वान सुनकर-2, सत्य-तथ्य का भान स्वयं ही करो।।... (9)

आधुनिक पढी-लिखी रानी

(आधुनिकता से नारी के लिए सुविधा एवं समस्यायें)

तर्ज :- (1. हे गुरुवर धन्य हो तुम... 2. होठों पे सच्चाई...)

आधुनिक पढ़ी-लिखी रानी है, कौन भरेगी (अब) पानी (है)
नदी भी आ गई किचन में, डिनर खाते हैं होटल में 2 (टेक)...

आटा मसाला न पीसती है, पैकेट में रेडीमेड लाती है
सड़े गले मिलावट मिलते, चमक दमक पैकिंग भाती है 2 (1)...

पानी छानना नहीं आता है, बिसलेरी वाटर (जो) पीती है।

दश रूपयों में मिले एक लीटर जिससे लगे स्टेटस सिम्बल।। (2)...

बाइक से वार्किंग जाती है, मन्दिर पैदल न जाती है।
किटी पार्टी क्लब (में) जाती, आहार दान न करती है।। (3)...

टीवी सिरियल देखती, स्वाध्याय प्रवचन न जाती है।
फैशन से शरीर सजाती है, मन का मंजन न करती है।। (4)...

ब्यूटी पार्लर जाती है, बडों की सेवा न करती है।
गप्प में समय बिताती है, बच्चों को संस्कार न देती है।। (5)...

लिपिस्टिक ओंठ में लगाती (है), खाना बनाना न जानती है।
नेलपालिश नखों में लगाती है, घर की सफाई न आती है।। (6)...

अप टू डेट मैडम बनती है, ज्ञान-विज्ञान न जानती है।
हाईहिल सेण्डल पहनती है, स्वास्थ्य रक्षा न जानती है।। (7)...

प्रेमी के साथ घूमने जाती, अनैतिक पूर्ण काम करती।
इससे उसे शर्म न आती, अच्छे कामों में शर्माती है।। (8)...

इन कारणों से होती निष्क्रिय, आलस्य प्रमाद छा जाता है।
व्यवहार ज्ञान सदाचार बिना, बुद्धि का विकास न होता है।। (9)...

हिताहितज्ञान पुण्यपापबिना, महान् विचार न होता है।
इसके बिना सुख-शान्तिमय, जीवन कभी न बनता है।। (10)...

तनाव रहता प्रेम न मिलता, सहयोग भी न मिलता है।
एकली होती उदास रहती, खोटा (छोटा) विचार आता है।। (11)...

मोटापा आता शुगर लाता, दिल भी कमजोर होता है।
हड्डी भी होती कमजोर भंगुर, शरीर होता रोग का घर।। (12)...

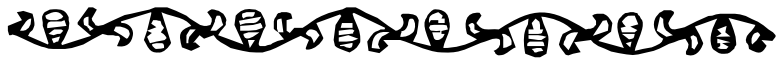

इत्यादि से वह दुःखी भी होती, झगड़ा संक्लेश निन्दा होती।
तलाक देती या घर से जाती, आत्महत्या से जीवन देती।। (13)...

इसलिए बहिनों संभल जाओ, शिक्षित बनो, आदर्श बनो
मूल को सींचो विकास करो, 'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो।। (14)...

हे विश्वगुरु भारतीय पिछड़ापन त्यागो

(राग - हे! वनगिरि... हे! लतागिरि... उड़िया-बंगला...)

हे! धर्मवीर हे! कर्मवीर हे! ज्ञानवीर, पिछड़ापन अभी छोड़ो...2
विश्वगुरु भारत क्यों बन गया छोटा, पिछड़ा से भी पीछे बनकर है खोटा
स्वास्थ्य शिक्षा आय व मानव विकास में, एक सौ चौंतीस पायदान में बैठा/(खड़ा)।।...
(स्थायी/टेक)...

श्रीलंका चीन व मालदीव से पीछे, इराक फिलीपींस पिछड़ा से भी पीछे
आजाद हुए अभी चौषठ वर्ष हुए, तीन पीढ़ी बीती तथापि पीछे रहे
इसी के मूल में है स्वयं ही जिम्मेदार, अनुशासनहीन प्रमाद भ्रष्टाचार।। (1)

स्व-संस्कृति को छोड़ा नकलची है बना, विवेक अनुभव सामान्य ज्ञान बिना
रटन्त पढ़ाई को सर्वस्व तू ही माना, धन को ही समस्त सुख का मूल है माना
आधुनिक होने का तुमने ढोंग रचा-किन्तु ज्ञान, विज्ञान तुमने नहीं जाना/(माना)।।(2)

भ्रष्टाचार के द्वारा विकास करते तुम, कर्त्तव्य उत्पादन श्रम से रहते दूर
प्रदूषण बढ़ाते स्वच्छता नहीं रखो, प्रेम सहयोग सदाचार से दूर
धर्म के नाम पर करो है ढोंगाचार, राजनीति न्याय में नहीं है सत्याचार।। (3)

मिलावट सर्वत्र औषधि भोजन में, अन्नदाता किसान होता है अनादर
नौकर होकर बनते शहनशाह, भद्र व शिष्ट व्यक्ति होता है अनादर
इत्यादि कमियों को त्याग महान् बनों, 'कनकनन्दी' का आह्वान तुम मानो।। (4)

भारतीयों की आत्महत्या संख्या बढ़ने के कारण एवं निवारण

(राग - जब जीरो दिया मेरे भारत ने...)

क्या हो गया उस भारत को... भारत को मेरे भारत को... जिसने अमृतपान किया था
विश्व को अमृत पाठ पढ़ाकर... विश्वगुरु भी कभी था... (टेक)...

अभी तो जीना भी नहीं आता है आत्महत्या पर तुला हुआ है।
बाल विद्यार्थी से प्रारम्भ होकर नेता तक यह कार्य होता है।।

डेढ़ लाख हर वर्ष में होती आत्महत्या भारत में होती।
पञ्चदश हर घण्टा मे होती तीन सौ एकत्तीस रोजाना होती।।

तीस वर्ष से कम उम्र के/(में) अड़तीस फीसदी इसी श्रेणी में।
वर्ष चवालीस उम्र तक के सत्तर फीसदी बढ़ी इसी में।।

सत्तर फीसदी विवाहित नर सतषट् होती है विवाहित नारी।
सात हजार से अधिक संख्या में विद्यार्थीजनों ने आत्महत्या की।।

भारत में बीस फीसदी होती धरती भर की आत्महत्या की।
कृषकों की संख्या हजारों होती कर्जों से आत्महत्या बढ़ती।।

अन्यान्य कारण और भी होते पढ़ाई तनाव विशेष होते।
गरीबी रोग व गृह कलह ईर्ष्या विद्धेष व प्रिय विरह।।

नैतिक संस्कृति आध्यात्मज्ञान दूर हो रहा है सादा जीवन।
भौतिकतापूर्ण भोगमय जीवन सेवा त्याग शून्य तुच्छ सपन।।

प्रतिस्पर्द्धामय अति आकांक्षा आदर्शविहीन संकीर्ण शिक्षा।
क्षुद्र उद्देश्य व कुण्ठित मन दूरदृष्टि हीन संकीर्ण ज्ञान।।

भारतीय संस्कृति तो त्याग दिये पाश्चात्य संस्कृति (को) न जान पाये।
पाश्चात्य अन्धानुकरण करके न अतो रहे न ततो रहे।।

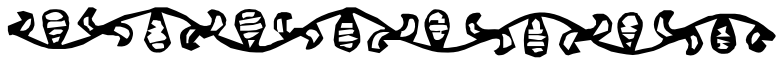

आध्यात्म संस्कृति वाला भारत में धर्म में भी नहीं नैतिकता।
भौतिक संस्कृति वाला पाश्चात्य में व्यापार में भी है नैतिकता।।

जो मूल छेद करके वृक्ष से फल-फूल छाया प्राप्त करता।
वैसी ही दशा आज भारत में जिससे यह सब घटित होता।।

शिक्षित भी बनो आधुनिक बनो नैतिक आध्यात्म सहित बनो।
हर कार्य हर विकास क्षेत्र में इसी के द्वारा ही महान् बनो।।

दुर्बलतापूर्ण भावना त्यागो अमृत तुम हो स्वयं में जागो।
मानव जन्म को सार्थक करो 'कनक' का भाव स्वीकार करो।।

विज्ञान से भी महान् धर्म की उपयोगिता क्यों कम हो रही है?!

(रागः- हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम...)

विज्ञान से है भौतिक ज्ञान... धर्म से भौतिक आत्मिक ज्ञान।
विज्ञान से है भौतिक सुख... धर्म से भौतिक आत्मिक सुख।
विज्ञान से ऐहिक सुख... धर्म से ऐहिक परलोक सुख।
विज्ञान से है सीमित ज्ञान... धर्म से अनन्त अक्षय ज्ञान।
विज्ञान से है मूर्तिक ज्ञान... धर्म से मूर्तिक अमूर्तिक ज्ञान।
विज्ञान है मानवकृत भौतिकरूप... धर्म है प्राकृतिक वस्तु स्वरूप।
विज्ञान होता है सादि 'व' सान्त... धर्म होता है अनादि अनन्त।
विज्ञान से होता भौतिक विकास... धर्म से होता सर्व विकास।
विज्ञान ग्राह्य तो बन रहा है... धर्म का प्रभाव घट रहा है।
इसी में कारण अनेक होते... अन्तरंग तथा बाह्य भी होते।
भाव उद्देश्य कर्म संस्कार... अन्तरंग कारण होते प्रवर।

बाह्य में साधन सुख सुविधा... उपयोगिता व प्रयोगधर्मिता।
भौतिकवादी मानव अधिक हो गया... उसके लिए विज्ञान साधन बन गया।
विज्ञान की उपयोगिता बढ़ गई... प्रयोगधर्मिता विज्ञान की बढ़ गई।
धर्म में आड़म्बर दिखावा बढ़ गया... पवित्र भाव तो गायब हो गया।
अध्यात्म तो धर्म में न रहा... धन जन मान का प्रभाव बढ़ गया।
भेद-भाव कलह प्रवेश कर गया... कट्टर संकीर्ण स्वार्थ आ गया।
धर्म की उपयोगिता खतम हो गई... प्रयोगधर्मिता गायब हो गई।
श्रद्धायुक्त तर्क न रहा अभी... आपाधापी का जीवन हो गया अभी।
समीक्षा-समन्वय धर्म में नहीं रहा... मनोरञ्जन का साधन बन गया।
भौतिक क्रिया-काण्ड धर्म हो गया... आत्म परिमार्जन गौण हो गया।
उपदेश का व्यापार चल रहा... धन जन मान का क्रय भी हो रहा।
धर्म में राजनीति-व्यापार पैठ गया... निष्पृह साधक का मूल्य भी घट गया।
भौतिक सुख का साधन बन गया... आत्मिक सुख का लक्ष्य भी न रहा।
धर्म का प्रभाव इसी से घट रहा... धर्मी के बिना प्रभाव कहाँ रहा?
दीपक जले बिना प्रकाश नहीं देता... धर्मी के बिना धर्म का भी तथा होता।
धर्म तो धारण करने योग्य होता... ढोंग व पाखण्ड से धर्म का नहीं नाता।
धर्म की धारणा में 'कनक' सदा रत... विश्व में धर्म फैले इसी के लिए रत।

मानव (जाति) जब स्व-इतिहास पढ़ेगा!

(रागः 1. छोटी-छोटी गैया... 2. यमुना किनारे... 3. अच्छा सिला दिया...)

मानव जब स्व-इतिहास पढ़ेगा... हर्ष विषाद व आश्चर्य करेगा।
सोचेगा कहाँ मेरा काम महान्... तीर्थंकर बुद्ध यथा व्यक्तित्ववान्।। (1)

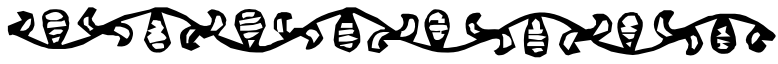

अन्य पक्ष का जब पाठ करेगा... विषादमय आश्चर्य करेगा।
सोचेगा कहाँ मेरा निकृष्टमान... शेर चीता से भी जघन्य काम।। (2)

जब ये मानव दयालु होगा... सत्य न्याय के मार्ग पे चलेगा।
उदार सहिष्णु महान् होगा... तब ही मानव में यह भाव जगेगा।। (3)

मैंने तो अहिंसा का पालन किया... अहिंसा प्रचार का काम भी किया।
अन्य पक्ष में तो हिंसा ही किया... धर्म के नाम पर बलि चढ़ाया।। (4)

मुक्ति प्राप्ति हेतु चक्रीत्व त्यागा... पाप-पुण्य तथा देह भी त्यागा।
इसी से विपरीत काम भी किया... पशु-पक्षी स्वजाति को दास बनाया।।(5)

विश्वकल्याणार्थे काम भी किया... ज्ञान दान सेवा द्वारा काम ये किया।
इसी से प्रतिलोभ काम भी किया... युद्ध आदि कुकृत्य से विनाश किया।।(6)

आत्महित हेतु उपवास भी किया... दान सेवा द्वारा उपकार भी किया।
स्वार्थी व क्रूर काम मैंने भी किया... देह व जीभ हेतु मांस भी खाया।। (7)

परम विचित्र मेरी जाति की वृत्ति... चरम विरोधाभास मेरी प्रवृत्ति।
मेरा आदर्श पक्ष महापावन... अन्यदृष्टि से मैं ही पापी महान्।। (8)

अतएव/(सर्वथा) 'कनक' मुझे न माने महान्...महान् व्यक्ति अतिरिक्त माने अधम।
सम्पूर्ण मेरी जाति बने पावन... इसी हेतु सतत करे है ध्यान।। (9)

ओगणा, दि= 4.3.2012, रात्रि 11.38

अभी लोगों की भीड़ बढ़ी, सामाजिकता घटी
(भीड़ की विभिन्न समस्याएँ)

(रागः- जब जीरो दिया मेरे भारत ने...)

क्या हो गया उस समाज को/(उस जनता को) समाज को मेरी जनता को...
जो प्रेम संगठन में रहता था।

दूसरों के सुख-दुःख में जो, हरदम सहभागी होता था।।

जो सहयोग-संगठन में रहे, नीति-नियम से चलता है।
उसे ही समाज कहा जाता है, अन्यथा दुष्टों का गिरोह हुए।। (1)

व्यक्ति समूह न होता समाज, भीड़ गैंगस्टर नहीं समाज।
भीड़ में न होता प्रेम-सहयोग, गिरोह में नहीं नीति संयोग।। (2)

चर्बी बढ़ी मोटा शरीर सम, भीड़ में संख्या की वृद्धि हुई।
मोटापा में यथा रोग घेरते, भीड़ में समस्या घिर गई।। (3)

भीड़ से शब्द वायु प्रदूषण, निवास समस्या भी बढ़ गई।
गन्दगी व यातायात समस्या, सुलसा के समान बढ़ती गई।। (4)

मच्छर चूहों की तादाद बढ़ी, प्लेग मलेरिया की समस्या बढ़ी।
जल प्रदूषण होने के कारण, पीलिया पेचिश की समस्या बढ़ी।। (5)

आवास-निवास समस्या कारण, फुटपाथ में सोना पड़ता है।
कुत्ता चूहा बिल्ली सूअर आदि से, अनेक कष्टों को भोगना होता है।। (6)

दया विहीन उद्दण्ड व्यक्ति की, गाड़ी भी कभी आकर चढ़ती।
घायल अपंग होने के साथ ही, मृत्यु भी कभी आ घेरती।। (7)

अड़ोसी-पड़ोसी लाखों लोग होते, कोई किसी को नहीं जानते।
सहयोग वे तो नहीं करते, उल्टे विभिन्न यातना देते।। (8)

चोरी धोखाधड़ी बलात्कार या, अपहरण व हत्या करते।
चन्दा व हफ्ता वसूली हेतु, कष्ट सहित मृत्यु भी देते।। (9)

भीड़ तन्त्र व भेड़िया तन्त्र या, धनबल बाहुबल बोलता।
सरल-सहज-सामान्य व्यक्ति, हर जगह मारा-मारा फिरता।। (10)

बगुला के सम सभ्य साक्षर, स्वार्थ-सिद्धि में होते चतुर।
मिलावट व भ्रष्टाचार के द्वारा, भोले मानवों का करे शिकार।। (11)

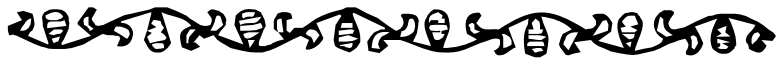

फैशन-व्यसन प्रमाद बढ़ा, दिखावा व आडम्बर बढ़ा।
व्यवहार व नैतिकता बिना, अस्त-व्यस्तमय जीवन बढ़ा।। (12)

अतिथि सत्कार साधु सेवा तो, धीरे-धीरे लोप हो रहा।
खेती करना वृक्ष लगाना, गाय पालना भूल/(छूट) सा गया।। (13)

भीड़-भाड़ व चहल-पहल, शोर-सराव बहुत बढ़ गया।
चमक-दमक बाजार बढ़ा, किन्तु मानवता कहाँ खो गया।। (14)

मधुरता शान्ति मेल-मिलाप, आदान-प्रदान प्रेम खो गया।
सादा जीवन उच्च विचार, खाना-खिलाना भूल-सा गया।। (15)

शान्ति समता समन्वय व, स्वास्थ्य सदाचार कम हो गया।
चमड़ी-दमड़ी पढ़ाई बड़ाई, इसके पीछे पागल हो गया।। (16)

इसी हेतु तुम्हें 'कनकनन्दी', आह्वान करे कविता द्वारा।
विकास न बने विनाश तेरा, जागृत रहो है जीवन सारा।। (17)

"स्वीकार्य-अस्वीकार्य"

(तर्ज :- आसरा इस जहाँ ...)

जिस वचन में सत्य व शान्ति न हो,

उस वचन को ग्रहण कभी न कीजिये।

जिस भोजन में सात्त्विक सत्त्व न हो,

उस भोजन को ग्रहण न कभी कीजिये।

जिस धर्म मे सत्य व समता नहीं,

उस धर्म को स्वीकार मत कीजिये। जिस वचन .... ।।

जिस गुरु में आध्यात्म का भाव नहीं,

उनसे आत्मा का ज्ञान नहीं लीजिये।

जिस साहित्य से विश्व हित भी न हो,

उस साहित्य को कभी मत पढ़िये। जिस वचन .... ।।

जिस निर्णय में न्याय का पक्ष न हो,

उस निर्णय को कानून मत मानिये।

उस राजनीति को भी मत मानिये,

जिससे प्रजा को कभी भी सुख न मिले। जिस वचन .... ।।

उसे शिष्य रूप में न स्वीकारिये, जिनमें नम्रता सत्यग्राहिता न हो।

वह बन्धु भी सच्चा बन्धु नहीं, जो विपत्ति में सहयोगी न बने।

वह पिता भी सच्चा पिता नहीं, जो सन्तान को पाप से न बचाये।

वह माता भी सच्ची माता नहीं, जो सन्तान को सत् संस्कार न दे।

वह पत्नी भी सच्ची पत्नी नहीं, जो धर्म में सहयोगी न बने।

वह भाई भी सच्चा भाई नहीं, जो नैतिकता में सहयोग न दे।

वह बहन भी सच्ची बहन नहीं, जो सुख-दुःख में सहयोग न दे।

वह समाज भी क्या समाज है, जो विकास में न सहयोगी बने।

वह राष्ट्र भी कैसा सुराष्ट्र है, जो स्वयं की रक्षा कर न सके।

वह साहस भी क्या साहस है, जो संकट को भी सह न सके।

वह नीति भी क्या सुनीति है, जो सत्य की रक्षा कर न सके।

उस पुरुषार्थ को भी मत करो, जो आत्मा को शान्ति दे न सके।

केवल भौतिक विकास बनता है विनाश का कारण

(नैतिकता-आध्यात्मिकता बिना भौतिकता दुःखदायी)

भौतिक विकास जो नैतिक बिना है, अन्त में विनाश होता निश्चय है।
नैतिक विकास से सहित विकास है, अन्त में सुखप्रद होता निश्चय है।।

आत्मिक विकास से सहित विकास है, अन्त में मोक्षप्रद होता निश्चय है।
आत्मिक विकास से समग्र विकास है,नैतिक भौतिक छाया के समान है।।

समग्र वृक्ष में फूल भी फल हैं, विकास होता जब सींचते मूल है।
मूल को काटने से यथा फल मिलता, भौतिक विकास भी नीति बिन होता।।

बीज के बिना यथा वृक्ष नहीं बनता,आत्मिक सुख बिन सब ही व्यर्थ होता।
इसी के हेतु राज्य त्यागे हैं तीर्थंकर, बुद्ध व ऋषि मुनि आचार्य गणधर।।

जो भोगे राज्य भोग मृत्यु के अनन्तर,नरक निगोद में सहते दुःख घोर।
बहुआरम्भ परिग्रह नरक हेतु कहा, लोभ को पाप का बाप भी अतः कहा।।

भौतिक विकास से लंका का नाश हुआ, माया सभ्यता व ओंकारबाट(कम्बोडिया)हुआ।
ग्रीस सभ्यता व कंस का नाश हुआ, विनाश कौरव हिटलर भी हुआ।।

जितने राजा महाराजा या तानाशाही,आक्रान्ता लुटेरा भ्रष्टाचारी वा कोई।
मन्त्री मुख्यमन्त्री प्रधानमन्त्री कोई, सब की दुर्दशा नीतिहीन से हुई।।

भौतिक विकास तो मोटापा सम होता, डायबिटीज के सम नाना विनाश लाता।
डायबिटीज यथा अनेक रोग लाता, भौतिक विकास भी बहु विनाश लाता।।

अनीति अत्याचार शोषण भ्रष्टाचार, फैशन-व्यसन व आलस्य अहंकार।
प्रकृति हनन व विभिन्न प्रदूषण, जिससे होते हैं विनाश भयंकर।।

ग्लोबल वार्मिंग अधिक-हीन वृष्टि, बाढ़-अकाल सुनामी जिसका फल।
ग्लेशियर गलन, प्रजाति विलोपन, विभिन्न रोगों का होता है आक्रमण।।

धनी व गरीब व शोषक-शोषित, जिससे बनता है कृत्रिम अकाल।
जिससे उत्पन्न होता है संघर्ष, युद्ध महायुद्ध तथा महाप्रलय।।

धर्म में जो लिखा विश्व में जो हुआ, विज्ञान भी उसे सच मान रहा।
अनुभव द्वारा मैंने जो पाया, उसे ही मैंने लेखन किया।।

मानव यदि तू विकास चाहो है, अध्यात्म नैतिक सहित चलो है।
'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो है!भौतिक तृष्णा को शमन/(संयम) करो है।।

''हर अच्छाईयों को विकृत करता है मानव''

(तर्जः चौपाई...)

मानव सभी में ही विकृत करता, धर्म व राजनीति कानून शिक्षा का।
पर्यावरण व नीति नियमों का, संस्कृति प्रकृति खान-पान का।।

महापुरुष जो आदर्श पालते, सत्य शान्ति हेतु पाठ पढ़ाते।
उनके आदर्श पाठ को न मानता, संकीर्ण स्वार्थ हेतु प्रयोगा करता ।।1।।

धर्म के नाम पर विद्वेष फैलाता, भेद-भाव कर विद्रोह करता।
कट्टर रूढ़ि व अज्ञान पालता, अन्धश्रद्धा व हिंसा भी करता ।।2।।

अन्याय अत्याचार शोषण करता, आक्रमण व युद्ध भी करता।
आडम्बर युक्त क्रिया भी करता, आतंकवाद व अशान्ति करता ।।3।।

समतापूर्ण सहअस्तित्व निमित्त, राजनीति व कानून जात।
न्यायपूर्ण सर्वोदय के हेतु, संस्कृति सदाचार/(रक्षण) निर्माण हेतु ।।4।।

मानव इनका प्रयोग करता, स्वार्थ सिद्धि हेतु अन्यथा करता।
राजनीति से सत्ता हथियाता, अन्याय अत्याचार युद्ध भी करता ।।5।।

धर्म की विकृति से जो कुछ करता, कमोवेशी तथा यहाँ भी करता।
कानून में न्याय अन्याय करता, राजनीति सम यहाँ भी करता ।।6।।

तथाही शिक्षा से विकृति पालता, अहंकारी बन उद्दण्ड बनता।
फैशन व्यसन आलस्य पालता, मुक्ति के बदले मुक्ति को चाहता ।।7।।

पर्यावरण से जीवन जीता, तथापि उसी का विनाश करता।
वृक्ष व पशुपक्षी 'मछली मारता', जल थल वायु दूषित करता ।।8।।

नीति नियम अनुशासन नाशता, प्रकृति से विपरीत भी करता।
पशु भी प्रकृति-नियम पालता, तृणभक्षी पशु क्या मांस खाता ।।9।।

मानव सर्वभक्षी दानव बनता, कीट व पशुपक्षी सर्प भी खाता।
अंगूर फलादि को विकृत करता, मद्य बनाकर नशेडी बनाता ।।10।।

हर पाप व व्यसन करता, पशु की मुर्दा से शरीर सजाता।
प्रकृति शोषण खूब ही करता, प्रत्युपकारी नहीं कृतघ्न बनता ।।11।।

मानव इसलिये नरक जाता, सप्तम नरक का दुःख भी भोगता।
पंचम नरक तक शेर तो जाता, शेर से अधिक पाप जो करता ।।12।।

मानव में जो महान् होता, वह ही सच्चा मानव होता।
अन्य तो दानव समान होता, विकृति त्यागने से महान् बनता ।।13।।

विकृति त्याग हेतु बनी ये रचना, अन्य कुछ नहीं मेरी प्रयोजना।
कनकनन्दी की समस्त रचना, स्व-पर हित हेतु हुई है सर्जना ।।14।।

झाड़ोल- 30.3.2012, रात्रि 10.33

''धनप्रधान भारत की दुर्दशा''

(तर्जः छोटी छोटी गैया...)

आज श्रेष्ठ/(महान्) भारत को क्या हो गया? आध्यात्मिक त्यागकर भौतिक हो गया।
जिससे भारत विश्वगुरु कहाया, उसके त्याग से भ्रष्टदेश कहाया ।।1।।

आध्यात्मिकता से ज्ञान-विज्ञान पाया, सभ्यता संस्कृति गणित शिक्षा पाया।
राजनीति कानून व्यापार कृषि, अध्यात्म प्रभावी गृहाश्रमी, ऋषि ।।2।।

भौतिकमय वर्तमान हो गये, ज्ञान-विज्ञान से लेकर ऋषि (भी) हो गये।
भौतिक ही लक्ष्य साधना साध्य रूप, हर धर्म जाति क्षेत्र भौतिक रूप ।।3।।

पढ़ाई का प्रारम्भ लौकिक/(धन) से होता, माध्यम साधन साध्य भौतिक होता।
ज्ञानदान के बदले में शोषण होता, जिसका परिणाम भ्रष्टाचार में होता ।।4।।

'यथा बोया तथा पाया' सूत्र बताता, पढ़ाई का परिणाम सर्वत्र दिखता।
बाल-काल का संस्कार आगे फलता, पूर्वप्रयोग से आगे कार्य भी होता ।।5।।

हर क्षेत्र में आज (जो) भ्रष्टाचार भी होते, प्रायः भौतिकता से प्रभावी होते।
पढ़ाई व राजनीति व्यापार सेवा, कानून से लेकर राष्ट्र/(रक्षा) की सेवा ।।6।।

भौतिकता प्रभाव जहाँ अधिक होता, उसकी महानता आज देश मानता।
इसी से भी हर क्षेत्र भौतिकमय हो गया, शिक्षा से लेकर धार्मिक क्षेत्र में हो गया।।7।।

शील सदाचार धर्म क्षीण हो रहे, न्याय राजनीति देश बेचे जा रहे।
औषधि से भोजन तक विष हो गये, नेता-अभिनेता आदि राजा हो गये ।।8।।

भौतिक रक्तबीज सर्वत्र हो रहा, भस्मासुर के समान सब खा रहा।
धर्म भी तो आज धनमय हो गया, धन-जन-मान हेतु धर्म हो गया ।।9।।

धनज्ञान धनमान धनधर्म हो गया, धन बिना सब कुछ शून्य हो गया।
जिसके त्याग होते थे मानव महान्, आज उसके ग्रहण से (होता) पापी भी महान्।।10।।

त्याग-धर्म भी संग्रहमय हो गया, त्याग उपदेश भी धन हेतु हो गया।
धन के एजेंट भी त्यागी-साधु हो गये, गृहस्थ भी इनसे लाभ ले रहे ।।11।।

इसी से भारत आज नरक हो गया, भ्रष्टाचारी धनिकों का स्वर्ग हो गया।
निस्पृह सन्तों की आज नहीं है डिमांड, धनद सन्तों की होती सर्वत्र डिमांड।।12।।

इसी से वैराग्य मेरा बढ़ता जा रहा, धार्मिक आयोजन से भी विरक्त हो रहा।
'आदहिदं कादव्वं' बढ़ता जा रहा, 'कनक' का भाव अध्यात्म हो रहा ।।13।।

झाड़ोल (फ.) 7.4.2012, रात्रि 11.05

''घट रहा है सामान्य ज्ञान एवं नैतिकाचार''

(तर्जः 1. कभी प्यासे को पानी पिलाया...
2. जब जीरो दिया मेरे भारत...)

क्या हो गया उस भारत को जो कभी विश्वगुरु कहलाता था।
शिक्षा/(कला) सभ्यता संस्कार संस्कृति, नैतिकता से जो परिपूर्ण था ।।1।।
आज उस ही देश भारत में, नैतिकता भी लोप हो रही।
साक्षरता की तो बाढ़ आ रही, सदाचारिता लोप होती जा रही ।।2।।

क्रिया-काण्ड धर्म होता जा रहा, परोपकार तो कम होता जा रहा।
विशेष ज्ञान तो कुछ कर रहे, सामान्य ज्ञान से हीन होते जा रहे ।।3।।

स्वास्थ्य कर भोजन छोड़ रहे, जो सात्विक पौष्टिक ताजा है।
रेडीमेड खाना खाते जा रहे, जो महंगा व रोग का घर है ।।4।।

प्रातः जागरण प्रभु स्मरण, भ्रमणश्रम छोड़ते जा रहे।
देर रात तक टी.वी. सिनेमा मोबाइल, क्लब गप्प में समय बिता रहे ।।5।।

हाय हैलो टाटा तो कर रहे, नमोऽस्तु प्रणाम को भूल रहे।
मम्मी डेड आंटी अंकल बोल रहे, माता-पिता चाचा-चाची भूल रहे ।।6।।

कम्प्युटर इन्टरनेट गाडी चला रहे, जीवन जीने की यात्रा भूल रहे।
मोबाइल से निरन्तर बोल रहे, सत्य मृदु बोलना भूल रहे ।।7।।

फैशन व्यसन दिखावा खूब आता है, स्वास्थ्यकर ज्ञान बिल्कुल नहीं आता है।
आधुनिकता का ढोंग बहुत आता है, स्वच्छता ज्ञान भान नहीं आता है।।8।।

घडी का फैशन तो बढ़ता जा रहा, समय का नहीं मूल्य व भान रहा।
वेशभूषा का फैशन बढ़ा जा रहा, अश्लील अंग प्रदर्शन फूला फला ।।9।।

विश्व ग्लोबल विलेइज होता जा रहा, पडोसी के दुःख दर्द का भान न रहा।
फेवरेट खिलाड़ी अभिनेता हुए, माता-पिता बन्धु जन पराए हुए ।।10।।

सहज सरल मृदुता नैतिकाचार, सर्व मानव का होता (है) मूलाचार।
मछली का यथा है जलसंचार, पक्षी का यथा है गगनाचार ।।11।।

नैतिकाचार बिना वह मानव, पशु से भी नीचा वह है दानव।
प्राकृतिक गुण पशु न त्याग करे, मनुष्य श्रेष्ठ क्या है जो त्याग करे।।12।।

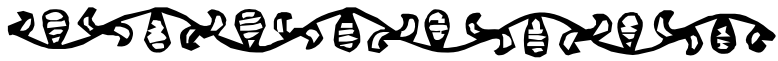

धार्मिक साधु साध्वी बन रहे, प्रवचन कार्यक्रम भी हो रहे हैं।
धन जन प्रदर्शन बढ़ रहे, ज्ञान वैराग्य आध्यात्म घट रहे ।।13।।

अन्तर्राष्ट्रीय चर्चा तो खूब होती, देशभक्ति की भावना घट रही।
पुस्तकीय ज्ञान तो कर रहे, व्यवहार/(सामान्य) ज्ञान से अज्ञ हो रहे।।14।।

जड़रहित वृक्ष की स्थिति सम, पंख रहित पक्षी की गति सम।
नैतिकाचार सामान्य ज्ञान बिना, मानव सुखी न होता सही सम ।।15।।

भोजन पानी वस्त्र से भी प्राणवायु, अधिक उपयोगी जैसे आयु।
तथाहि सदाचार सामान्य ज्ञान, अधिक उपयोगी यह है जान ।।16।।

इसीलिए प्रयत्न अधिक करो, इसकी उपेक्षा कभी भी न करो।
'कनकनन्दी' का भाव जानो मानो, सर्वोदय हेतु इसे स्वीकार करो ।।17।।

ओगणा 9.3.2012, प्रातः 10.27

सर्वत्र विकास के बाधक : रूढ़िवाद

(रागः 1. कसमें वादे प्यार वफा... 2. चन्दा मामा...)

मैं स्वयं पूछूँ मुझसे पुनः पूछूँ इस दुनियाँ से
क्या कभी विकास किया/(हुआ) है, संकीर्ण रूढ़िवाद सेऽऽ
यथा पिञ्जरा बद्ध पक्षी न, उड़ पाता है गगन में
तथा ही मानव भी न विकास, करता है रूढ़ि से/(में)... (ध्रु.)...

बलि व दास प्रथा दहेज व, मृत्युभोज आडम्बर है/(से)ऽऽ
ऊँचा-नीचा भेद-भाव, शोषण-शोषक व्यसन है/(से)ऽऽ
ईर्ष्या-द्वेष घृणा भाव से, धनी व गरीबी में/(से)ऽऽ
पावन भाव बिन किसी भी, कार्य व क्षेत्र से/(में)ऽऽ... क्या कभी...(1)...

मिथ्या आडम्बर दिखावा व, फिजूलखर्ची काम सेऽऽ
सत्य समता शान्ति रहित, किसी भी धर्म व कर्म सेऽऽ
विवेक-आचार रहित किसी भी, शिक्षा या डिग्री सेऽऽ
समता न्याय से रहित किसी भी, संविधान या नीति सेऽऽ...क्या कभी(2).

राष्ट्र के हित बिना किसी भी, राजनीति व्यवस्था सेऽऽ
निष्पक्ष शीघ्र न्याय बिना किसी, कानून या दण्ड सेऽऽ
सहयोग सदाचार रहित किसी भी, समाज या संगठन सेऽऽ
महान् लक्ष्य के बिना किसी भी, साधन या साधना सेऽऽ..क्या कभी(3)...

वात्सल्य वैयावृत्ति रहित, धार्मिक समाज संघ में/(से)
कर्त्तव्य अनुशासन साहस बिन, मानव के जीवन में/(से)
उदार अनुभव बिन धार्मिक, ज्ञान या आचार से/(में)
'कनकनन्दी' हर कार्य करता, सतत सत्य समता में/(से)..क्या कभी(4)

झाड़ोल (फ.), दि= 12.4.2012, मध्याह्न 1.54

''भारत के आधुनिक आदर्श हीरो-हीरोइन''
(भारत की दुर्दशा के कारण नट-नटी)
(व्यंग्यात्मक, सुधारात्मक कविता)

(तर्जः छोटी छोटी गैया...)

सच्चाई है आज भारत गर्त हो गया, सोल को छोड़कर सेक्सी हो गया।
सोल (Soul) से सेक्सी में प्रोग्रेस हो रहा, सेक्स के कारण वतन शैतान बन रहा।।

वर्धमान राम जिनके नायक होते थे, जिनसे भारतीय आदर्श पाते थे।
आज उनका महानायक हीरो हो गया, मन्दिर भी जिनके लिए निर्माण हो गया।।

सीता ब्राह्मी जिनके आदर्श होती थी, भारत की नारी जिनसे आदर्श पाती थी।
आज उनके आदर्श सेक्सी/(नटी) हो गई, भारतीय नारी उनसे शिक्षा ले रही।।

हीरो एण्ड हीरोईन ब्रॉण्ड बन गये, इनके प्रभाव क्षेत्र ब्रॉड बन गये।
भारत के आज वे एम्बेसेडर बन गये, नेता अभिनेता खलनेता बन गये।।

भारतीय आदर्श का लोप हो रहा, भारतीय स्वाभिमान चुप हो रहा।
'ईट ड्रिंक मेरी' का देश हो रहा, कनक को इसलिए दुःख हो रहा।।

झाड़ोल - 14.4.2012, रात्रि 12.57

मोही-अज्ञानी जीव करता है विपरीत प्रवृत्तियाँ स्व स्वभाव मानकर

(सत्य-तथ्य से विपरीत भाव एवं व्यवहार करता है मोही अज्ञानी जीव)

सुनो सुनो हे! दुनियाँ वालो!... मोही जीव की अधर्म-गाथा।
सत्य-तथ्य को बिना जानकर... करता अधर्म मानता सच्चा/(अच्छा)।।...(टेक)

सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि देह को... स्व-स्वरूप मान करता भोग।
क्रोध मान माया लोभ काम को... अपना मानकर करे प्रयोग।।

सत्ता के लिए करता पाप... अन्याय से लेकर युद्ध संहार।
सत्ता प्राप्ति से बढ़ाये मान... शोषण क्रूरता अत्याचार।।

तथाहि सम्पत्ति हेतु भी जान... सत्ता भी सम्पत्ति प्राप्ति कारण।
दोनों अन्योन्याश्रित भी जान... जड़ को माने अपना प्राण।।

सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि हेतु... तीनों भी अन्योन्याश्रित हेतु।
प्रसिद्धि भी जड़ात्मक जान... इनाम लिखित या वचन।।

देह तो रज वीर्य निर्मित... धातु उपधातु उसके तत्त्व।
हड्डी मांस चर्म जड़ स्वरूप... तथापि माने है अपना रूप।।

इसी हेतु राग मोह करता... शरीर निमित्त पाप भी करता।
जन्म जरा अन्त देह का होता... इसे भी मोही अपना मानता।।

क्रोध मान माया लोभ काम को... मोही तो अपना रूप मानता।
मेरा क्रोध मैं हूँ मानी... माया लोभ व काम मानता।।

धर्म है निज शुद्ध स्वभाव... क्रोध मान माया लोभ रहित।
तो भी मोही क्रोधादि करे... धर्म काम के भी निमित्त।।

मानादि निमित्त क्रोधादि करे... लोभादि से करे मान रे।
विकार के लिए विकार करके... सोचे मैं किया मेरा धर्म रे।।

इसी से भिन्न जो आत्म साधक... सोचता करता काम है/(रे)।
उसे तो निरा गंवार माने... स्वयं को माने महान् है/(रे)।।

मद्यपायी यथा सोचता करता... मोही उसी से अधिक है/(रे)।
मोह मद के नशा के कारण... न जाने सत्य-असत्य है/(रे)।।

धर्म करे या कर्म करे सब... होता अधर्म मय रे।
पाषाण से जो कुछ बने है... होता पाषाणमय रे।।

मोह राग-द्वेष रहित होकर... जो कुछ करता काम रे।
वह सब कुछ धर्म होता है... स्वर्ण अलंकार यथा स्वर्ण रे।।

आगम अनुभव व्यवहार से... 'कनकनन्दी' जो कुछ पाया रे।
स्व-पर हित हेतु सञ्चय किया... मधुप सञ्चय करे यथा मधु रे।।

परिशिष्ट

आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के शिष्य डॉ. कच्छारा द्वारा अमेरिका के यूनिवर्सिटी में ऑनलाइन पाठ्यक्रम का शुभारम्भ दि. 19.3.12

परम पूज्य गुरुदेव,

नमोऽस्तु!

''फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी'' अमेरिका में ''जैनीज्म इन मॉडर्न वर्ल्ड'' विषय पर एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इस पाठ्यक्रम में ''जैनीज्म और साइंस'' एक विषय है। इस विषय के अध्यापन हेतु मैंने लेक्चर तैयार किये हैं। ये लेक्चर तथा इसकी पाठ्य-सामग्री C.D (सी.डी.) पर दी गई है। इसे कम्प्युटर पर देखा जा सकता है।

यह सी.डी. अमेरिका में विश्वविद्यालय को भेज दी गयी है। इसकी कॉपी सभी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को दी जायेगी।

संघस्थ सभी मुनिवृन्द को नमोऽस्तु!

माताजी को वन्दना!

आपका शिष्य

डॉ. नारायणलाल कच्छारा

उपरोक्त अन्तर्राष्ट्रीय उपलब्धियों की श्रृंखला में मध्य भारत के महानगर नागरपुर (महा.) में डॉ. अजय कुमार जैन की सत्प्रेरणा से मध्य नागपुर के श्री पार्श्वनाथ दि. जैन खण्डेलवाल ट्रस्ट जूनी शुक्रवारी के स्वाध्याय-भवन में समाज के ज्येष्ठ-श्रेष्ठ-ज्ञान-विज्ञान प्रेमियों की उपस्थिति में समारोहपूर्वक आचार्य कनकनन्दी जी साहित्य कक्ष की स्थापना की गई। इसके आगे नागपुर के सम्पूर्ण मन्दिरों शिक्षा-संस्थानों से लेकर सम्पूर्ण महाराष्ट्र में आचार्य श्री

के साहित्य कक्ष की स्थापना को लेकर प.पू. मुनिवर स्वात्मनन्दीजी गुरुदेव व डॉ. अजय कुमार आदि लोग प्रयासरत-उत्साहित हैं। विशेषतः गुरुदेव कनकनन्दी जी के नागपुर के भक्त-शिष्यों द्वारा इस कार्य के प्रति रुचि देखी जा रही हैं। दि. 20.3.2012 को नागपुर से भूगर्भ वैज्ञानिक डॉ. एन.के. जैन चौधरी व मनोवैज्ञानिक डॉ.विद्युत्प्रभा जी ने राजस्थान के लघु ग्राम ओगणा में पधारकर पञ्च दिवसीय वार्ता-चर्चा कार्यशाला के माध्यम से भूगर्भ, रसायन, गणित, मनोविज्ञान, संगीत आदि विषयों पर गुरुदेव श्री संघ से समाधान प्राप्त किया एवं नागपुर में शोध-कल्याणकारी बनाने का संकल्प दर्शाया। गुरुदेव कनकनन्दी जी के ज्ञान-आध्यात्म अनुभव से प्रभावित होकर डॉ. विद्युत्प्रभा जी ने कहा- गुरुदेव आपका व्यक्तित्व-कृतित्व-रहस्य विद्या आदि अत्यन्त विलक्षण हैं, जो कि आज के इस युग में अति दुर्लभ है। संघस्थ साधुओं, विद्या निकेतन के विद्यार्थियों को डॉ. एन.के.जैन ने अपनी गणित पद्धति से परिचित कराया। महाराष्ट्र के पुणे नगर से आर्यिका द्वय 1. सुनीतिमती 2. सुविधेयमती माताजी का आगमन आचार्य श्री संघ में हुआ। ग्रामवासी श्रावकों ने आगन्तुक अतिथियों की सेवा-व्यवस्था की जो सराहनीय रही।

शुभकामनाओं सह- मुनि सुविज्ञसागर,
संघस्थ आ.कनकनन्दी जी, ग्राम ओगणा (राज.)

मेवाड के झालावाड अञ्चल में अनूठा श्रुत पञ्चमी पर्व महोत्सव सम्पन्न

प्रस्तुति- मुनि सुविज्ञसागर

आगम साहित्य पर्व श्रुत पञ्चमी के अवसर पर मेवाड़ अञ्चल के लघुग्राम खाखड़ में ज्ञान-विज्ञान-संस्कृति-साहित्य-परिचर्चा आदि के माध्यम से अनूठा

आयोजन प.पू. स्वाध्याय तपस्वी, ग्रामोन्नायक सन्त श्रेष्ठ वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी ऋषिवर ससंघ सानिध्य में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया, जिसमें ग्रामीण अञ्चलों सहित देश-विदेश से पधारे भक्त वैज्ञानिक, प्रोफेसर, ज्योतिषी जैसे महानुभावों ने भाग लेकर माँ जिनवाणी का सन्मान किया। इस पावन आवसर पर धर्म दर्शन सेवा संस्थान के सदस्य त्रय डॉ. कच्छारा, डॉ. पारसमलजी अग्रवाल, छोटूलाल जी चित्तौड़ा व महाराष्ट्र से पधारे डॉ. अजय जैन, ज्योतिषी सम्भव कुमार जी ने गुरुदेव से मार्गदर्शन व ज्ञान लाभ प्राप्त किया। गुरुदेव रचित 4 पुस्तकें व केलेण्डर का विमोचन किया गया। सभी आगन्तुक विद्वज्जनों ने अपने-अपने विचार रखे।

इस अवसर पर पधारे संस्थान के तीनों सदस्यों से गुरुदेव ने एक बड़ा सामयिक प्रश्न किया कि आज पाश्चात्य लोग जो कि भौतिकवादी होते हुए भी आध्यात्मिक होते जा रहे हैं लेकिन इसके विपरीत भारतीय लोग जो कि मूलतः आध्यात्मिक संस्कृति के होते हुए भी भौतिकवाद के पीछे पगले हो रहे हैं; आप इसका क्या कारण मानते हैं? तब अमेरिका से पधारे भौतिशास्त्री डॉ. पारसमल जी अग्रवाल ने कहा- हे! गुरुदेव हमारे भारत में आज साधु सन्त ही धन-क्षेत्र-ट्रस्ट आदि के अधिष्ठाता होते जा रहे हैं, जिससे समाज-राष्ट्र में विकृतियाँ आती जा रही है। इस सन्दर्भ में रत्नकरण्ड श्रावकाचार में वर्णित साधु के स्वरूप **ज्ञान-ध्यान तपोरक्त** का उदाहरण देते हुए कहा कि यह स्वरूप आपमें अर्थात् आ.कनकनन्दी जी गुरुदेव पर पूर्णतः फिट बैठता है क्योंकि आप यश ख्याति प्रसिद्धि धन-क्षेत्र-ट्रस्ट आदि से निर्लिप्त रहते हुए ग्राम-जंगलों में रहते हुए अपनी साधना कर जिन धर्म-दर्शन-विज्ञान के माध्यम से स्व-पर-विश्वकल्याण करने वाले निराले सन्त हैं। आप निरन्तर ज्ञान-ध्यान-तप करने

वाले निस्पृही सन्त श्रेष्ठ है, यह इस राष्ट्र-विश्व के लिए गौरव व निराशा में आशा का सञ्चार करने वाला आदर्श है।

इस अवसर पर विजयनगर से पधारे श्रेष्ठी जनों को आगामी चातुर्मास के लिए मंगल प्रवेश की घोषणा की गई। स्थानीय लोगों ने आगन्तुक अतिथियों के लिए अच्छी व्यवस्था की।

शुभकामनाओं सह-
मुनि सुविज्ञसागर,
संघस्थ आ.श्री कनकनन्दी जी

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामना

आचार्य कनकनन्दी

मुझे आत्मिक आनन्द अनुभव हो रहा है कि ज्ञानप्रेमी नरेन्द्र कुमार जैन (अमेरिका) के प्रबल पुरुषार्थ से तथा प्रो. प्रभात कुमार जैन के सहयोग से विश्व के आश्चर्य रूप श्री भूवलय ग्रन्थ का शोधपूर्ण स्वरूप प्रकाशन हो रहा है। यह ग्रन्थ केवल दि.जैन, श्वे.जैन तथा भारत के लिए ही उपयोगी एवं गौरवपूर्ण नहीं है अपितु अखिल विश्व मानव के लिए भी है।

यह ग्रन्थ 8/9वीं शताब्दी में महाप्राज्ञ आचार्य श्री कुमुदेन्दु द्वारा विरचित है। आचार्य श्री ने यह विशाल ग्रन्थ ताल पत्र में स्व-शिष्यों के द्वारा लिपिबद्ध कराया। यह ग्रन्थ पूर्णतः कन्नड़ अंक में ही विभिन्न पद्धति में (चक्र-नक्शा, चित्र) लिपिबद्ध किया है। 0 (शून्य) को 1 से लेकर 9 तक में तैयार किया और 1 से लेकर 64 अंक में विविध चक्र में गून्थित/चित्रित किया है। इन चक्रों को अलग-अलग पद्धति से पढ़ने से अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग ग्रन्थों के विषय निकलते हैं।

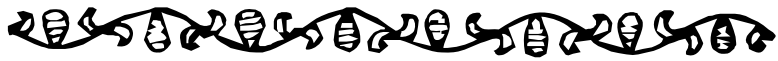

इस चमत्कार पूर्ण ग्रन्थ में जैनधर्म के अनेक ग्रन्थ, वैदिक धर्म के अनेक ग्रन्थ, आयुर्वेद आदि का वर्णन है। पुष्प आयुर्वेद, स्वर्ण निर्माण की विधि आदि का भी वर्णन है। यह ग्रन्थ कन्नड लिपि के अंक 1 से लेकर 64 तक में दुरूह रूप में लिखा होने के कारण तथा गुरु परम्परा से इस पद्धति से पढ़ने-पढ़ाने, समझने-समझाने वाले कोई नहीं होने से ऐसा महान् ग्रन्थ का प्रचार-प्रसार-ज्ञान-कम है। इसे दूर करने के लिए महान् शुभ प्रयास ज्ञान जिज्ञासु नरेन्द्र कुमार जैन ने किया है। एतदर्थ वे आशीर्वाद एवं साधुवाद के योग्य है।

ऐसा ही उनके शुभभाव एवं ज्ञानदान से मेरे अनेक वैज्ञानिक शोधपूर्ण जैनधर्म के ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं एवं सतत प्रगतिशील है। ऐसा ही उनके शुभभाव एवं अर्थ सहयोग से मेरे द्धारा लिखित प्रायः 210 ग्रन्थों के सेट भारत के प्रायः 14 प्रदेशों के लगभग 150-160 जैन मन्दिर, ग्रन्थालयों में ''आचार्य कनकनन्दी साहित्य कक्ष'' रूप में स्थापित हो गये हैं और हो रहे हैं। ऐसा ही भारत के 57 विश्वविद्यालयों में शोधकार्य हेतु ''आचार्य कनकनन्दी साहित्य कक्ष'' की स्थापना होकर जैन-जैनेतर शोधार्थी द्धारा शोधकार्य हो रहा है।

उपरोक्त महान् कार्यों के माध्यम से स्व-पर-विश्व कल्याण के कार्य करने वालों, लाभान्वित होने वालों को मेरा मंगलमय शुभाशीर्वाद! अखिल विश्व सत्यं शिवं सुन्दरम् बनें ऐसी शुभ महती भावना के साथ-

स्व-पर-विश्व कल्याणेच्छुक

आचार्य कनकनन्दी

झाड़ोल (फ.), उदयपुर (राज.) दि= 11.5.2012

पुण्य-स्मरण

सरस्वती की प्रतिरूप थी गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमती माताजी

आचार्य कनकनन्दी

स्व.ग.आ. सुपार्श्वमती माताजी के गौरवमय पुण्य-स्मरण लिखने के अवसर पर सर्वप्रथम मैं उनके कृतित्व के बारे में कुछ प्रकाश डाल रहा हूँ। प्रायः 26-27 वर्ष पहले मैं जब हमारे विशाल संघ (35-40 साधु-साध्वी) ग.आ.कुन्थुसागरजी के मूलसंघ को उपाध्याय अवस्था में राजवार्तिक (पं. मक्खनलाल जी की हिन्दी टीका सहित) पढ़ा रहा था उस समय हमारे संघ में इसकी 1-2 प्रतियाँ थी। संघ के स्वाध्याय के लिए इसकी अधिक प्रतियों की आवश्यकता थी। कुछ महीनों के बाद हमें आ.सुपार्श्वमती माताजी द्वारा अनुदित राजवार्तिक 1 भाग की अनेक प्रतियाँ उपलब्ध हुई जिससे मैं पूरे संघ को पढ़ाया और माताजी की ज्ञान गरिमा से अभिभूत हुआ। ब्र.डॉ. प्रमिला भी हमारे संघ में आती रहती थी। ब्र. प्रमिला के द्धारा माताजी ने राजवार्तिक भाग 2 के लिए मुझसे अभिमत मांगा। मैंने अभिमत लिखकर भेजा और उसका प्रकाशन राजवार्तिक भाग-2 में हुआ है। उसमें भी मैंने माताजी को जीवन्त सरस्वती की प्रतिरूप लिखा था। राजवार्तिक भाग-2 प्रकाशन के बाद उसकी अनेक प्रतियाँ माताजी ने हमारे पास भेजा। ऐसा ही माताजी स्व-अनुदित अनेक ग्रन्थ भेजती रहती थी। माताजी द्धारा अनुदित (1) राजवार्तिक भाग 1,2 (2) आचारसार (3) अष्ट पाहुड़ (4) सागार धर्मामृत आदि ग्रन्थों को स्व-संघ और पर संघ को पढ़ाते समय मैं माताजी की प्रज्ञा से प्रभावित/अभिभूत रहा हूँ और अभी भी।

ब्रह्मचारिणियों की दीक्षा के पहले भी माताजी ने अनेक बार उन्हें मेरे पास आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए एवं लिखित आशीर्वाद प्राप्ति के लिए भेजा था। अभी वे ब्रह्मचारिणियाँ आर्यिका रूप में स्व-पर-विश्व कल्याण में साधनारत है।

ऐसी परम विदुषी का पुण्य-स्मरण उनके व्यक्तित्व-कृतित्व से शिक्षा ग्रहण करके ही यथार्थ रूप से कर सकते हैं।

मेरी मंगल शुभ भावना है कि माताजी स्वर्ग से च्युत होकर मानव जन्म पाकर रत्नत्रय की साधना के बल पर केवलज्ञान को प्राप्त कर दिव्यध्वनि के माध्यम से विश्व को दिव्य उपदेश देकर मोक्ष प्राप्त करे। ऐसी ही उपलब्धि हम सबकी हो ऐसी उदात्त पावन भावना के साथ-

आचार्य कनकनन्दी

झाड़ोल (फ.) राज., दि= 28.4.2012

आचार्य कनकनन्दी के शिष्य प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ को डी.लिट्. (दर्शन) की उपाधि

जोधपुर, 7 अप्रेल 2012, प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान को ट्रिनिटी वर्ल्ड विश्वविद्यालय (यु.के.) द्वारा उनके शोध कार्य पर डी.लिट्. (दर्शन) की उपाधि प्रदान की गई। प्रो. तातेड़ करीब 50 राजकीय जनता की सेवा कर रहे हैं। आपको कई संस्थाओं एवं जन प्रतिनिधियों द्वारा भारत सरकार को ''**पदम श्री एवार्ड**'' एवं राज्य सभा सदस्यता दिए जाने हेतु अनुशंषा की गई है। आपके द्वारा रचित कई शोध ग्रन्थ अनेक विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जा रहे हैं। आपके निर्देशन में कई विद्यार्थी पी.एच.डी. पूर्ण कर चुके हैं व कई कर रहे हैं। आप अनेक राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के अधिकृत शोध निर्देशक, सलाहकार एवं संरक्षक प्रोफेसर हैं। आप अधीक्षण अभियंता, पी.एच.ई.डी., राजस्थान सरकार पद से सेवानिवृत हैं।

''वैश्विक उपलब्धि की बहार''

यू.एस.ए. में जिनमन्दिर निर्माणकार्य प्रारम्भ... साहित्य कक्ष स्थापना... वेबसाइट पर साहित्य उपलब्ध... एवं... विश्व के आश्चर्यकारी ग्रंथ सिरि भूवलय का प्रकाशन प्रारम्भ...।

प.पू. वैश्विक भविष्यद्दृष्टा अभिप्रेरक आचार्यश्री कनकनन्दी जी यतिवर की व्यापक भावनाओं के अनुरूप अब तक की ज्ञान-विज्ञान-साहित्य की राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय उपलब्धियों में गद्य-पद्यात्मक 212 ग्रन्थों के सृजन होकर 57 भारतीय विश्वविद्यालयों से लेकर अन्य राष्ट्रों के विश्वविद्यालयों में साहित्य कक्ष की स्थापना से लेकर विश्वधर्म-संसद में गुरुदेव के शिष्यों द्वारा विशेष शोधपरक ज्ञान की प्रभावना के साथ यू.एस.ए. (अमेरिका) गुरुदेव के धर्म-दर्शन-विज्ञान-आध्यात्म साहित्य शोध का महान् केन्द्र बनता जा रहा है।

इतना ही नहीं, इस वैश्विक प्रभावना में तब और भी चार चाँद लगने जा रहे हैं जब दि. 30.5.2012 को सायंकाल प्रायः 6.30 बजे यू.एस.ए. से पूज्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के अनन्य भक्त श्रेष्ठी श्री नरेन्द्र कुमार जी का फोन आया। जिसमें उन्होंने गुरुदेव को कुछ महान् उपलब्धि होने के शुभ उत्साहवर्धक समाचार सुनाये। नरेन्द्र जी ने सर्वप्रथम कहा- हे गुरुवर! आपके आशीर्वाद व मार्गदर्शन से अमेरिका में जैन मन्दिर का निर्माण कार्य शुरु हो चुका है। इसके अन्तर्गत गुरुदेव के साहित्य कक्ष की स्थापना का सन्देश सुनाया। तत्पश्चात् आचार्य श्री के साहित्य को वेबसाइट पर उपलब्ध कराने तथा विश्व की महान् धरोहर स्वरूप आचार्य कुमुदेन्दु सूरीवर के ग्रन्थ सिरि भूवलय के शोधपूर्ण लेखन के अनन्तर प्रकाशन की पूर्णता का शुभ समाचार सुनाया। आचार्यश्री ने उपरोक्त सभी कार्य-उपलब्धियों की भूरि-भूरि प्रशंसा व अनुमोदना कर आशीर्वाद प्रदान

किया। संघस्थ साधुओं ने भी प्रसन्नता व अनुमोदना भाव प्रगट किया। वैसे तो गुरुदेव ने संघस्थ साधुओं को कुछ दिन पूर्व ही महान् शुभकार्य सम्पादन होने का पूर्वाभास अपने अंग स्फुरण, शकुन व स्वप्न के माध्यम से दे दिया था जो कि आज साकार होकर विशिष्ट उपलब्धि लेकर आया। आचार्य भगवन्त अपनी प्रखर आध्यात्मिक प्रज्ञा व सतत ज्ञान-ध्यान-तपोरक्त वाली भूमिका से विश्वकल्याण व शान्ति समन्वय करते हुये युग को अपना व्यापक मार्गदर्शन-अभिप्रेरणा व पथ-प्रदर्शन करते रहें- ऐसी मंगलमय सद्भावनाओं के साथ-

गुरु पथ अनुगामी : मुनि सुविज्ञसागर,
संघस्थ :- आ.श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव
ग्राम खाखड़ प्रवास से...

भारत के शिक्षित युवा की दिशा-दशा

निराशाजनक -मोहित चन्द्रा

(हमारे युवा क्या आज की वैश्विक कार्य संस्कृति में मिसफिट है?)

इन्टरनेट पर इन दिनों तीखी बहस छेड़ दी है। इसकी शुरुआत हुई पिछले पखवाड़े एक 'ओपन लेटर' से। यह खुली चिट्ठी लिखी है मोहित चन्द्रा ने जो मल्टीनेशनल कंसलटेंसी कम्पनी के पी एम जी के एक भारतीय पार्टनर हैं। यह प्रकाशित हुई है द न्यूयार्क टाइम्स वेब पोर्टल के ब्लॉग 'इण्डिया इंक' पर। 'डीयर ग्रेजुएट्स एण्ड पोस्ट ग्रेजुएट्स' को सम्बोधित इस चिट्ठी को सन्देश भी कहा जा सकता है, सलाह भी, गाइड भी और एक किस्म का आरोप पत्र भी। यह चिट्ठी भारतीय कंपनियों की तरफ से लिखी गई है। वह कोई बैंक हो सकता है या एक कंसल्टिंग फर्म, मल्टीनेशनल कारपोरेशन या पब्लिक सेक्टर

कम्पनी। ऐसी ही कोई भी कम्पनी जिसमें हमारे कॉलेजों से पढ़ाई पूरी करके निकले नौजवान अपने सपनों को साकार करेंगे। नए स्नातकों से चन्द्रा कहते हैं कि आप खुश होंगे और शायद खुद पर काफी गर्व महसूस कर रहे होंगे कि आपकी पढ़ाई पूरी हो चुकी है, पहली नौकरी आपको मिल चुकी है, पद और तनख्वाह के बारे में बातचीत हो चुकी है, आप अपना योगदान देने के लिए तैयार हैं और जिन्दगी बहुत अच्छी है।

वह आगे कहते हैं कि आपके लिए जिन्दगी कितनी भी अच्छी क्यों न हो, कम से कम हम यानी आपको नौकरी देने वालों के लिए नहीं है। क्योंकि आप जो भी योगदान देंगे उसमें से ज्यादातर 'दोयम दर्जे' का होगा, उसमें 'महत्वाकांक्षा की कमी' होगी, वह निराश करने वाला होगा और उसकी 'सीमित उपयोगिता' होगी। आप न वायदे पूरे कर पायेंगे और न अपेक्षाओं पर खरे उतर पायेंगे।

'बुरी खबर' देने के लिए खेद व्यक्त करते हुए चन्द्रा शिक्षित नौजवानों से कहते हैं कि आप बिगड़ चुके हैं। आपको बिगाड़ा है– ''भारत की ग्रोथ स्टोरी'' ने। आपको बिगाड़ा है इस गलतफहमी ने कि भारतीय शिक्षा प्रणाली कंपनियों में कामकाज के लिए जरूरी प्रतिभाएँ तैयार कर सकती है। आप बिगड़े हैं क्योंकि आज जितनी जरूरत है उतनी बड़ी संख्या में होनहार युवा उपलब्ध नहीं है। आप बिगड़े हैं पश्चिम में आर्थिक तरक्की की रफ्तार धीमी पड़ने से। वे कहते हैं कि भारत में नौजवानों की इतनी बड़ी तादाद में से केवल 10 फीसदी ही असलियत में हुनरमंद हैं।

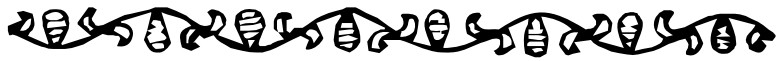

न्यूयॉर्क से नई दिल्ली तक-

मोहित चन्द्रा के इस ओपन लेटर के सामने आते ही खासकर नेट की दुनियाँ में हंगामा मच गया। प्रतिक्रियाओं की बाढ़-सी आ गई। प्रतिक्रियाएँ मिली-जुली थीं। न्यूयॉर्क से दिल्ली तक कई लोगों ने लिखा कि उनका भी यही अनुभव है और भारत के युवाओं में न हुनर है, न महत्वाकांक्षा। नई दिल्ली से श्रुति ने लिखा कि ''मैं भारत में पली-बढ़ी हूँ और अगली पीढ़ी बेहद निराशाजनक है।'' मिडिल क्लास वर्क फोर्स को ज्यादा से ज्यादा मीडियाकर कहा जा सकता है।

अंग्रेजी भाषा या अभिव्यक्ति कौशल -

पहला मुद्दा जो मोहित चन्द्रा ने उठाया है वह अंग्रेजी भाषा का है। उनका कहना है कि अधिकांश भारतीय युवा साफ और सरल तरीके से अपनी बात को अंग्रेजी में व्यक्त नहीं कर पाते। यहाँ तक कि बेहतर संस्थानों से पढ़कर निकले युवाओं को भी समझ पाना कठिन है। वह हर रोज उन्हें मिलने वाले दर्जनों रिज्यूमे में से एक का उदाहरण देते हैं जिसमें अत्यन्त जटिल वाक्य और भारी-भरकम शब्दों में किसी उम्मीदवार ने अपना ऑब्जेक्टिव (उद्देश्य) बताया है। वह कहते हैं करीब आधे रिज्यूमे ऐसे होते हैं जिनमें प्रभावशाली तरीके से अपने व्यक्त कर पाने लायक अंग्रेजी की योग्यता का अभाव होता है।

इस पर उन लोगों को जरूर ताज्जुब होगा जो देश की अब तक की वैश्विक सफलता में हमारे युवाओं के अंग्रेजी ज्ञान की भूमिका देखते आ रहे हैं। जब इंफोरमेशन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में हमारी कम्पनियों ने चीन को पीछे छोड़ दिया, तब कहा ही गया था कि भारतीय आई टी प्रोफेशनलों के बेहतर

अंग्रेजी ज्ञान का इसमें खासा योगदान है। चीन में अंग्रेजी का कौशल हमारी तुलना में कम है। इसीलिए वहाँ अंग्रेजी सिखाने का राष्ट्रीय अभियान चलाया गया है। अगर चीन अंग्रेजी ज्ञान के बावजूद तेज रफ्तार से तरक्की कर सकता है तो हम क्यों नहीं?

चन्द्रा जो बात कह रहे हैं वह सम्भवतः भाषा के बारे में उतनी नहीं, जितनी अभिव्यक्ति के बारे में है। हम अपने आसपास ऐसे लोगों को पाते हैं जो मातृभाषा में भी सहज, स्पष्ट, सटीक और प्रभावी ढंग से खुद को व्यक्त नहीं कर पाते। फिर दूसरी भाषा में तो यह और भी आसान नहीं। भाषा सीखना और अभिव्यक्ति कौशल को बेहतर बनाना दो अलग-अलग बातें हैं। हालांकि दोनों एक दूसरे से जुड़ी हैं। अभिव्यक्ति कौशल को सुधारना एक अन्तहीन प्रक्रिया है जो जीवन में हमेशा चलती रहनी चाहिए। अभिव्यक्ति कौशल का सम्बन्ध जितना भाषा ज्ञान से है उससे ज्यादा सोचने की शक्ति से है। अगर हम सरल, स्पष्ट और सहज ढंग से सोचने का अभ्यास करें तो उसके अनुरूप शब्द हमारा मस्तिष्क खोज लेगा।

अलबत्ता जो युवा भारी-भरकम शब्दों से अपने बायोडाटा या रिज्यूमे को प्रभावी बनाने में विश्वास करते हैं, उनके लिए चन्द्रा की बात आँख खोल देने वाली होनी चाहिए। अंग्रेजी के कठिन और भारी शब्दों का प्रयोग रिज्यूमे को प्रभावशाली नहीं, बल्कि अक्सर बनावटी और कई बार अर्थहीन बना देता है।

कल्पनाशीलता की कमी-

दूसरी बात चन्द्रा यह कहते हैं कि भारतीय शिक्षित युवा समस्याओं को हल करने के मामले में अच्छे नहीं है। उनमें बंधे-बंधाए ढाँचे से बाहर निकलकर सोचने का अभ्यास नहीं है और न ही वे चीजों को नए तरीके से करने के बारे

में सोचते हैं। इसकी वजह वह हमारी शिक्षा-प्रणाली में देखते हैं जिसमें रटकर चीजों को याद कर लेने पर जोर दिया जाता है। समस्याओं को हल करने और व्यावहारिक उपाय खोजने पर हमारी शिक्षा प्रणाली पर ज्यादा जोर नहीं दिया जाता।

चन्द्रा की इस बात से असहमत हो पाना कठिन है। हमारी शिक्षा प्रणाली के बेहद किताबी होने की शिकायत अक्सर की जाती रही है। खुद शिक्षा विशेषज्ञ ही इसकी शिकायत करते रहे है। फिर भी हमारी दूसरी अनेक कमियों की तरह इसे बदलने की कोशिशें ज्यादा नहीं हुई और जो हुई वे कामयाब नहीं हुई। पिछले कुछ वर्षों में स्थितियाँ बदली हैं। कई नए प्रोफेशनल संस्थान पढ़ाई के ऐसे तौर-तरीके अपनाने पर जोर दे रहे हैं जिनसे छात्रों में व्यावहारिक बुद्धिमत्ता का विकास हो सके।

सबसे बड़ी बात यह कि इस जानकारी के साथ हमारे युवा खुद अपने को बदल सकते हैं। वह भी दो तरह से। एक तो वे सारी तोता रटन्त पढ़ाई के बावजूद खुद को इस बात के लिए तैयार कर सकते हैं कि समस्याओं को हल करने के नए तरीके किस तरह ईजाद किये जाएँ। दूसरे वे शिक्षा प्रणाली के भीतर इस बात के लिए दबाव पैदा कर सकते हैं कि उन्हें पाठ रटाए न जाएँ बल्कि उनके व्यावहारिक प्रयोग की शिक्षा दी जाए।

चन्द्रा की यह बात उनके लिए प्रेरक हो सकती है कि 'जुगाड़' की विलक्षण प्रतिभा के लिए मशहूर देश में युवाओं के लिए समस्याओं के समाधान के अभिनव तरीके खोजना मुश्किल नहीं होना चाहिए।

केवल हुक्म बजाना जानते हैं -

तीसरी बात चन्द्रा कहते हैं कि युवा केवल हुक्म बजाना जानते हैं। वे सवाल नहीं पूछते और ऊँचे पदों से जल्दी ही प्रभावित हो जाते हैं, जिसकी

कोई जरूरत नहीं है। चन्द्रा इसकी वजह हमारी संस्कृति में खोजते हैं। वह कहते हैं, 'भारत में बड़े पदों के प्रति श्रद्धा और दासता का जबरदस्त पूर्वाग्रह कायम है लेकिन इसे चुनौती देना और तोड़ना जितनी हमारी जिम्मेदारी है उतनी ही आपकी भी है।'

नया सीखने से कतराना-

चन्द्रा की चौथी शिकायत यह है कि हमारे युवा नया सीखने से कतराते है। वह बताते हैं कि हाल ही में उन्होंने जिन नए लोगों की भर्तियाँ की थीं वे ट्रेनिंग के लिए उत्सुक थे। उनके लिए टीमें बनाई गईं। हर टीम के लिए खास तौर पर ऑनलाइन प्रशिक्षण और सेल्फ-स्टडी के कोर्स बनाए गए। धूमधाम के साथ सबको ई-मेल से जानकारी दी गई। लेकिन उनमें से 80 फीसदी से ज्यादा ने ई-मेल पढ़े ही नहीं? कितनों ने ट्रेनिंग ली? 15 फीसदी से भी कम ने।

चन्द्रा कहते हैं, 'अगर आप एक ही रास्ते पर आँख मूंदकर चलते रहेंगे तो जल्दी ही लुप्त होने की तरफ पहुँच जायेंगे। डायनासोर की तरह। कंपनियाँ तो आपको सिर्फ औजार, संसाधन और अवसर मुहैया कर सकती है। सफलता तो आपको ही हासिल करनी है।'

यह भी पुरानी सरकारी किस्म की कार्य संस्कृति का प्रभाव है जो कायम है। इस संस्कृति में एक बार नौकरी मिलने को अन्तिम सच मान लिया जाता है। इसी कार्य संस्कृति के कारण हमारी ज्यादातर समस्याएँ आजादी के छह दशकों बाद भी जहाँ की तहाँ हैं। इस तंत्र में लोग पदोन्नत होते जाते हैं लेकिन उनका कौशल व कार्यशैली वही रहती है। इस कार्य संस्कृति के कारण विशाल साम्यवादी व्यवस्थायें नष्ट हो गईं।

न प्रोफेशनल न ईमानदार –

अन्तिम बात चन्द्रा यह कहते हैं कि भारतीय युवा न तो प्रोफेशनल है, और न ही नैतिक हैं। वे अधिक तनख्वाह के लालच में कम्पनियाँ बदलते रहते हैं। जरूरत पड़ने पर ज्यादा देर तक काम करने से कतराते हैं। छुट्टियों और खर्चों का दावा करते वक्त सच्चाई नहीं बरतते। इसका जवाब ग्रेटबॉन्ग कम्पनियों को नैतिक कठघरे में खड़ा करके देते हैं। वे लिखते हैं 'कर्मचारियों से ईमानदार और प्रोफेशनल होने की उम्मीद करने से पहले खुद कम्पनियों को मानदण्ड कायम करने होंगे। इसका मतलब है सत्यम् शिवम् सुन्दरम् नहीं, आव्रजन? वीजा हेराफेरी नहीं, लेखा-बही में गड़बड़ी नहीं, न्यू जर्सी में एक कमरे में पाँच लोगों को बैठाकर काम करवाना नहीं।'

दैनिक भास्कर, रसरंग
3 जून 2012, रविवार

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ

विश्वहितकारी वैज्ञानिक-आध्यात्मिक जैनधर्म के अनुयायी-प्रचार-प्रसारक प्रो. डॉ. सोहनराज तातेड़ के व्यक्तित्व-कृतित्व का ससम्मान सदुपयोग करे भारत सरकार

-आचार्य कनकनन्दी

वर्तमान के भौतिकवादी वैज्ञानिक वैश्वीकरण युग की आवश्यकता तथा समस्याओं के समाधान के समस्त उपाय जैनधर्म में निहित है उन उपायों को आधुनिक दृष्टि से शोध-बोध-प्रस्तुति करण के माध्यम से विश्व में प्रचार-

प्रसार करने की केवल आवश्यकता ही नहीं अनिवार्यता भी है। इस महानतम-उदार-उदात्त कार्य को हमारे देश-विदेशों के दिगम्बर-श्वेताम्बर जैन तथा जैनेतर भक्त-शिष्य स्वेच्छा से तन-मन-धन-समय -श्रम के विनियोग से कर रहे हैं; उनमें से डॉ. तातेड़जी भी अन्यतम है/उल्लेखनीय है। आप स्व-प्रेरणा, उत्साह, तत्परता, निस्वार्थपरता, लगनशीलता, उदारता, स्व-पर-विश्वकल्याण की भावना, सहज-सरलता-पवित्रता से ओत-प्रोत होकर उपरोक्त कार्य को भारत के विश्वविद्यालयों से लेकर विदेशों के विश्वविद्यालयों तक में ''**आचार्य कनकनन्दी साहित्य कक्ष की स्थापना**'' तथा उन साहित्यों के ऊपर देश-विदेश के विद्यार्थियों से लेकर प्रोफेसर्स द्वारा शोधकार्य (Ph.d.) का निर्देशन कर रहे हैं।

ऐसा ही आप करीब 50 राजकीय एवं गैर राजकीय संस्थाओं के माध्यम से लम्बे अर्से से राष्ट्रीयजनता की सेवा कर रहे हैं। आपको कई संस्थाओं एवं जन प्रतिनिधियों द्वारा भारत सरकार को ''**पद्म श्री अवार्ड**'' एवं राज्य सभा सदस्यता दिये जाने हेतु अनुशंसा की गई है। आपके द्वारा रचित कई शोध ग्रन्थ विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जा रहे हैं। आपके निर्देशन में कई विद्यार्थी पी.एच.डी. पूर्ण कर चुके हैं व कई कर रहे हैं। आप अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के अधिकृत शोध निर्देशक, सलाहकार एवं संरक्षक प्रोफेसर हैं। आप अधीक्षण अभियन्ता, पी.एच.ई.डी. राजस्थान सरकार पद से सेवानिवृत्त हैं।

इन सब महती सेवाओं के कारण हमने (आचार्य कनकनन्दी ससंघ) तथा हमारे द्वारा आशीर्वाद प्राप्त (1) धर्म-दर्शन-विज्ञान शोध संस्थान (2) धर्म-दर्शन सेवा संस्थान (पंजीकृत) द्वारा उन्हें (1) '<u>जैन ज्ञान-विज्ञान मनीषी</u>'

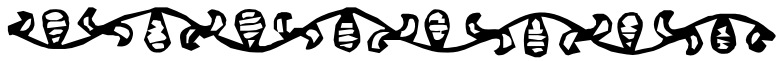

(2) '<u>समाज भूषण</u>' पदवी से अलंकृत किया। इसके साथ-साथ हमारे द्वारा आशीर्वाद प्राप्त ''धर्म-दर्शन सेवा संस्थान'' के आप ''<u>गुरुभक्त संस्थान संरक्षक</u>'' भी है।

आपकी इन योग्यताओं एवं उपलब्धियों का सदुपयोग भारत के लिए हो एतदर्थ भारत सरकार को उन्हें ''पद्मश्री अवार्ड'' से सम्मानित करके ''राज्यसभा सदस्य'' रूप में स्वीकार करना चाहिए। ऐसी भावना भारत सरकार में जागृत हो एतदर्थ मेरा भारत सरकार को मंगलमय शुभाशीर्वाद है। यह शुभकार्य शीघ्रातिशीघ्र सम्पादन हो ऐसी मेरी शुभकामनाएँ हैं।

प्रो. डॉ. तातेड़ जी जिस विश्वकल्याणकारी, उदारवादी, वैज्ञानिक, आध्यात्ममय जैनधर्म का अनुकरण-प्रचार-प्रसार कर रहे हैं उसका विस्तार से वर्णन मैंने साहित्यों में किया है।

- आचार्य कनकनन्दी